MUSTAFAWI
PUBLISHING

सय्यिदह स़फ़िय्यह

से

आक़ा ﷺ का निकाह़

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी

पब्लिशर्स नोट

यह किताब एक ऐतराज़ के जवाब में लिखी गई है जो पैग़म्बरे इस्लाम के हज़रते स़फ़िय्या से निकाह पर किया जाता है। अ़ल्लामा क़ासिम अल-क़ादिरी अल-अज़्हरी हफ़िज़हुल्लाहु तआ़ला ने मुख़्तलिफ़ क़िस्म के दलाइल को सामने रखकर इस ऐतराज़ का संतोषजनक जवाब दिया है।
इससे पहले भी अल्लामा मौसूफ़ ने अपने रिसालों "क़ुरआन ने औरतों को खेती क्यूँ कहा?" और "क्या क़ुरआन के मुताबिक़ सूरज पानी में डूबता है?" में इसी तरह के ऐतराज़ात की हक़ीक़त को वाज़ेह किया है।
अल्लाह तआला मौसूफ़ को इसी तरह दिफ़ा -ए- इस्लाम में मज़ीद ख़िदमात की तौफ़ीक़ अता फरमाए।

मौसूफ़ ने मज़ीद कुछ इ़ल्मी रिसाले तसनीफ़ फ़रमाए हैं जिनके नाम दर्ज किए जाते हैं:

• **क़ुरआन ने औरतों को खेती क्यूँ कहा?:** ये रिसाला ग़ैर मुस्लिमों की तरफ़ से किए गए एक एतराज़ के जवाब पर है। ये हिन्दी और उर्दू दोनों ज़बानों में शाया हो चुका है।

• **क्या क़ुरआन के मुताबिक़ सूरज पानी में डूबता है?:** ये रिसाला भी ग़ैर मुस्लिमों की तरफ़ से किए गए एक एतराज़ के जवाब पर है। ये हिन्दी और अंग्रेज़ी दो ज़बानों में शाया हो चुका है।

• **ख़ुतबा फतावा रज़विय्यह:** ये रिसाला फतावा रज़विय्यह के ख़ुत्बे की तख़रीज है जो कि अपनी नोइयत के एतबार से बहुत तहक़ीक़ी काम है।

• **Meat consumption and animal sacrifice in Valmiki Ramayana:** ये रिसाला अंग्रेज़ी ज़बान में है और इस में बड़े तहक़ीक़ी अंदाज़ में जानवरों की क़ुर्बानी और उनका गोश्त खाने के हवाले से हिंदू नज़रिये का जायज़ा लिया गया है।

इन के इ़लावा मौसूफ़ के सैकड़ों इ़ल्मी और तह़क़ीक़ी मक़ाला-जात का मजमूआ बनाम **'मक़ालाते अह़सनी'** भी शाया हो चुका है। अल्लाह तआला सब को क़बूल फ़रमाए और मुसन्निफ़ के सदक़े नाशिरीन के लिए ज़रिय -ए- नजात बनाए। आमीन।

मुस़्तफ़वी पब्लिशिंग

फ़ेहरिस्त

मुक़द्दिमह (Prologue) 5

चैप्टर नं. 1 8

चैप्टर नं. 2 9

2.1 'सय्यिदह स़फ़िय्यह से आक़ा (ﷺ) के निकाह़' की पूरी तफ़्स़ील, और पांचों एतराज़ों का आसान और छोटा जवाब: 9

2.2 इल्ज़ामी जवाब 11

2.2.1 सनातनियों की किताबों से कुछ मिसालें: 11

2.2.2 यहूदियों और ईसाईयों की किताबों से कुछ मिसालें: 27

2.2.3 नास्तिकों की दुनिया की सैर: 37

2.3 तह़क़ीक़ी जवाब 39

2.3.1 सीरत और इस्लामी तारीख़ की किताबें इस वाक़िआ के बारे में क्या कहती हैं? 39

2.3.2 ह़दीस की किताबों में इसके मुतअ़ल्लिक़ क्या कहा गया है? 45

2.3.3 ख़ुद सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) ने क्या कहा? 49

2.3.4 ऐसे केस में चार महीने दस दिन वाली इ़द्दत होगी, या सिर्फ़ एक ह़ैज़ के ज़रिए इस्तिबराअ? 53

चैप्टर नं. 3 57

(1) जब आक़ा (ﷺ) और सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) अपने ख़ेमे में थे तो रातभर एक स़ह़ाबी ख़ेमे के बाहर पहरा देते रहे. ऐसा क्यूँ हुआ? 57

(2) किनानह इब्ने रबीअ़ को ख़जाने के चक्कर में टॉर्चर किया गया. ऐसा क्यूँ हुआ? 57

चैप्टर नं. 4 61

ख़ातिमा (epilogue) 63

ह़वाला जात (Bibliography) 68

"مَولَایَ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا،
عَلَى حَبِيبِكَ خَيرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ؛

مُحَمَّدٌ سَيِّدُ الكَوْنَيْنِ وَالثَّقَلَيْنِ،
وَ الفَرِيقَيْنِ مِنْ عُرْبٍ وَمِنْ عَجَمِ".

मुक़द्दिमह (Prologue)

الحمد لله الذي حفظ حبيبه من الظلم و الطغيان،

و الصلاة والسلام على نبينا المعصوم عن الذنب و العصيان،

و على آله وصحبه كارهي الفسوق و الكفران؛

و بعد:

आज के दौर में इस्लाम-दुश्मन त़ाक़तें जब ये समझ गयीं हैं कि हर तरफ़ से इस्लाम को घेर कर भी इसे ख़त्म नहीं किया जा सकता, तो इन्होंने सय्यिदुना मुह़म्मद इब्ने अ़ब्दुल्लाह (ﷺ) की पाक शख़्सिय्यत पर गंदे-गंदे इल्ज़ाम लगाने शुरू कर दिए ताकि कमज़ोर-ईमान, और कम-इ़ल्म मुसलमान को धोखा देकर गुमराह किया जा सके. इस्लाम की सरबुलंदी से दुश्मनों की जलन ने, इन्हें ऐसे जला रखा है कि जिस चीज़ को ये अपने लिए सही समझते हैं उसी चीज़ को हमारे लिए ऐ़ब शुमार करते हैं. इस वक़्त पूरी दुनिया में, फ़ैमिनिस्ट्स और नास्तिकों की 'औरतों के लिए आज़ादी' वाली बांग ने, जिस तरह से रेप, ज़िना, और ख़ानदानों की बर्बादी का सिलसिला आ़म कर दिया है तो इसके ख़िलाफ़ कोई भी नास्तिक या नाम-निहाद 'महिला अधिकार मोर्चा' वाला नहीं बोलेगा, मुँह में दही जम गया हो जैसे. मगर इस्लाम में शराफ़त की चीज़ भी इन्हें ह़रामकारी लगती है. इसीलिए ये इस्लाम के ऊंचे मह़ल के सामने, अपनी टूटी-फूटी घास-फूंस की टटिया लगाकर, छप्पर पर खड़े होकर मह़ल की बुलन्दी का मुक़ाबला करने की नाकाम कोशिशें करते रहते हैं;

जब इनसे कुछ न हो सका, तो इन्होंने सुल्त़ाने आ़लम, मुहम्मद इब्ने अ़ब्दुल्लाह (ﷺ) के मुबारक किरदार पर घिनौने इल्ज़ामात लगाने शुरू कर दिए. ताकि मुसलमान, अपने नबी (ﷺ) के मामले में, इ़श्क़ और जज़्बात की आवाज़ सुनकर, इनकी इस हरकत से, तीनों मह़ाज़ों पर ज़ाहिरी नुक़्सान उठाए:

1. अगर इनके ख़िलाफ़ कुछ बोले, तो झूठी एफ आई आर के सबब जेल में डाला जाए;
2. मैदान में उतरे, तो पुलिस और अक्सरिय्यत की मिलीभगत के सबब शहीद कर दिया जाए;
3. अगर इनसे डिबेट करे, तो इनकी बदज़बानी और हठधर्मी के सबब जीतकर भी हारा माना जाए;

क्यूंकि ये भी जानते हैं कि मुसलमानों के लिए सबसे सीरियस मस्अला, 'नामूसे रिसालत (ﷺ)' का है. जिसमें एक बुज़दिल मुसलमान भी, मैदाने जंग की पहली स़फ़ में खड़े होने के लिए अपना ज़ोर दिखाता

है. मुर्दा जिस्म भी, रूह़ के दाख़िल होने पर इतना त़ाक़तवर नहीं होता, जितना कि इश्क़े मुस़्तफ़ा (ﷺ) की मौजूदगी, मुसलमानों के जिस्म और रूह़ को मज़बूत करती है. इसी अस्ल त़ाक़त को ख़त्म करने के लिए, पूरी ऐंटी इस्लामिक लॉबी अनथक मेहनत करने में लगी हुई है. मगर वो क़ुरआन 21:18 को भूल गए कि:

"بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ"،

"बल्कि हम ह़क़ को बात़िल पर फैंक मारते हैं, तो वो उसका भेजा निकाल देता है. तो जभी वो मिटकर रह जाता है." [कंज़ुल् ईमान]

इनके इन्हीं इल्ज़ामात में से, चंद घिनौने इल्ज़ाम: *'सय्यिदह स़फ़िय्यह से आक़ा (ﷺ) का निकाह़'*, के सिलसिले में भी हैं. जिसपर इस्लाम-दुश्मन त़ाक़तें एक लम्बे टाइम से बहुत शोर मचा रही हैं. **इस किताब को लिखने की यही वजह है कि बहुत से सनातनी, आर्य समाजी और दूसरे लोग, सुल्त़ानुल् अम्बिया मुह़म्मद इब्ने अ़ब्दुल्लाह (ﷺ) पर, इस वाक़िआ़ को लेकर, एक लम्बे समय से सोशल मीडिया पर बहुत गंदी-गंदी टिप्पणियां कर रहे हैं.** जिन्हें देखकर एक मुसलमान की आँखों से, ख़ून के आंसू बहते हैं. बहुत ज़्यादा अ़जीब हाल ये है कि उस वक़्त में मौजूद, कट्टर से कट्टर दुश्मने रसूल ने भी इस निकाह़ पर एतराज़ नहीं किया. मगर आजकल के, ज़िना को सही, और शादियों को ग़लत़ कहने वाले लोग इस मुबारक निकाह़ पर बहुत शराफ़त झाड़ रहे हैं. तो हम इनकी, इन्हीं बेबुनियाद बातों को आड़े हाथों लेंगे, और इस मौज़ूअ़ के इर्दगिर्द मंडराने वाले सारे झूठों का पर्दाफ़ाश करेंगे;

हम अपने ख़ास़ मन्हज के मुत़ाबिक़, इस किताब की तरतीब भी बयान कर देते हैं, ताकि पढ़ने वाले के लिए आसानी हो जाए;

ये किताब चार चैप्टर्स में बांटी गयी है:

चैप्टर नं. 1 में इस निकाह़ पर उठने वाले पांच एतराज़ों को ज़िक्र किया जाएगा;

चैप्टर नं. 2 में पांचों एतराज़ों का जवाब दिया जाएगा. इस चैप्टर को तीन फ़स़्लों (sections) में बांटा जाएगा. पहली फ़स़्ल में इज्माली (briefly) जवाब दिया जाएगा, और बाक़ी दोनों फ़स़्लों में तफ़स़ीली (diffusely) जवाब दिया जाएगा:

2.1 'सय्यिदह स़फ़िय्यह से आक़ा (ﷺ) के निकाह़' की पूरी तफ़स़ील, और पांचों एतराज़ों का आसान और छोटा जवाब

2.2 इल्ज़ामी जवाब (offensive response)

2.3 तह़क़ीक़ी जवाब (defensive response)

फ़स़्ल नं. 2.2 में 'इल्ज़ामी जवाब (offensive response)' को हम कई हिस्सों में पेश करेंगे:

2.2.1 सनातन धर्म की किताबों से कुछ मिसालें;

2.2.2 यहूदियों और ईसाईयों की किताबों से कुछ मिसालें;

2.2.3 नास्तिकों की दुनिया की सैर;

फ़स़्ल नं. 2.3 में 'तह़क़ीक़ी जवाब (defensive response)' को कई त़रीक़े में बयान करेंगे:

2.3.1 सीरत और इस्लामी तारीख़ की किताबें इस वाक़िअ़ा के बारे में क्या कहती हैं?

2.3.2 ह़दीस की किताबों में इसके मुतअ़ल्लिक़ क्या कहा गया है?

2.3.3 ख़ुद सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) ने क्या कहा?

2.3.4 ऐसे केस में चार महीने दस दिन वाली इ़द्दत होगी, या सिर्फ़ एक ह़ैज़ के ज़रिए इस्तिबराअ?

चैप्टर नं. 3 में, मज़ीद दो एतराज़ों के जवाब देंगे.

चैप्टर नं. 4 में, अ़क़्ल की रौशनी में बतायेंगे कि ये निकाह़ उस वक़्त के माहौल और परिस्थिति के हिसाब से बिल्कुल सही था.

आख़िर में एक **'ख़ातिमा (epilogue)'** लिख कर, सारे एतराज़ों का ख़ातिमा करेंगे.

चैप्टर नं. 1

इस निकाह़ पर पांच एतराज़ इस तरह किए जाते हैं कि:

[1] क्या सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) के वालिद और शौहर को क़त्ल करके, उन्हें ज़बर्दस्ती इग़्वा किया गया था!?

[2] क्या पहले शौहर की इ़द्दत गुज़ारे बिना, सय्यिदुना मुह़म्मद इब्ने अ़ब्दुल्लाह (ﷺ) ने उनसे उसी दिन निकाह़ या मुबाशरत (intercourse) कर ली थी!?

[3] क्या सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) की मर्ज़ी के बिना, सय्यिदुना मुह़म्मद इब्ने अ़ब्दुल्लाह (ﷺ) ने उनसे निकाह़ कर लिया था!?

[4] क्या सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) इस निकाह़ से कभी ख़ुश नहीं थीं!?

[5] क़ुरआन 2:234 में शौहर की मौत की इ़द्दत चार महीने दस दिन बताई गयी है. जबकि सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) को ये मुद्दत नहीं गुज़ारने दी गयी. तो क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़ुरआन के हुक्म के ख़िलाफ़ किया!?

अब आगे के चैप्टर्स में इन सारे बेबुनियाद आरोपों का मुँहतोड़ जवाब दिया जाएगा.

चैप्टर नं. 1 ख़त्म हुआ

चैप्टर नं. 2

2.1 'सय्यिदह स़फ़िय्यह से आक़ा (ﷺ) के निकाह़' की पूरी तफ़्स़ील, और पांचों एतराज़ों का आसान और छोटा जवाब:

सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) यहूदी क़बीला 'बनू नज़ीर —वो क़बीला, जिसे नक़्ज़े अ़ह्द (Breach of treaty) की वजह से मदीना मुनव्वरह से निकाल दिया गया था—' के सरदार, और इस्लाम के कट्टर दुश्मन 'हुय्य इब्ने अख़्तब' की बेटी थीं. रसूलुल्लाह (ﷺ) के निकाह़ में आने से पहले, ये दो मर्दों के निकाह़ में रह चुकी थीं. सबसे पहले 'सल्लाम इब्ने मिश्कम अल्-क़ुरज़ी' के निकाह़ में थीं, फिर उसके बाद इस्लाम के ख़तरनाक दुश्मन 'किनानह इब्ने रबीअ़ इब्ने अबिल् हुक़ैक़' के निकाह़ में आईं;

जब मुसलमानों ने 7 हि. (629 ई.) में ख़ैबर के क़िलों को एक एक करके फ़त्ह़ करना शुरू कर दिया, तो बहुत सारा माले ग़नीमत हासिल हुआ. जिनमें बहुत सारे ग़ुलाम और बांदी भी हाथ आए, उन्हीं में से यहूदी लश्कर के सरग़ना 'हुय्य इब्ने अख़्तब' की बेटी 'सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा)' भी थीं. बनू क़ुरैज़ा के सरग़नों के साथ 'हुय्य इब्ने अख़्तब', और ख़ैबर की फ़त्ह़ के दौरान 'किनानह इब्ने रबीअ़' का सर भी, इनकी अगली-पिछली तमाम ग़द्दारियों के सबब, क़लम कर दिया गया;

इसके बाद माले ग़नीमत में से, रसूलुल्लाह (ﷺ) की इजाज़त से, सय्यिदुना दिह़्या कल्बी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने सय्यिदह स़फ़िय्यह —जो कि उस वक़्त जंग में क़ैदी बनकर आई थीं— को इख़्तियार किया. फिर स़ह़ाबा के मश्वरे पर, बहुत सारे फ़सादों को ख़त्म करने के लिए, उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे, सात ग़ुलामों या दो बांदियों के बदले वापस ले कर अपने लिए चुन लिया, क्यूंकि वो क़बीले के सरदार की शहज़ादी थीं, और सय्यिदुना हारून (अ़लैहिस्सलाम) की आ़ला नस्ल से थीं, और शहज़ादी के लिए रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेहतर कोई नहीं था. ये तो एक एतिहासिक और मनोवैज्ञानिक बात है कि इंसान हमेशा अपने बराबर के ही शख़्स़ को क़ुबूल करता है, और उसी को पसन्द करता है. वही यहां हुआ, कि एक शहज़ादी के लिए कोई आ़म शख़्स़ नहीं, बल्कि किसी ख़ास़ शख़्स़ की ही ज़रूरत होती है;

फिर ख़ैबर से लौटते हुए, रास्ते में 'उम्मे सुलैम (रद़ियल्लाहु अ़न्हा)' के ख़ेमे में, सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) को इ़द्दत गुज़ारने के लिए रखा गया. चूंकि ये शादीशुदा बांदी थीं तो एक ह़ैज़ (menstruation) गुज़ार कर 'इस्तिबराअ (cleansing)' होने पर इनकी इ़द्दत (waiting period) पूरी हो गयी. ऐसे केस में चार महीने दस दिन वाली इ़द्दत का हुक्म नहीं है, बल्कि सिर्फ़ एक ह़ैज़ के ज़रिए

'इस्तिबराअ' का हुक्म है. जो लोग यहां क़ुरआन 2:234 को लागू करने की कोशिश कर रहे हैं, उन्हें इस्लामी फ़िक़्ह की हवा भी नहीं लगी है;
इसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इन्हें डिटेल में बताया कि तुम्हारे वालिद और तुम्हारी क़ौम ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ ये-ये किया, और दुश्मनी में कोई कसर नहीं छोड़ी. फिर अपने बाप, व ख़ानदान वालों की इस्लाम-दुश्मनी का, और रसूलुल्लाह (ﷺ) के सच्चे होने का एतराफ़ ख़ुद सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) ने अपनी ज़ुबान से किया;

साथ ही साथ, सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) को इख़्तियार दिया कि अगर तुम चाहो तो मेरे निकाह़ में आ जाओ, या चाहो तो अपने यहूदी क़बीले में वापस भी जा सकती हो;

तो सय्यिदह स़फ़िय्यह ने, अपनी मर्ज़ी से, रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ अपनी ज़िंदगी बिताने का फ़ैसला लिया, और पूरी दुनिया के लोगों के सामने वो अ़ज़ीम मर्तबा हासिल किया, कि क़ुरआन ने 'उम्मुल् मुअ्मिनीन (मुसलमानों की मां)' का लक़ब अ़त़ा किया.

2.1 ख़त्म हुआ

2.2 इल्ज़ामी जवाब

अब यहां से तफ़्सीली जवाब शुरू होगा. हमारे प्यारे नबी, मुह़म्मद इब्ने अ़ब्दुल्लाह (ﷺ) पर गंदी-गंदी टिप्पणियां करने वाले पहले अपने घर की ख़बर लें:

2.2.1 सनातनियों की किताबों से कुछ मिसालें:

[1] श्रीकृष्ण जी ने अपनी बुआ 'राजाधिदेवी' की बेटी 'मित्रविंदा' से किस तरह विवाह किया, ये ख़ुद 'श्रीमद्भागवत महापुराण, स्कन्ध नं. 10, अध्याय नं. 58, श्लोक नं. 30-31' के शब्दों में सुनिए:

"विन्द्यानुविन्द्यावावन्त्यौ दुर्योधनवशानुगौ।
स्वयंवरे स्वभगिनीं कृष्णे सक्तां न्यषेधताम्।।
राजाधिदेव्यास्तनयां मित्रविन्दां पितृष्वसुः।
प्रसह्य हृतवान् कृष्णो राजन् राज्ञां प्रपश्यताम्।।"

"अवन्ती (उज्जैन) देश के राजा थे, विन्द और अनुविन्द. वे दुर्योधन के वशवर्ती और अनुयायी थे. उनकी बहन 'मित्रविंदा' ने स्वयंवर में भगवान श्रीकृष्ण को ही अपना पति बनाना चाहा. परंतु विन्द और अनुविन्द ने अपनी बहिन को रोक दिया;
परीक्षित्! 'मित्रविंदा' श्रीकृष्ण की फूआ 'राजाधिदेवी' की कन्या थी. भगवान श्रीकृष्ण राजाओं की भरी सभा में, उसे बलपूर्वक हर ले गए, सब लोग अपना सा मुँह लिए देखते ही रह गए."
[हिन्दी अर्थ: गीता प्रेस गोरखपुर, पेज नं. 500]

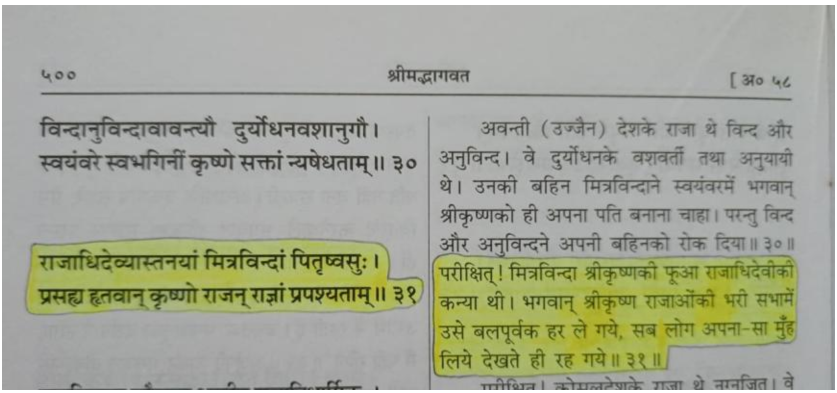
५०० श्रीमद्भागवत [अ० ५८

विन्दानुविन्दावावन्त्यौ दुर्योधनवशानुगौ।
स्वयंवरे स्वभगिनीं कृष्णे सक्तां न्यषेधताम्॥ ३०
राजाधिदेव्यास्तनयां मित्रविन्दां पितृष्वसुः।
प्रसह्य हृतवान् कृष्णो राजन् राज्ञां प्रपश्यताम्॥ ३१

अवन्ती (उज्जैन) देशके राजा थे विन्द और अनुविन्द। वे दुर्योधनके वशवर्ती तथा अनुयायी थे। उनकी बहिन मित्रविन्दाने स्वयंवरमें भगवान् श्रीकृष्णको ही अपना पति बनाना चाहा। परन्तु विन्द और अनुविन्दने अपनी बहिनको रोक दिया॥ ३०॥ परीक्षित्! मित्रविन्दा श्रीकृष्णकी फूआ राजाधिदेवीकी कन्या थी। भगवान् श्रीकृष्ण राजाओंकी भरी सभामें उसे बलपूर्वक हर ले गये, सब लोग अपना-सा मुँह लिये देखते ही रह गये॥ ३१॥
परीक्षित! कोसलदेशके राजा थे नग्नजित। वे

• इस्कॉन (ISKCON) का ऑनलाइन इंग्लिश ट्रांसलेशन भी देख लीजिए:
https://vedabase.io/en/library/sb/10/58/31/

• इसी तरह वैष्णव सम्प्रदाय के 'ऋषि गर्गाचार्य' की 'गर्ग संहिता, खण्ड नं. 6 (द्वारकाखंड), अध्याय नं. 8, श्लोक नं. 16' पर भी ये बात मौजूद है:

"आवन्त्य-राज-तनुजां
मित्रविन्दां मनोहराम्
स्वयम्वरे तां जहार
भगवान् रुक्मिणीं यथा."

"अवन्ती के नरेश की एक पुत्री थी, जो रूप-लावण्य से मन को हर लेने वाली थी. उसका नाम था मित्रविन्दा. भगवान श्रीकृष्ण रुक्मिणी की ही भांति मित्रविन्दा को भी स्वयंवर से हर लाए."
[हिन्दी अर्थ: गीता प्रेस गोरखपुर]

अवन्तीके नरेशकी एक पुत्री थी, जो रूप-लावण्यसे मनको हर लेनेवाली थी। उसका नाम था मित्रविन्दा। भगवान् श्रीकृष्ण रुक्मिणीकी ही भाँति मित्रविन्दाको भी स्वयंवरसे हर लाये॥ १६॥

• पंडित रामतेज शास्त्री ने 'प्रियंवदा' में इसका हिंदी अर्थ इस तरह किया है:
"अवन्ती (उज्जयिनी) पुरी के राजा की मनोहरा पुत्री मित्रविन्दा को वे स्वयंवर से हर लाए, जैसे पहले रुक्मिणी को हर लाए थे."
[पेज नं. 376, पब्लिकेशन: चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान (दिल्ली), 2004 ई.]

सत्राजिताय सूर्येण दत्तः साक्षात्स्यमंतकः । उग्रसेनाय स मणिः श्रीकृष्णेनाभियाचितः ॥ २ ॥
सत्राजितस्तं न ददौ द्रव्यलोभेन मैथिल । दिने दिने स्वर्णभारानष्टौ यः सृजति स्वतः ॥ ३ ॥
अथ प्रसेनस्तद्भ्राता मणिं कण्ठे निधाय सः । सैंधवं हयमारुह्य मृगयां व्यचरद्वने ॥ ४ ॥
सिंहेन मारितः सोऽपि सिंहो जांबवता हतः । गृहीत्वा तं मणिं सद्यो जांबवान्स्वगुहां गतः ॥ ५ ॥
कृष्णेन निहतो भ्राता मणिग्रीवो वनं गतः । नायातः स्वसभामध्ये इति सत्राजितोऽब्रवीत् ॥ ६ ॥
भगवान् दुर्यशोलिप्तो नागरैस्तु वनं गतः । प्रसेनमश्वं सिंहं च हतं प्रेक्ष्य महामते ॥ ७ ॥
ऋक्षराजबिलं गत्वा मणिं हर्तुं स्वयं हरिः । युद्धं कृत्वाऽष्टविंशाहमजयदृक्षनायकम् ॥ ८ ॥
तेन दत्ता जांबवती हरये कन्यका शुभा । मणिना सह राजेंद्र द्वारकामाययौ हरिः ॥ ९ ॥
सत्राजिताय प्रददौ मणिं निर्लांछनः प्रभुः । व्रीडितोऽवाङ्मुखो भीतो राजा सत्राजितो मणिम् ॥
गृहीत्वापि पुनस्तस्मै श्रीकृष्णाय महात्मने । सत्यभामां सुतां प्रादाच्छांत्यर्थं मैथिलेश्वर ॥११॥
पांडवानां सहायार्थमिंद्रप्रस्थं गतो हरिः । तत्रैव वार्षिकान्मासान्न्यवात्सीद्बन्धुवत्सलः ॥१२॥
एकदा रथमारुह्य हरिर्गांडीविना सह । सुनीरे यमुनातीरे मृगयार्थी विनिर्ययौ ॥१३॥
तपश्चरन्ती कालिंदी श्रीकृष्णं वरमिच्छती । दर्शिता पांडवेनापि तां गृहीत्वा जगाम ह ॥१४॥
द्वारकामेत्य कालिंदीं सूर्यकन्यां मनोहराम् । उपयेमे विधानेन वितन्वन्मङ्गलं परम् ॥१५॥
आवन्त्यराजतनुजां मित्रविंदां मनोहराम् । स्वयंवरे तां जहार भगवान् रुक्मिणीं यथा ॥१६॥
नग्नजित्कन्यकां सत्यां दमित्वा सप्त गोवृषान् । पश्यतां सर्वलोकानामुपयेमे हरिः स्वयम् ॥१७॥
कैकेयराजतनुजां भद्रां तु भगवान् हरिः । कालिंदीमिव तां शश्वदुपयेमे विधानतः ॥१८॥

श्रीनारदजी बोले—हे राजन् ! अब आप श्रीकृष्णकी अन्यान्य पत्नियोंके विवाहका वृत्तान्त सुनिए, जो सर्वपापहारी, अत्युत्तम तथा आयुर्वर्द्धक है ॥ १ ॥ सत्राजित्को साक्षात् सूर्यभगवानने स्यमन्तक मणि दी थी । श्रीकृष्णने सत्राजित्से वह मणि उग्रसेनके लिए माँगी ॥ २ ॥ किन्तु हे मिथिलेश ! द्रव्यके लोभ-वश सत्राजित्ने मणि नहीं दी। क्योंकि वह प्रतिदिन आठ भार सोना देती थी ॥३॥ कुछ दिनों बाद उसका भाई प्रसेन वह मणि गलेमें पहन तथा सिन्धुदेशीय घोड़ेपर सवार होकर शिकार खेलनेके लिए वनमें गया ॥ ४ ॥ वहाँपर एक सिंहने प्रसेनको मार डाला और सिंहको जाम्बवान्ने मार दिया और मणि लेकर अपनी गुफामें चले गये ॥ ५ ॥ इधर सत्राजित्ने यादवोंकी भरी सभामें कहा कि श्रीकृष्णने मेरे भाई प्रसेनको मार डाला है। वह स्यमन्तक मणि पहिनकर वनमें गया था, किन्तु अबतक लौटा नहीं है ॥ ६ ॥ इस प्रत्यक्ष लांछनके लगनेपर श्रीकृष्ण द्वारकाके नागरिकोंको साथ लेकर वनमें गये। वहाँ प्रसेन, उसके घोड़े तथा सिंहको मरा देखकर श्रीकृष्ण जाम्बवान्की कन्दरामें घुस गये और पूरे अट्ठाईस दिनतक युद्ध करके ऋक्षराजको परास्त किया ॥ ७ ॥ ८ ॥ तदनन्तर जाम्बवान्ने श्रीकृष्णको स्यमन्तकमणिके साथ अपनी सुन्दरी कन्या जाम्बवती दे दी। तब मणिके साथ श्रीकृष्ण द्वारका लौटे ॥ ९ ॥ यहाँ आकर कलंकयुक्त श्रीकृष्णने वह मणि सत्राजित्को दे दी। लज्जित और भयभीत सत्राजित्ने मस्तक नीचा करके वह मणि ली ॥१०॥ बादमें उसने शान्तिस्थापनार्थ उस मणिके साथ सत्यभामा नामकी अपनी पुत्री श्रीकृष्णको दे दी ॥ ११ ॥ कुछ समय बाद बन्धुप्रेमी श्रीकृष्ण पांडवोंकी सहायताके लिए इन्द्रप्रस्थ गये और वहाँ साल भर रह गये ॥ १२ ॥ एक दिन श्रीकृष्ण अर्जुनके साथ रथपर बैठकर शिकार खेलनेके लिए सुन्दर जलवाली यमुनाके तटपर गये ॥ १३ ॥ वहाँ श्रीकृष्णको पति-रूपमें पानेके लिए तप करती हुई कालिन्दी (यमुना) को अर्जुनने दिखाया। उसको साथ लेकर भगवान लौट आये ॥ १४ ॥ द्वारकामें पहुँचकर उन्होंने मनोहारिणी सूर्यतनया यमुनाका वैदिक विधिसे बड़े समारोह-पूर्वक पाणिग्रहण किया ॥ १५ ॥ अवन्ती (उज्जयिनी) पुरीके राजाकी मनोहरा पुत्री मित्रविन्दाको वे स्वयंवरसे हर लाये, जैसे पहले रुक्मिणीको हर लाये थे ॥ १६ ॥ राजा नग्नजित्की कन्या सत्याको भगवान् कृष्ण सब लोगोंके समक्ष सात बैलोंका दमन करके ब्याह लाये ॥ १७ ॥ कैकेयराजकी कन्या भद्राके साथ

Digitized by S3 Foundation USA

• दानवीर गोस्वामी ने इसका इंग्लिश ट्रांसलेशन इस तरह किया है:

"Then, as He had kidnapped Rukmiṇī, Lord Kṛṣṇa kidnapped beautiful Mitravindā, the princess of Avantya-deśa, at the time of her svayamvara."

[Source: https://www.wisdomlib.org/hinduism/book/garga-samhita-english/d/doc1126420.html]

मित्रविन्दा को 'अष्टभार्या (श्रीकृष्ण की आठ प्रमुख पत्नियों)' में शामिल किया गया है. यहां ये अहम बात भी याद रखी जाए कि मित्रविन्दा, श्रीकृष्ण जी की फुफेरी बहन थी.

[2] विष्णु जी ने जलंधर की बीवी 'तुलसी/वृन्दा' के साथ, उसके पति के भेष में आकर, क्या किया, ये 'शिव पुराण, रुद्र संहिता, युद्ध कांड, अध्याय नं. 23, श्लोक नं. 33-46' के शब्दों में सुनिए:

"सनत्कुमार उवाच।
इत्युक्त्वा दैत्यपत्नी सा पतिव्रत्यपरायणाः।
पादयोः पतिता तस्य दुःखश्वासान् विमुञ्चती॥३३॥
मुनिरुवाच।
नायं जीवयितुं शक्तो रुद्रेण निहतो युधि।
रुद्रेण निहता युद्धे न जीवन्ति कदाचन॥३४॥
तथापि कृपयाविष्ट एनं संजीवयाम्यहम्।
रक्ष्याश्शरणगाश्चेति जानन्धर्मं सनातनम्॥३५॥
सनत्कुमार उवाच।
इत्युक्त्वा स मुनिस्तस्या जीवयित्वा पतिं मुने ।
अंतर्दधे ततो विष्णुस्सर्वमायाविनां वरः॥३६॥
द्रुतं स जीवितस्तेनोत्थितः सागरनन्दनः।
वृन्दामालिंग्य तद्वक्त्रं चुचुंब प्रीतमानसः॥३७॥
अथ वृन्दापि भर्तारं दृष्ट्वा हर्षितमानसा।
जहौ शोकं च निखिलं स्वप्नवद्धृद्यमन्यत॥३८॥
अथ प्रसन्नहृदया सा हि संजातहृच्छया।
रेमे तद्वनमध्यस्था तद्युक्ता बहुवासरान्॥३९॥
कदाचित्सुरतस्यांते दृष्ट्वा विष्णुं तमेव हि।
निर्भर्त्स्य क्रोधसंयुक्ता वृन्दा वचनमब्रवीत्॥४०॥
वृन्दोवाच।
धिक् तदेवं हरे शीलं परदाराभिगामिनः।
ज्ञातोऽसि त्वं मया सम्यङ्मायी प्रत्यक्षतापसः॥४१॥
सनत्कुमार उवाच।
इत्युक्त्वा क्रोधमापन्ना दर्शयंती स्वतेजसम्।
शशाप केशवं व्यास पातिव्रत्यरता च सा॥४२॥
रे महाधम दैत्यारे परधर्मविदूषक।
गृह्णीष्व शठ मद्दत्तं शापं सर्वविषोल्बणम्॥४३॥

यौ त्वया मायया ख्यातौ स्वकीयौ दर्शितौ मम।
तावेव राक्षसौ भूत्वा भार्यां तव हरिष्यतः॥४४॥
त्वं चापि भार्यादुःखार्तो वने कपिसहायवान्।
भ्रम सर्पेश्वरेणायं यस्ते शिष्यत्वमागतः॥४५॥
सनत्कुमार उवाच।
इत्युक्त्वा सा तदा वृन्दा प्रविशद्धव्यवाहनम्।
विष्णुना वार्यमाणापि तस्मितासक्तचेतसा॥४६॥"

"सनत्कुमार बोले— इस प्रकार कहकर पातिव्रत धर्म में तत्पर वह दैत्यपत्नी दुख से श्वास छोड़ती हुई उनके पैरों पर गिर पड़ी।।33।।
मुनि बोले— यह युद्ध में रुद्र के द्वारा मारा गया है, इसलिए इसको जिलाने में मैं समर्थ नहीं हूं; क्यूंकि रुद्र के द्वारा युद्ध में मारा गया व्यक्ति कभी जीवित नहीं होता।।34।।
तथापि शरणागत की रक्षा करनी चाहिए, इस शाश्वत धर्म को जानता हुआ मैं कृपा से युक्त होकर इसे जीवित कर देता हूं।।35।।
सनत्कुमार बोले— हे मुने! सभी मायावियों में श्रेष्ठ वे मुनिरूपी विष्णु ऐसा कहकर उसके पति को जीवित करके वहाँ से अंतर्धान हो गए।।36।।
उनके द्वारा जीवित समुद्रपुत्र जलंधर भी शीघ्र उठकर प्रसन्न मन से वृंदा का आलिंगन कर उसके मुख का स्पर्श करने लगा।।37।।
पति को देखकर वृंदा ने हर्षित मन से सभी प्रकार के शोक का परित्याग कर दिया और इस घटना को स्वप्न के समान समझा।।38।।
वह प्रसन्नचित्त से काम का उदय होने पर उस वन के मध्य में ही उसके साथ बहुत दिनों तक विहार करती रही।।39।।
एक बार सहवास के अंत में उसको विष्णु के रूप में जानकर क्रोध से युक्त होकर फटकारती हुई वृंदा यह वचन बोली—।।40।।
वृंदा बोली— अरे परस्त्रीगामी हरि! तुम्हारे इस प्रकार के चरित्र को धिक्कार है. मैंने तुम को अच्छी प्रकार से जान लिया है. तुमने ही माया का आश्रय लेकर तपस्वी का वेष धारण किया था।।41।।
सनत्कुमार बोले— हे व्यास! पातिव्रतपरायण उस वृंदा ने ऐसा कहकर क्रोधयुक्त होकर अपने तेज को दिखाते हुए विष्णु को शाप दे दिया।।42।।
रे महाधम! दैत्यशत्रु! तुम दूसरे के धर्म को दूषित करने वाले हो, इसलिए अरे शठ! सभी प्रकार के विषों से तीव्र मेरे द्वारा दिए गए शाप को ग्रहण करो।।43।।
तुमने अपनी माया से जिन दो पुरुषों को दिखाया था, वे ही दोनों राक्षस बनकर तुम्हारी पत्नी का हरण करेंगे।।44।। तुम भी पत्नी के दुख से दुखित होकर वानरों की सहायता लेकर वन में भटकते हुए घूमो, और यह जो सर्पों का स्वामी (शेषनाग) तुम्हारा शिष्य बना था, यह भी तुम्हारे साथ भ्रमण करे।।45।।

ऐसा कहकर वह वृंदा उस समय विष्णु के द्वारा रोके जाने पर भी अपने पति जलंधर का मन में ध्यान करते हुए अग्नि में प्रवेश कर गयी।।46।।

[हिन्दी अर्थ: गीता प्रेस गोरखपुर, पेज नं. 918-919]

आप जीवित कर दें ॥ ३२ ॥

सनत्कुमार उवाच

इत्युक्त्वा दैत्यपत्नी सा पातिव्रत्यपरायणा।
पादयोः पतिता तस्य दुःखश्वासान् विमुञ्चती ॥ ३३

सनत्कुमार बोले—इस प्रकार कहकर पातिव्रतधर्ममें तत्पर वह दैत्यपत्नी दुःखसे श्वास छोड़ती हुई उनके पैरोंपर गिर पड़ी ॥ ३३ ॥

मुनिरुवाच

नायं जीवयितुं शक्तो रुद्रेण निहतो युधि।
रुद्रेण निहता युद्धे न जीवन्ति कदाचन ॥ ३४

मुनि बोले—यह युद्धमें रुद्रके द्वारा मारा गया है, इसलिये इसको जिलानेमें मैं समर्थ नहीं हूँ; क्योंकि रुद्रके द्वारा युद्धमें मारा गया व्यक्ति कभी जीवित नहीं होता ॥ ३४ ॥

तथापि कृपयाविष्ट एनं संजीवयाम्यहम्।
रक्ष्याः शरणगाश्चेति जानन्धर्मं सनातनम् ॥ ३५

तथापि शरणागतकी रक्षा करनी चाहिये, इस शाश्वत धर्मको जानता हुआ मैं कृपासे युक्त होकर इसे जीवित कर देता हूँ ॥ ३५ ॥

सनत्कुमार उवाच

इत्युक्त्वा स मुनिस्तस्या जीवयित्वा पतिं मुने।
अंतर्दधे ततो विष्णुः सर्वमायाविनां वरः ॥ ३६

सनत्कुमार बोले—हे मुने! सभी मायावियोंमें श्रेष्ठ वे मुनिरूपी विष्णु ऐसा कहकर उसके पतिको जीवित करके वहाँसे अन्तर्धान हो गये ॥ ३६ ॥

द्रुतं स जीवितस्तेनोत्थितः सागरनन्दनः।
वृन्दामालिंग्य तद्वक्त्रं चुचुम्ब प्रीतमानसः ॥ ३७

उनके द्वारा जीवित समुद्रपुत्र जलन्धर भी शीघ्र उठकर प्रसन्नमनसे वृन्दाका आलिंगनकर उसके मुखका स्पर्श करने लगा ॥ ३७ ॥

अथ वृन्दापि भर्तारं दृष्ट्वा हर्षितमानसा।
जहौ शोकं च निखिलं स्वप्नवद् हृद्यमन्यत ॥ ३८

पतिको देखकर वृन्दाने हर्षित मनसे सभी प्रकारके शोकका परित्याग कर दिया और इस घटनाको स्वप्नके समान समझा ॥ ३८ ॥

अथ प्रसन्नहृदया सा हि संजातहृच्छया।
रेमे तद्वनमध्यस्था तद्युक्ता बहुवासरान् ॥ ३९

वह प्रसन्नचित्तसे कामका उदय होनेपर उस वनके मध्यमें ही उसके साथ बहुत दिनोंतक विहार करती रही ॥ ३९ ॥

अ० २३] रुद्रसंहिता (युद्धखण्ड) ९१९

कदाचित्सुरतस्यांते दृष्ट्वा विष्णुं तमेव हि।
निर्भर्त्स्य क्रोधसंयुक्ता वृन्दा वचनमब्रवीत् ॥ ४०

एक बार सहवासके अन्तमें उसको विष्णुके रूपमें जानकर क्रोधसे युक्त होकर फटकारती हुई वृन्दा यह वचन बोली— ॥ ४० ॥

वृन्दोवाच

धिक् तदेवं हरे शीलं परदाराभिगामिनः।
ज्ञातोऽसि त्वं मया सम्यङ्मायी प्रत्यक्षतापसः ॥ ४१

वृन्दा बोली—अरे परस्त्रीगामी हरि! तुम्हारे इस प्रकारके चरित्रको धिक्कार है। मैंने तुमको अच्छी प्रकारसे जान लिया है। तुमने ही मायाका आश्रय लेकर तपस्वीका वेष धारण किया था ॥ ४१ ॥

सनत्कुमार उवाच

इत्युक्त्वा क्रोधमापन्ना दर्शयन्ती स्वतेजसम्।
शशाप केशवं व्यास पातिव्रत्यरता च सा ॥ ४२

सनत्कुमार बोले—हे व्यास! पातिव्रतपरायण उस वृन्दाने ऐसा कहकर क्रोधयुक्त होकर अपने तेजको दिखाते हुए विष्णुको शाप दे दिया ॥ ४२ ॥

रे महाधम दैत्यारे परधर्मविदूषक।
गृह्णीष्व शठ मद्दत्तं शापं सर्वविषोल्बणम् ॥ ४३

रे महाधम! दैत्यशत्रु! तुम दूसरेके धर्मको दूषित करनेवाले हो, इसलिये अरे शठ! सभी प्रकारके विषोंसे तीव्र मेरे द्वारा दिये गये शापको ग्रहण करो ॥ ४३ ॥

यौ त्वया मायया ख्यातौ स्वकीयौ दर्शितौ मम।
तावेव राक्षसौ भूत्वा भार्यां तव हरिष्यतः ॥ ४४

तुमने अपनी मायासे जिन दो पुरुषोंको दिखाया था, वे ही दोनों राक्षस बनकर तुम्हारी पत्नीका हरण करेंगे ॥ ४४ ॥

त्वं चापि भार्यादुःखार्तो वने कपिसहायवान्।
भ्रम सर्पेश्वरेणायं यस्ते शिष्यत्वमागतः ॥ ४५

तुम भी पत्नीके दुःखसे दुखित होकर वानरोंकी सहायता लेकर वनमें भटकते हुए घूमो और यह जो सर्पोंका स्वामी (शेषनाग) तुम्हारा शिष्य बना था, यह भी तुम्हारे साथ भ्रमण करे ॥ ४५ ॥

इत्युक्त्वा सा तदा वृन्दा प्राविशद्धव्यवाहनम्।
विष्णुना वार्यमाणापि तत्स्थितासक्तचेतसा ॥ ४६

ऐसा कहकर वह वृन्दा उस समय विष्णुके द्वारा रोके जानेपर भी अपने पति जलन्धरका मनमें ध्यान करते हुए अग्निमें प्रवेश कर गयी ॥ ४६ ॥

हे मुने! उस समय उसकी उत्तम गतिको

यही बात **'स्कन्ध पुराण, खण्ड नं. 2 (वैष्णव खण्ड), उपखंड नं. 4 (कार्तिकमास-माहात्म्य), अध्याय नं. 21, श्लोक नं. 10-30'** पर, **'शिव पुराण, रुद्र संहिता, युद्ध कांड, अध्याय नं. 41, श्लोक नं. 1-45'** पर, **'ब्रह्मवैवर्तपुराण, प्रकृति खण्ड, अध्याय नं. 21, श्लोक नं. 18-31'** पर, और **'देवीभागवत पुराण, स्कन्ध नं. 9, अध्याय नं. 24, श्लोक नं. 1-22'** पर भी देखी जा सकती है. यही शाप था जो बाद में रामायण की शक्ल में ज़ाहिर हुआ.

• इसका ऑनलाइन इंग्लिश ट्रांसलेशन भी देख लीजिए:
https://www.wisdomlib.org/hinduism/book/shiva-purana-english/d/doc226164.html

[3] जल देवता 'वरुण जी' ने महर्षि 'उतथ्य' की एक पत्नी 'भद्रा' —जो कि सोम (चंद्रमा) की बेटी थी— के साथ क्या किया, ये 'महाभारत, अनुशासन पर्व, दानधर्म पर्व, अध्याय नं. 154, श्लोक नं. 10-14' के शब्दों में सुनिए:

"भद्रा सोमस्य दुहिता रूपेण परमा मता।
तस्यास्तुल्यं पतिं सोम उतथ्यं समपश्यत॥१०॥
सा च तीव्रं तपस्तेपे महाभागा यशस्विनी।
उतथ्यं तु महाभागं तत्कृतेऽवरयत्तदा॥११॥
तत आहूय सोतथ्यं ददावत्र यशस्विनीम्।
भार्यार्थे स च जग्राह विधिवद्भूरिदक्षिण॥१२॥
तां त्वकामयत श्रीमान्वरुणः पूर्वमेव ह।
स चागम्य वनप्रस्थं यमुनायां जहार ताम्॥१३॥
जलेश्वरस्तु हृत्वा तामनयत्स्वपुरं प्रति।
परमाद्भुतसंकाशं षट्सहस्रशतहृदम्॥१४॥"

"सोम की पुत्री भद्रा नाम से विख्यात थी. वह अपने समय की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी मानी जाती थी. चंद्रमा ने देखा, महर्षि उतथ्य ही मेरी पुत्री के योग्य वर हैं॥10॥
सुन्दर अंगों वाली महाभागा यशस्विनी भद्रा भी उतथ्य को पतिरुप में प्राप्त करने के लिए उत्तम नियम का आश्रय ले तीव्र तपस्या करने लगी॥11॥
तब कुछ दिनों बाद सोम के पिता महर्षि अत्रि ने उतथ्य को बुला कर अपनी यशस्विनी पौत्री का हाथ उनके हाथ में दे दिया. प्रचुर दक्षिणा देने वाले उतथ्य ने अपनी पत्नी बनाने के लिए भद्रा को विधिपूर्वक पाणिग्रहण किया॥12॥ परंतु श्रीमान वरुणदेव उस कन्या को पहले से ही चाहते थे. उन्होंने वन में स्थित मुनि के आश्रम के निकट आकर यमुना में स्नान करते समय भद्रा का अपहरण कर लिया॥13॥
जलेश्वर वरुण उस स्त्री को हर कर अपने परम अद्भुत नगर में ले आए; जहां छः हजार बिजलियों का प्रकाश छा रहा था॥14॥" [हिन्दी अर्थ: गीता प्रेस गोरखपुर, पेज नं. 720-721]

भद्रा सोमस्य दुहिता रूपेण परमा मता।
तस्यास्तुल्यं पतिं सोम उतथ्यं समपश्यत॥ १०॥

राजा कार्तवीर्य अर्जुन कोई उत्तर न दे सका। वह चुपचाप ही बैठा रहा। तब पवन देवता फिर कहने लगे—'राजन्! अब तुम अंगिराके कुलमें उत्पन्न हुए उतथ्यका वृत्तान्त सुनो। सोमकी पुत्री भद्रा नामसे विख्यात थी। वह अपने समयकी सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी मानी जाती थी। चन्द्रमाने देखा, महर्षि उतथ्य ही मेरी पुत्रीके योग्य वर हैं॥ ९-१०॥

सा च तीव्रं तपस्तेपे महाभागा यशस्विनी।
उतथ्यार्थे तु चार्वङ्गी परं नियममास्थिता॥ ११॥

'सुन्दर अंगोंवाली महाभागा यशस्विनी भद्रा भी उतथ्यको पतिरूपमें प्राप्त करनेके लिये उत्तम नियमका आश्रय ले तीव्र तपस्या करने लगी॥ ११॥

तत आहूय सोतथ्यं ददावत्रिर्यशस्विनीम्।
भार्यार्थे स च जग्राह विधिवद् भूरिदक्षिणः॥ १२॥

दानधर्मपर्व] चतुष्पञ्चाशदधिकश

'तब कुछ दिनोंके बाद सोमके पिता महर्षि अत्रिने उतथ्यको बुलाकर अपनी यशस्विनी पौत्रीका हाथ उनके हाथमें दे दिया। प्रचुर दक्षिणा देनेवाले उतथ्यने अपनी पत्नी बनानेके लिये भद्राका विधिपूर्वक पाणिग्रहण किया॥ १२॥

तां त्वकामयत श्रीमान् वरुणः पूर्वमेव ह।
स चागम्य वनप्रस्थं यमुनायां जहार ताम्॥ १३॥

'परंतु श्रीमान् वरुणदेव उस कन्याको पहलेसे ही चाहते थे। उन्होंने वनमें स्थित मुनिके आश्रमके निकट आकर यमुनामें स्नान करते समय भद्राका अपहरण कर लिया॥ १३॥

जलेश्वरस्तु हृत्वा तामनयत् स्वं पुरं प्रति।
परमाद्भुतसंकाशं षट्सहस्रशतह्रदम्॥ १४॥

'जलेश्वर वरुण उस स्त्रीको हरकर अपने परम अद्भुत नगरमें ले आये; जहाँ छः हजार बिजलियोंका प्रकाश* छा रहा था॥ १४॥

एक अहम बात याद रखियेगा कि मैंने महाभारत के, 'गीता प्रेस गोरखपुर' एडीशन से ये हवाला पेश किया है. जिसमें 'अनुशासन पर्व, दानधर्म पर्व, अध्याय नं. 154' में ये क़िस्सा मौजूद है. जबकि महाभारत के बहुत से दूसरे एडीशन में ये बात 'अध्याय नं. 139' में आई है. जैसे कि ये ऑनलाइन सोर्स चेक करें:
https://www.wisdomlib.org/hinduism/book/mahabharata-sanskrit/d/doc1035907.html

[4] देवताओं के गुरु 'बृहस्पति जी' ने अपने भाई उतथ्य की दूसरी गर्भवती पत्नी 'ममता' के साथ क्या किया, आइए सुनते हैं 'श्रीमद्भागवत महापुराण, स्कन्ध नं. 9, अध्याय नं. 20, श्लोक नं. 36' के शब्दों में:

"अन्तर्वत्न्यां भ्रातृपत्न्यां मैथुनाय बृहस्पतिः।
प्रवृत्तो वारितो गर्भं शप्त्वा वीर्यमुपासृजत्॥"

"भरद्वाज की उत्पत्ति का प्रसंग यह है कि एक बार बृहस्पति जी ने अपने भाई उतथ्य की गर्भवती पत्नी से मैथुन करना चाहा. उस समय गर्भ में जो बालक (दीर्घतमा) था, उसने मना किया. किन्तु बृहस्पति जी ने उसकी बात पर ध्यान न दिया, और उसे 'तू अंधा हो जा' यह शाप देकर बलपूर्वक गर्भाधान कर दिया."
[हिन्दी अर्थ: गीता प्रेस गोरखपुर, पेज नं. 99]

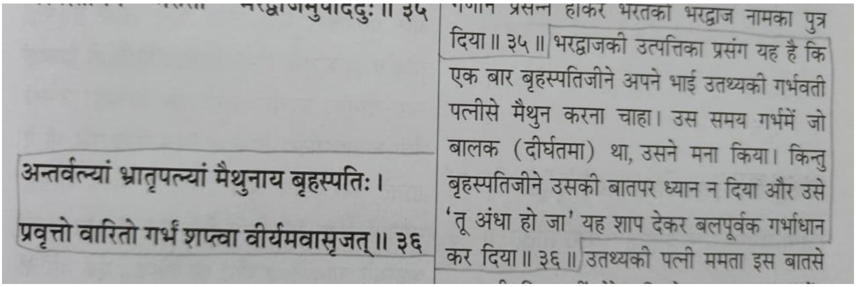
भरद्वाजमुपाददुः ॥ ३५

अन्तर्वत्न्यां भ्रातृपत्न्यां मैथुनाय बृहस्पतिः ।
प्रवृत्तो वारितो गर्भं शप्त्वा वीर्यमवासृजत् ॥ ३६

प्रसन्न होकर भरतको भरद्वाज नामका पुत्र दिया ॥ ३५ ॥ भरद्वाजकी उत्पत्तिका प्रसंग यह है कि एक बार बृहस्पतिजीने अपने भाई उतथ्यकी गर्भवती पत्नीसे मैथुन करना चाहा। उस समय गर्भमें जो बालक (दीर्घतमा) था, उसने मना किया। किन्तु बृहस्पतिजीने उसकी बातपर ध्यान न दिया और उसे 'तू अंधा हो जा' यह शाप देकर बलपूर्वक गर्भाधान कर दिया ॥ ३६ ॥ उतथ्यकी पत्नी ममता इस बातसे

• इसका इंग्लिश ट्रांसलेशन भी देख लें:
https://vedabase.io/en/library/sb/9/20/36/

यही स्टोरी **'शिव पुराण, उमा संहिता, अध्याय नं. 4, श्लोक नं. 38'** पर, **'मत्स्य पुराण, अध्याय नं. 49, श्लोक नं. 17-28'** पर, **'ब्रह्मांड पुराण, उपोद्घाता-पाद, अध्याय नं. 74, श्लोक नं. 36-46'** पर, **'देवीभागवत पुराण, स्कन्ध नं. 4, अध्याय नं. 15, श्लोक नं. 59-64'** पर, **'वायु पुराण, अध्याय नं. 37, श्लोक नं. 36-46'** पर भी आई है.

[5] शिव जी ने जब 'मोहिनी' को देखा, तो वो कैसे मोहित हुए, ये 'श्रीमद्भागवत पुराण, स्कन्ध नं. 8, अध्याय नं. 12, श्लोक नं. 23-34' के शब्दों में सुनिए:

"तस्या: कराग्रात् स तु कन्दुको यदागतो विदूरं तमनुव्रजत्स्त्रिया:।
वास: ससूत्रं लघु मारुतोऽहरद्भवस्य देवस्य किलानुपश्यत:॥२३॥
एवं तां रुचिरापाङ्गीं दर्शनीयां मनोरमाम्।
दृष्ट्वा तस्यां मनश्चक्रे विषज्जन्त्यां भव: किल॥२४॥
तयापहृतविज्ञानस्तत्कृतस्मरविह्वल:।
भवान्या अपि पश्यन्त्या गतह्रीस्तत्पदं ययौ॥२५॥
सा तमायान्तमालोक्य विवस्त्रा व्रीडिता भृशम्।
निलीयमाना वृक्षेषु हसन्ती नान्वतिष्ठत॥२६॥
तामन्वगच्छद् भगवान् भव: प्रमुषितेन्द्रिय:।
कामस्य च वशं नीत: करेणुमिव यूथप:॥२७॥
सोऽनुव्रज्यातिवेगेन गृहीत्वानिच्छतीं स्त्रियम्।
केशबन्ध उपानीय बाहुभ्यां परिषस्वजे॥२८॥
सोपगूढा भगवता करिणा करिणी यथा।
इतस्तत: प्रसर्पन्ती विप्रकीर्णशिरोरुहा॥२९॥
आत्मानं मोचयित्वाङ्ग सुरर्षभभुजान्तरात्।
प्राद्रवत्सा पृथुश्रोणी माया देवविनिर्मिता॥३०॥
तस्यासौ पदवीं रुद्रो विष्णोरद्भुतकर्मण:।
प्रत्यपद्यत कामेन वैरिणेव विनिर्जित:॥३१॥
तस्यानुधावतो रेतश्चस्कन्दामोघरेतस:।
शुष्मिणो यूथपस्येव वासितामनुधावत:॥३२॥
यत्र यत्रापतन्मह्यां रेतस्तस्य महात्मन:।
तानि रूप्यस्य हेम्नश्च क्षेत्राण्यासन्महीपते॥३३॥
सरित्सर:सु शैलेषु वनेषूपवनेषु च।
यत्र क्व चासन्नृषयस्तत्र सन्निहितो हर:॥३४॥"

"एक बार मोहिनी के हाथ से उछलकर गेंद थोड़ी दूर चला गया. वह भी उसी के पीछे दौड़ी. उसी समय शंकर जी के देखते-देखते वायु ने उसकी झीनी-सी साड़ी करधनी के साथ ही उड़ा ली॥23॥
मोहिनी का एक एक अंग बड़ा ही रुचिकर और मनोरम था. जहां आंखें लग जातीं, लगी ही रहतीं. यही नहीं, मन भी वहीं रमण करने लगता. उसको इस दशा में देखकर भगवान शंकर, उसकी ओर अत्यंत आकृष्ट हो गए. उन्हें मोहिनी भी अपने प्रति आसक्त जान पड़ती थी॥24॥
उसने शंकर जी का विवेक छीन लिया. वे उसके हाव-भावों से कामातुर हो गए और भवानी के सामने ही लज्जा छोड़कर उसको ओर चल पड़े॥25॥

मोहिनी वस्त्रहीन तो पहले ही हो चुकी थी, शंकर जी को अपनी ओर आते देख बहुत लज्जित हो गयी. वह एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष की आड़ में जाकर छिप जाती और हँसने लगती. परंतु कहीं ठहरती न थी॥26॥
भगवान शंकर की इंद्रियां अपने वश में नहीं रहीं, वे कामवश हो गए थे; अतः हथिनी के पीछे हाथी की तरह उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगे॥27॥
उन्होंने अत्यंत वेग से उसका पीछा करके पीछे से उसका जूड़ा पकड़ लिया और उसकी इच्छा न होने पर भी उसे दोनों भुजाओं में भरकर हृदय से लगा लिया॥28॥
जैसे हाथी हथिनी का आलिंगन करता है, वैसे ही भगवान शंकर ने उसका आलिंगन किया. वह इधर-उधर खिसककर छुड़ाने की चेष्टा करने लगी, इसी छीना-झपटी में उसके बाल बिखर गए॥29॥
वास्तव में वो सुन्दरी भगवान की रची हुई माया ही थी, इससे उसने किसी प्रकार शंकर जी के भुजपाश से अपने को छुड़ा लिया और बड़े वेग से भागी॥30॥
भगवान शंकर भी उन मोहिनीवेषधारी अद्भुतकर्मा भगवान विष्णु के पीछे-पीछे दौड़ने लगे. उस समय ऐसा जान पड़ता था, मानो उनके शत्रु कामदेव ने इस समय उनपर विजय प्राप्त कर ली है॥31॥
कामुक हथिनी के पीछे दौड़ने वाले मदोन्मत्त हाथी के समान वे मोहिनी के पीछे-पीछे दौड़ रहे थे. यद्यपि भगवान शंकर का वीर्य अमोघ है, फिर भी मोहिनी की माया से वह स्खलित हो गया॥32॥
भगवान शंकर का वीर्य पृथ्वी पर जहां जहां गिरा, वहाँ वहाँ सोने चांदी की खानें बन गयीं॥33॥
परीक्षित! नदी, सरोवर, पर्वत, वन और उपवन में एवं जहां जहां ऋषि मुनि निवास करते थे, वहाँ वहाँ मोहिनी के पीछे-पीछे भगवान शंकर गए थे॥34॥"

[हिन्दी अर्थ: गीता प्रेस गोरखपुर, पेज नं. 966-967]

तस्याः कराग्रात् स तु कन्दुको यदा
गतो विदूरं तमनुव्रजत्स्त्रियाः।
वासः ससूत्रं लघु मारुतोऽहरद्
भवस्य देवस्य किलानुपश्यतः॥ २३

एवं तां रुचिरापाङ्गीं दर्शनीयां मनोरमाम्।
दृष्ट्वा तस्यां मनश्चक्रे विषज्जन्त्यां भवः किल॥ २४

तयापहृतविज्ञानस्तत्कृतस्मरविह्वलः[१]।
भवान्या अपि पश्यन्त्या गतह्रीस्तत्पदं ययौ॥ २५

सा तमायान्तमालोक्य विवस्त्रा व्रीडिता भृशम्।
निलीयमाना वृक्षेषु हसन्ती नान्वतिष्ठत॥ २६

तामन्वगच्छद् भगवान् भवः प्रमुषितेन्द्रियः।
कामस्य च वशं नीतः करेणुमिव यूथपः॥ २७

सोऽनुव्रज्यातिवेगेन गृहीत्वानिच्छतीं स्त्रियम्।
केशबन्ध उपानीय बाहुभ्यां परिषस्वजे॥ २८

रहती॥ २२॥ एक बार मोहिनीके हाथसे उछलकर गेंद थोड़ी दूर चला गया। वह भी उसीके पीछे दौड़ी। उसी समय शंकरजीके देखते-देखते वायुने उसकी झीनी-सी साड़ी करधनीके साथ ही उड़ा ली॥ २३॥

मोहिनीका एक-एक अंग बड़ा ही रुचिकर और मनोरम था। जहाँ आँखें लग जातीं, लगी ही रहतीं। यही नहीं, मन भी वहीं रमण करने लगता। उसको इस दशामें देखकर भगवान् शंकर उसकी ओर अत्यन्त आकृष्ट हो गये। उन्हें मोहिनी भी अपने प्रति आसक्त जान पड़ती थी॥ २४॥ उसने शंकरजीका विवेक छीन लिया। वे उसके हाव-भावोंसे कामातुर हो गये और भवानीके सामने ही लज्जा छोड़कर उसकी ओर चल पड़े॥ २५॥

मोहिनी वस्त्रहीन तो पहले ही हो चुकी थी, शंकरजीको अपनी ओर आते देख बहुत लज्जित हो गयी। वह एक वृक्षसे दूसरे वृक्षकी आड़में जाकर छिप जाती और हँसने लगती। परन्तु कहीं ठहरती न थी॥ २६॥ भगवान् शंकरकी इन्द्रियाँ अपने वशमें नहीं रहीं, वे कामवश हो गये थे; अतः हथिनीके पीछे हाथीकी तरह उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगे॥ २७॥ उन्होंने अत्यन्त वेगसे उसका पीछा करके पीछेसे उसका जूड़ा पकड़ लिया और उसकी इच्छा न होनेपर भी उसे दोनों भुजाओंमें भरकर हृदयसे लगा लिया॥ २८॥

१. प्रा० पा०—स्तद्गत०।

अ० १२] अष्टम स्कन्ध ९६७

सोपगूढा भगवता करिणा करिणी यथा।
इतस्ततः प्रसर्पन्ती विप्रकीर्णशिरोरुहा॥ २९

आत्मानं मोचयित्वाङ्ग सुरर्षभभुजान्तरात्।
प्राद्रवत्सा पृथुश्रोणी माया देवविनिर्मिता॥ ३०

तस्यासौ पदवीं रुद्रो विष्णोरद्भुतकर्मणः।
प्रत्यपद्यत कामेन वैरिणेव विनिर्जितः॥ ३१

तस्यानुधावतो रेतश्चस्कन्दामोघरेतसः।
शुष्मिणो यूथपस्येव वासितामनु धावतः॥ ३२

यत्र यत्रापतन्मह्यां रेतस्तस्य महात्मनः।
तानि रूप्यस्य हेम्नश्च क्षेत्राण्यासन्महीपते॥ ३३

सरित्सरस्सु शैलेषु वनेषूपवनेषु च।
यत्र क्व चासन्नृषयस्तत्र संनिहितो हरः॥ ३४

जैसे हाथी हथिनीका आलिंगन करता है, वैसे ही भगवान् शंकरने उसका आलिंगन किया। वह इधर-उधर खिसककर छुड़ानेकी चेष्टा करने लगी, इसी छीना-झपटीमें उसके सिरके बाल बिखर गये॥ २९॥ वास्तवमें वह सुन्दरी भगवान्‌की रची हुई माया ही थी, इससे उसने किसी प्रकार शंकरजीके भुजपाशसे अपनेको छुड़ा लिया और बड़े वेगसे भागी॥ ३०॥ भगवान् शंकर भी उन मोहिनीवेषधारी अद्भुतकर्मा भगवान् विष्णुके पीछे-पीछे दौड़ने लगे। उस समय ऐसा जान पड़ता था, मानो उनके शत्रु कामदेवने इस समय उनपर विजय प्राप्त कर ली है॥ ३१॥ कामुक हथिनीके पीछे दौड़नेवाले मदोन्मत्त हाथीके समान वे मोहिनीके पीछे-पीछे दौड़ रहे थे। यद्यपि भगवान् शंकरका वीर्य अमोघ है, फिर भी मोहिनीकी मायासे वह स्खलित हो गया॥ ३२॥ भगवान् शंकरका वीर्य पृथ्वीपर जहाँ-जहाँ गिरा, वहाँ-वहाँ सोने-चाँदीकी खानें बन गयीं॥ ३३॥ परीक्षित्! नदी, सरोवर, पर्वत, वन और उपवनमें एवं जहाँ-जहाँ ऋषि-मुनि निवास करते थे, वहाँ वहाँ मोहिनीके पीछे-पीछे भगवान् शंकर गये थे॥ ३४॥ परीक्षित्! वीर्यपात हो जानेके

इस अध्याय की हेडिंग कुछ इस तरह डाली गयी: *"मोहिनी रूप को देखकर महादेव जी का मोहित होना."*

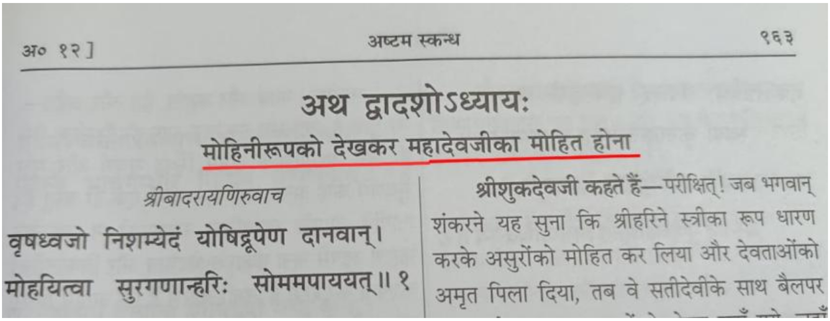

अ० १२] अष्टम स्कन्ध ९६३

अथ द्वादशोऽध्यायः

मोहिनीरूपको देखकर महादेवजीका मोहित होना

श्रीबादरायणिरुवाच

वृषध्वजो निशम्येदं योषिद्रूपेण दानवान्।
मोहयित्वा सुरगणान्हरिः सोममपाययत्॥ १

श्रीशुकदेवजी कहते हैं—परीक्षित्! जब भगवान् शंकरने यह सुना कि श्रीहरिने स्त्रीका रूप धारण करके असुरोंको मोहित कर लिया और देवताओंको अमृत पिला दिया, तब वे सतीदेवीके साथ बैलपर

• इसका अंग्रेज़ी में अनुवाद भी देख लीजिए:
https://vedabase.io/en/library/sb/8/12/23/

[6] इन्द्र देवता ने ऋषि गौतम की पत्नी 'अहिल्या' के साथ, गौतम ऋषि के भेष में आकर क्या किया, ये 'वाल्मीकि रामायण, बालकांड, अध्याय नं. 48, श्लोक नं. 17-28' के शब्दों में सुनिए:

"तस्यान्तरं विदित्वा तु सहस्राक्षश्शचीपति:।।

मुनिवेषधरोऽहल्यामिदं वचनमब्रवीत्।
ऋतुकालं प्रतीक्षन्ते नार्थिनस्सुसमाहिते।।

सङ्गमं त्वहमिच्छामि त्वया सह सुमध्यमे।
मुनिवेषं सहस्राक्षं विज्ञाय रघुनन्दन।।

मतिं चकार दुर्मेधा देवराजकुतूहलात्।
अथाब्रवीत् नरश्रेष्ठ कृतार्थेनान्तरात्मना।।

कृतार्थाऽस्मि सुरश्रेष्ठ गच्छ शीघ्रमित: प्रभो।
आत्मानं मां च देवेश सर्वदा रक्ष गौतमात्।।

इन्द्रस्तु प्रहसन् वाक्यमहल्यामिदमब्रवीत्।
सुश्रोणि परितुष्टोऽस्मि गमिष्यामि यथाऽगतम्।।

एवं सङ्गम्य तु तया निश्चक्रामोटजात्तत:।
स सम्भ्रमात्त्वरन् राम शङ्कितो गौतमं प्रति।।

गौतमं तं ददर्शाथ प्रविशन्तं महामुनिम्।
देवदानवदुर्धर्षं तपोबलसमन्वितम्।।

तीर्थोदकपरिक्लिन्नं दीप्यमानमिवानलम्।
गृहीतसमिधं तत्र सकुशं मुनिपुङ्गवम्।।

दृष्ट्वा सुरपतिस्त्रस्तो विवर्णवदनोऽभवत्।
अथ दृष्ट्वा सहस्राक्षं मुनिवेषधरं मुनि:।।

दुर्वृत्तं वृत्तसम्पन्नो रोषाद्वचनमब्रवीत्।
मम रूपं समास्थाय कृतवानसि दुर्मते।।

अकर्तव्यमिदं तस्माद्विफलस्त्वं भविष्यसि।
गौतमेनैवमुक्तस्य सरोषेण महात्मना।।

पेततुर्वृषणौ भूमौ सहस्राक्षस्य तत्क्षणात्।"

"एक दिन जब महर्षि गौतम आश्रम पर नहीं थे, उपयुक्त अवसर समझकर शचीपति इन्द्र, गौतम मुनि का वेष धारण किए वहाँ आए और अहिल्या से इस प्रकार बोले:
'सदा सावधान रहने वाली सुन्दरी! रति की इच्छा रखने वाले प्रार्थी पुरुष ऋतुकाल की प्रतीक्षा नहीं करते हैं. सुन्दर कटिप्रदेश वाली सुन्दरी! मैं (इन्द्र) तुम्हारे साथ समागम करना चाहता हूं.'
रघुनंदन! महर्षि गौतम का वेष धारण करके आए हुए इन्द्र को पहचानकर भी उस दुर्बुद्धि नारी ने 'अहो! देवराज इंद्र मुझे चाहते हैं' इस कौतूहलवश उनके साथ समागम का निश्चय करके यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया;
रति के पश्चात उसने देवराज इंद्र से संतुष्टचित्त होकर कहा: 'सुरश्रेष्ठ! मैं आपके समागम से कृतार्थ हो गयी. प्रभो! अब आप शीघ्र यहां से चले जाइए. देवेश्वर! महर्षि गौतम के कोप से आप अपनी और मेरी भी सब प्रकार से रक्षा कीजिए.'
तब इन्द्र ने अहिल्या से हँसते हुए कहा: 'सुन्दरी! मैं भी संतुष्ट हो गया. अब जैसे आया था, उसी तरह चला जाऊँगा.'
श्रीराम! इस प्रकार अहिल्या से समागम करके इन्द्र जब उस कुटी से बाहर निकले, तब गौतम के आ जाने की आशंका से बड़ी उतावली के साथ वेगपूर्वक भागने का प्रयत्न करने लगे;
इतने में ही उन्होंने देखा, देवताओं और दानवों के लिए भी दुर्धर्ष, तपोबलसम्पन्न महामुनि गौतम हाथ में समिधा लिए आश्रम में प्रवेश कर रहे हैं. उनका शरीर तीर्थ के जल से भीगा हुआ है और वे प्रज्वलित अग्नि के समान उद्दीप्त हो रहे हैं;
उनपर दृष्टि पड़ते ही देवराज इंद्र भय से थर्रा उठे. उनके मुख पर विषाद छा गया. दुराचारी इन्द्र को मुनि का वेष धारण किए देख सदाचारसम्पन्न मुनिवर गौतम जी ने रोष में भरकर कहा:

'दुर्मते! तूने मेरा रूप धारण करके यह न करने योग्य पापकर्म किया है, इसलिए तू विफल (अण्डकोषों से रहित) हो जाएगा.'
रोष में भरे हुए महात्मा गौतम के ऐसा कहते ही सहस्त्राक्ष इन्द्र के दोनों अण्डकोष उसी क्षण पृथ्वी पर गिर पड़े." [हिन्दी अर्थ: गीता प्रेस गोरखपुर]

• इसका इंग्लिश ट्रांसलेशन यहां देख लें:
https://www.valmiki.iitk.ac.in/sloka?field_kanda_tid=1&language=dv&field_sarga_value=48

तस्यान्तरं विदितवा च सहस्त्राक्षः शचीपतिः।
मुनिवेषधरो भूत्वा अहल्यामिदमब्रवीत्॥ १७॥

'एक दिन जब महर्षि गौतम आश्रमपर नहीं थे, उपयुक्त अवसर समझकर शचीपति इन्द्र गौतम मुनिका वेष धारण किये वहाँ आये और अहल्यासे इस प्रकार बोले— ॥ १७॥

ऋतुकालं प्रतीक्षन्ते नार्थिनः सुसमाहिते।
संगमं त्वहमिच्छामि त्वया सह सुमध्यमे॥ १८॥

''सदा सावधान रहनेवाली सुन्दरी! रतिकी इच्छा रखनेवाले प्रार्थी पुरुष ऋतुकालकी प्रतीक्षा नहीं करते हैं। सुन्दर कटिप्रदेशवाली सुन्दरी! मैं (इन्द्र) तुम्हारे साथ समागम करना चाहता हूँ'॥ १८॥

मुनिवेषं सहस्त्राक्षं विज्ञाय रघुनन्दन।
मतिं चकार दुर्मेधा देवराजकुतूहलात्॥ १९॥

'रघुनन्दन! महर्षि गौतमका वेष धारण करके आये हुए इन्द्रको पहचानकर भी उस दुर्बुद्धि नारीने 'अहो! देवराज इन्द्र मुझे चाहते हैं' इस कौतूहलवश उनके साथ समागमका निश्चय करके वह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया॥

अथाब्रवीत् सुरश्रेष्ठं कृतार्थेनान्तरात्मना।
कृतार्थास्मि सुरश्रेष्ठ गच्छ शीघ्रमितः प्रभो॥ २०॥
आत्मानं मां च देवेश सर्वथा रक्ष गौतमात्।

'रतिके पश्चात् उसने देवराज इन्द्रसे संतुष्टचित्त होकर कहा—'सुरश्रेष्ठ! मैं आपके समागमसे कृतार्थ हो गयी। प्रभो! अब आप शीघ्र यहाँसे चले जाइये। देवेश्वर! महर्षि गौतमके कोपसे आप अपनी और मेरी भी सब प्रकारसे रक्षा कीजिये'॥ २०$\frac{१}{२}$॥

इन्द्रस्तु प्रहसन् वाक्यमहल्यामिदमब्रवीत्॥ २१॥
सुश्रोणि परितुष्टोऽस्मि गमिष्यामि यथागतम्।

'तब इन्द्रने अहल्यासे हँसते हुए कहा—'सुन्दरी! मैं भी संतुष्ट हो गया। अब जैसे आया था, उसी तरह चला जाऊँगा'॥ २१$\frac{१}{२}$॥

एवं संगम्य तु तदा निश्चक्रामोटजात् ततः॥ २२॥
स सम्भ्रमात् त्वरन् राम शङ्कितो गौतमं प्रति।

'श्रीराम! इस प्रकार अहल्यासे समागम करके इन्द्र जब उस कुटीसे बाहर निकले, तब गौतमके आ जानेकी आशङ्कासे बड़ी उतावलीके साथ वेगपूर्वक भागनेका प्रयत्न करने लगे॥ २२$\frac{१}{२}$॥

गौतमं स ददर्शाथ प्रविशन्तं महामुनिम्॥ २३॥
देवदानवदुर्धर्षं तपोबलसमन्वितम्।
तीर्थोदकपरिक्लिन्नं दीप्यमानमिवानलम्॥ २४॥
गृहीतसमिधं तत्र सकुशं मुनिपुंगवम्।

'इतनेहीमें उन्होंने देखा, देवताओं और दानवोंके लिये भी दुर्धर्ष, तपोबलसम्पन्न महामुनि गौतम हाथमें समिधा लिये आश्रममें प्रवेश कर रहे हैं। उनका शरीर तीर्थके जलसे भीगा हुआ है और वे प्रज्वलित अग्निके समान उद्दीप्त हो रहे हैं॥ २३-२४$\frac{१}{२}$॥

दृष्ट्वा सुरपतिस्त्रस्तो विषण्णवदनोऽभवत्॥ २५॥
अथ दृष्ट्वा सहस्त्राक्षं मुनिवेषधरं मुनिः।
दुर्वृत्तं वृत्तसम्पन्नो रोषाद् वचनमब्रवीत्॥ २६॥

'उनपर दृष्टि पड़ते ही देवराज इन्द्र भयसे थर्रा उठे। उनके मुखपर विषाद छा गया। दुराचारी इन्द्रको मुनिका वेष धारण किये देख सदाचारसम्पन्न मुनिवर गौतमजीने रोषमें भरकर कहा— ॥ २५-२६॥

मम रूपं समास्थाय कृतवानसि दुर्मते।
अकर्तव्यमिदं यस्माद् विफलस्त्वं भविष्यसि॥ २७॥

''दुर्मते! तूने मेरा रूप धारण करके यह न करनेयोग्य पापकर्म किया है, इसलिये तू विफल (अण्डकोषोंसे रहित) हो जायगा'॥ २७॥

गौतमेनैवमुक्तस्य सुरोषेण महात्मना।
पेततुर्वृषणौ भूमौ सहस्त्राक्षस्य तत्क्षणात्॥ २८॥

'रोषमें भरे हुए महात्मा गौतमके ऐसा कहते ही सहस्त्राक्ष इन्द्रके दोनों अण्डकोष उसी क्षण पृथ्वीपर गिर पड़े॥ २८॥

यही बात **'पद्म पुराण, सृष्टि खण्ड, अध्याय नं. 54, श्लोक नं. 4-5'** पर, **'शिव पुराण, उमा संहिता, अध्याय नं. 4, श्लोक नं. 18'** पर, **'महाभारत, शांति पर्व, मोक्षधर्म पर्व, अध्याय नं. 343'** में भी ज़िक्र की गयी है.

ऊपर ज़िक्र की गयी कथाओं पर, न मैंने अपनी तरफ़ से कोई कमेन्ट किया है, और न ही कोई अर्थ अपने पास से लिखा है. हर हवाले के स्कैन पेज भी साथ में लगाए हैं, और ऑनलाइन सोर्स भी ज़िक्र कर दिए हैं. लिहाज़ा किसी भी सनातनी मित्र को मुझ से कोई शिकवा नहीं होना चाहिए, क्यूंकि मैंने तो सिर्फ़ वही नक़्ल किया है जो आपकी किताबों में स्पष्ट लिखा है;
मेरे पास ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जिन्हें मैं अपने सनातनी मित्रों की धार्मिक किताबों से पेश कर सकता हूं. मगर समझाने के लिए मैंने सिर्फ़ ये कुछ ही हवाले दिए हैं, ताकि इन्साफ़-पसंद सनातनी मित्र, सच जान सकें. जिस तरह से सनातनियों की तरफ़ से हमारे पैग़म्बर सय्यिदुना मुह़म्मद (ﷺ), और दूसरी इस्लामी हस्तियों के बारे में बुरी बुरी बातें की जा रही हैं, उसी तरह अगर कोई मुसलमान ऊपर ज़िक्र की गयी बातों को लेकर आपके देवताओं और महापुरुषों के बारे में ग़लत बातें कहे, तो कैसा मह़सूस होगा? मगर हम मुसलमान हैं, हम किसी दूसरे धर्म के मअ़बूदों को बुरा नहीं कहते. हमारे क़ुरआन 06:108 ने ख़ुद हमें ये तअ़लीम दी है कि:

"وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ"....

"और उन्हें गाली न दो, जिनको वो, अल्लाह के सिवा पूजते हैं...." [कंज़ुल् ईमान]

हालांकि जो बातें महाभारत, या पुराणों में सनातन धर्म के देवताओं को लेकर लिखी हुई हैं इन्हें एक सनातनी तो क्या, ख़ुद एक मुसलमान भी पसन्द नहीं करता, कि किसी धर्म के महापुरुष के बारे में उल्टी-सीधी बातें लिखी या बोली जाएं.

2.2.1 ख़त्म हुआ

2.2.2 यहूदियों और ई़साईयों की किताबों से कुछ मिसालें:

[1] सय्यिदुना यअ़्क़ूब (अ़लैहिस्सलाम) के बेटे, यहूदियों के पूर्वज: 'यहूदा (Judah)' ने अपनी बहू —जो उनके बड़े बेटे 'एर (Er)' की बीवी थी— 'तामार (Tamar)' के साथ क्या किया, वो 'Genesis, Chapter no. 38, Verse no. 1-30 (KJV)' के अल्फ़ाज़ में सुनिए:

"And it came to pass at that time, that Judah went down from his brethren, and turned in to a certain Adullamite, whose name was Hirah.
And Judah saw there a daughter of a certain Canaanite, whose name was Shuah; and he took her, and went in unto her.
And she conceived, and bare a son; and he called his name Er.
And she conceived again, and bare a son; and she called his name Onan.
And she yet again conceived, and bare a son; and called his name Shelah: and he was at Chezib, when she bare him.
And Judah took a wife for Er his firstborn, whose name was Tamar.
And Er, Judah's firstborn, was wicked in the sight of the Lord; and the Lord slew him.
And Judah said unto Onan, Go in unto thy brother's wife, and marry her, and raise up seed to thy brother.
And Onan knew that the seed should not be his; and it came to pass, when he went in unto his brother's wife, that he spilled it on the ground, lest that he should give seed to his brother.
And the thing which he did displeased the Lord: wherefore he slew him also.
Then said Judah to Tamar his daughter in law, Remain a widow at thy father's house, till Shelah my son be grown: for he said, Lest peradventure he die also, as his brethren did. And Tamar went and dwelt in her father's house.
And in process of time the daughter of Shuah Judah's wife died; and Judah was comforted, and went up unto his sheepshearers to Timnath, he and his friend Hirah the Adullamite.
And it was told Tamar, saying, Behold thy father in law goeth up to Timnath to shear his sheep.
And she put her widow's garments off from her, and covered her with a vail, and wrapped herself, and sat in an open place, which is by the way to Timnath; for she saw that Shelah was grown, and she was not given unto him to wife.
When Judah saw her, he thought her to be an harlot; because she had covered her face.

And he turned unto her by the way, and said, Go to, I pray thee, let me come in unto thee; (for he knew not that she was his daughter in law.) And she said, What wilt thou give me, that thou mayest come in unto me?
And he said, I will send thee a kid from the flock. And she said, Wilt thou give me a pledge, till thou send it?
And he said, What pledge shall I give thee? And she said, Thy signet, and thy bracelets, and thy staff that is in thine hand. And he gave it her, and came in unto her, and she conceived by him.
And she arose, and went away, and laid by her vail from her, and put on the garments of her widowhood.
And Judah sent the kid by the hand of his friend the Adullamite, to receive his pledge from the woman's hand: but he found her not.
Then he asked the men of that place, saying, Where is the harlot, that was openly by the way side? And they said, There was no harlot in this place.
And he returned to Judah, and said, I cannot find her; and also the men of the place said, that there was no harlot in this place.
And Judah said, Let her take it to her, lest we be shamed: behold, I sent this kid, and thou hast not found her.
And it came to pass about three months after, that it was told Judah, saying, Tamar thy daughter in law hath played the harlot; and also, behold, she is with child by whoredom. And Judah said, Bring her forth, and let her be burnt.
When she was brought forth, she sent to her father in law, saying, By the man, whose these are, am I with child: and she said, Discern, I pray thee, whose are these, the signet, and bracelets, and staff.
And Judah acknowledged them, and said, She hath been more righteous than I; because that I gave her not to Shelah my son. And he knew her again no more.
And it came to pass in the time of her travail, that, behold, twins were in her womb.
And it came to pass, when she travailed, that the one put out his hand: and the midwife took and bound upon his hand a scarlet thread, saying, This came out first.
And it came to pass, as he drew back his hand, that, behold, his brother came out: and she said, How hast thou broken forth? this breach be upon thee: therefore his name was called Pharez.
And afterward came out his brother, that had the scarlet thread upon his hand: and his name was called Zarah."

"उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ, कि यहूदा अपने भाईयों के पास से चला गया, और हीरा नाम एक अदुल्लामवासी पुरूष के पास डेरा किया;
वहां यहूदा ने शूआ नाम एक कनानी पुरूष की बेटी को देखा; और उसको ब्याह कर उसके पास गया;
वह गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और यहूदा ने उसका नाम एर रखा;
और वह फिर गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और उसका नाम ओनान रखा गया;
फिर उसके एक पुत्र और उत्पन्न हुआ, और उसका नाम शेला रखा गया: और जिस समय इसका जन्म हुआ उस समय यहूदा कजीब में रहता था;
और यहूदा ने तामार नाम एक स्त्री से अपने जेठे एर का विवाह कर दिया;
परन्तु यहूदा का वह जेठा एर यहोवा के लेखे में दुष्ट था, इसलिये यहोवा ने उसको मार डाला;
तब यहूदा ने ओनान से कहा, अपनी भौजाई के पास जा, और उसके साथ देवर का धर्म पूरा करके अपने भाई के लिये सन्तान उत्पन्न कर;

ओनान तो जानता था कि सन्तान तो मेरी न ठहरेगी: सो ऐसा हुआ, कि जब वह अपनी भौजाई के पास गया, तब उसने भूमि पर वीर्य गिराकर नाश किया, जिस से ऐसा न हो कि उसके भाई के नाम से वंश चले;
यह काम जो उसने किया उसे यहोवा अप्रसन्न हुआ: और उसने उसको भी मार डाला;
तब यहूदा ने इस डर के मारे, कि कहीं ऐसा न हो कि अपने भाइयों की नाईं शेला भी मरे, अपनी बहू तामार से कहा, जब तक मेरा पुत्र शेला सियाना न हो तब तक अपने पिता के घर में विधवा की बैठी रह, सो तामार अपने पिता के घर में जा कर रहने लगी;
बहुत समय के बीतने पर यहूदा की पत्नी जो शूआ की बेटी थी सो मर गई; फिर यहूदा शोक से छूटकर अपने मित्र हीरा अदुल्लामवासी समेत अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतराने के लिये तिम्नाथ को गया;
और तामार को यह समाचार मिला, कि तेरा ससुर अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतराने के लिये तिम्नाथ को जा रहा है;
तब उसने यह सोच कर, कि शेला सियाना तो हो गया पर मैं उसकी स्त्री नहीं होने पाई; अपना विधवापन का पहिरावा उतारा, और घूंघट डाल कर अपने को ढांप लिया, और एनैम नगर के फाटक के पास, जो तिम्नाथ के मार्ग में है, जा बैठी:
जब यहूदा ने उसको देखा, उसने उसको वेश्या समझा; क्योंकि वह अपना मुंह ढ़ापे हुए थी;
और वह मार्ग से उसकी ओर फिरा और उससे कहने लगा, मुझे अपने पास आने दे, (क्योंकि उसे यह मालूम न था कि वह उसकी बहू है)। और वह कहने लगी, कि यदि मैं तुझे अपने पास आने दूं, तो तू मुझे क्या देगा?
उसने कहा, मैं अपनी बकरियों में से बकरी का एक बच्चा तेरे पास भेज दूंगा। तब उसने कहा, भला उस के भेजने तक क्या तू हमारे पास कुछ रेहन रख जाएगा?

उस ने पूछा, मैं तेरे पास क्या रेहन रख जाऊं? उस ने कहा, अपनी मुहर, और बाजूबन्द, और अपने हाथ की छड़ी। तब उसने उसको वे वसतुएं दे दीं, और उसके पास गया, और वह उससे गर्भवती हुई;
तब वह उठ कर चली गई, और अपना घूंघट उतार के अपना विधवापन का पहिरावा फिर पहिन लिया;
तब यहूदा ने बकरी का बच्चा अपने मित्र उस अदुल्लामवासी के हाथ भेज दिया, कि वह रेहन रखी हुई वस्तुएं उस स्त्री के हाथ से छुड़ा ले आए; पर वह स्त्री उसको न मिली;
तब उसने वहां के लोगों से पूछा, कि वह देवदासी जो एनैम में मार्ग की एक और बैठी थी, कहां है? उन्होंने कहा, यहां तो कोई देवदासी न थी;
सो उसने यहूदा के पास लौट के कहा, मुझे वह नहीं मिली; और उस स्थान के लोगों ने कहा, कि यहां तो कोई देवदासी न थी;
तब यहूदा ने कहा, अच्छा, वह बन्धक उस के पास रहने दे, नहीं तो हम लोग तुच्छ गिने जाएंगे: देख, मैं ने बकरी का यह बच्चा भेज दिया, पर वह तुझे नहीं मिली;
और तीन महीने के पीछे यहूदा को यह समाचार मिला, कि तेरी बहू तामार ने व्यभिचार किया है; वरन वह व्यभिचार से गर्भवती भी हो गई है। तब यहूदा ने कहा, उसको बाहर ले आओ, कि वह जलाई जाए;
जब उसे बाहर निकाल रहे थे, तब उसने, अपने ससुर के पास यह कहला भेजा, कि जिस पुरूष की ये वस्तुएं हैं, उसी से मैं गर्भवती हूं; फिर उसने यह भी कहलाया, कि पहिचान तो सही, कि यह मुहर, और बाजूबन्द, और छड़ी किस की है;
यहूदा ने उन्हें पहिचान कर कहा, वह तो मुझ से कम दोषी है; क्योंकि मैं ने उसे अपने पुत्र शेला को न ब्याह दिया। और उसने उससे फिर कभी प्रसंग न किया;
जब उसके जनने का समय आया, तब यह जान पड़ा कि उसके गर्भ में जुड़वे बच्चे हैं;
और जब वह जनने लगी तब एक बालक ने अपना हाथ बढ़ाया: और धाय ने लाल सूत ले कर उसके हाथ में यह कहते हुथे बान्ध दिया, कि पहिले यही उत्पन्न हुआ;
जब उसने हाथ समेट लिया, तब उसका भाई उत्पन्न हो गया: तब उस धाय ने कहा, तू क्यों बरबस निकल आया है? इसलिये उसका नाम पेरेस रखा गया;
पीछे उसका भाई जिसके हाथ में लाल सूत बन्धा था उत्पन्न हुआ, और उसका नाम जेरह रखा गया."
[हिन्दी ट्रांसलेशन: https://www.wordproject.org/bibles/in/01/38.htm#0]

बाइबल (Matthew, 1:3 & Luke, 3:33) के मुत़ाबिक़, ज़िना से पैदा होने वाले इन दोनों बच्चों में से एक: 'पेरेस (Phares/Perez)' के नसब में 'सय्यिदुना ईसा मसीह़ (Jesus Christ)' की पैदाइश हुई; अस्तग़्फ़िरुल्लाहल् अ़ज़ीम!

[2] सय्यिदुना यअ़्क़ूब (अ़लैहिस्सलाम) के बड़े बेटे: 'रूबेन (Reuben)' के बारे में 'Genesis, Chapter no. 35, Verse no. 22 (KJV)' में लिखा है कि वो अपने वालिद की बांदी 'बिल्हा' के साथ ही हमबिस्तर हो लिया:

"And it came to pass, when Israel dwelt in that land, that Reuben went and lay with Bilhah his father's concubine: and Israel heard it...."

"जब इस्राएल उस देश में बसा था, तब एक दिन ऐसा हुआ, कि रूबेन ने जा कर अपने पिता की रखेली बिल्हा के साथ कुकर्म किया: और यह बात इस्राएल को मालूम हो गई...."
[हिन्दी ट्रांसलेशन: https://www.wordproject.org/bibles/in/01/35.htm#0]

[3] अल्लाह के नबी, सय्यिदुना लूत़ (Prophet Lot) और उनकी दो बेटियों की तरफ़ मंसूब एक घिनौना क़िस्सा —जिसे यहां ज़िक्र करते वक़्त मेरी आँखों में आंसू, और हाथों में कंपकंपी है— को बाइबल के अल्फ़ाज़ में पढ़िए, जिसे 'Genesis, Chapter no. 19, Verse no. 30-38 (KJV)' में लिखा गया है:

"And Lot went up out of Zoar, and dwelt in the mountain, and his two daughters with him; for he feared to dwell in Zoar: and he dwelt in a cave, he and his two daughters;
And the firstborn said unto the younger, Our father is old, and there is not a man in the earth to come in unto us after the manner of all the earth:
Come, let us make our father drink wine, and we will lie with him, that we may preserve seed of our father;
And they made their father drink wine that night: and the firstborn went in, and lay with her father; and he perceived not when she lay down, nor when she arose;
And it came to pass on the morrow, that the firstborn said unto the younger, Behold, I lay yesternight with my father: let us make him drink wine this night also; and go thou in, and lie with him, that we may preserve seed of our father;
And they made their father drink wine that night also: and the younger arose, and lay with him; and he perceived not when she lay down, nor when she arose;
Thus were both the daughters of Lot with child by their father;
And the first born bare a son, and called his name Moab: the same is the father of the Moabites unto this day;
And the younger, she also bare a son, and called his name Benammi: the same is the father of the children of Ammon unto this day. "

"और लूत ने सोअर को छोड़ दिया, और पहाड़ पर अपनी दोनों बेटियों समेत रहने लगा; क्योंकि वह सोअर में रहने से डरता था: इसलिये वह और उसकी दोनों बेटियां वहां एक गुफा में रहने लगे;
तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, हमारा पिता बूढ़ा है, और पृथ्वी भर में कोई ऐसा पुरूष नहीं जो संसार की

रीति के अनुसार हमारे पास आए: सो आ, हम अपने पिता को दाखमधु पिला कर, उसके साथ सोएं, जिस से कि हम अपने पिता के वंश को बचाए रखें;
सो उन्होंने उसी दिन रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया, तब बड़ी बेटी जा कर अपने पिता के पास लेट गई; पर उसने न जाना, कि वह कब लेटी, और कब उठ गई;
और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन बड़ी ने छोटी से कहा, देख, कल रात को मैं अपने पिता के साथ सोई: सो आज भी रात को हम उसको दाखमधु पिलाएं; तब तू जा कर उसके साथ सोना कि हम अपने पिता के द्वारा वंश उत्पन्न करें;
सो उन्होंने उस दिन भी रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया: और छोटी बेटी जा कर उसके पास लेट गई: पर उसको उसके भी सोने और उठने के समय का ज्ञान न था;
इस प्रकार से लूत की दोनो बेटियां अपने पिता से गर्भवती हुई;
और बड़ी एक पुत्र जनी, और उसका नाम मोआब रखा: वह मोआब नाम जाति का जो आज तक है मूलपिता हुआ;
और छोटी भी एक पुत्र जनी, और उसका नाम बेनम्मी रखा; वह अम्मोन वंशियों का जो आज तक हैं मूलपिता हुआ."
[हिन्दी ट्रांसलेशन: https://www.wordproject.org/bibles/in/01/19.htm#0]

[4] सय्यिदुना दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) के बड़े बेटे: 'अम्नोन (Amnon)' ने अपनी सौतेली बहन: 'तामार' के साथ क्या किया, ये '2nd Samuel, Chapter no. 13, Verse no. 1-14 (KJV)' के अल्फ़ाज़ में सुनिए:

"And it came to pass after this, that Absalom the son of David had a fair sister, whose name was Tamar; and Amnon the son of David loved her;
And Amnon was so vexed, that he fell sick for his sister Tamar; for she was a virgin; and Amnon thought it hard for him to do anything to her;
But Amnon had a friend, whose name was Jonadab, the son of Shimeah David's brother: and Jonadab was a very subtil man;
And he said unto him, Why art thou, being the king's son, lean from day to day? wilt thou not tell me? And Amnon said unto him, I love Tamar, my brother Absalom's sister;
And Jonadab said unto him, Lay thee down on thy bed, and make thyself sick: and when thy father cometh to see thee, say unto him, I pray thee, let my sister Tamar come, and give me meat, and dress the meat in my sight, that I may see it, and eat it at her hand;
So Amnon lay down, and made himself sick: and when the king was come to see him, Amnon said unto the king, I pray thee, let Tamar my sister come, and

make me a couple of cakes in my sight, that I may eat at her hand;
Then David sent home to Tamar, saying, Go now to thy brother Amnon's house, and dress him meat;
So Tamar went to her brother Amnon's house; and he was laid down. And she took flour, and kneaded it, and made cakes in his sight, and did bake the cakes;
And she took a pan, and poured them out before him; but he refused to eat. And Amnon said, Have out all men from me. And they went out every man from him;
And Amnon said unto Tamar, Bring the meat into the chamber, that I may eat of thine hand. And Tamar took the cakes which she had made, and brought them into the chamber to Amnon her brother;
And when she had brought them unto him to eat, he took hold of her, and said unto her, Come lie with me, my sister;
And she answered him, Nay, my brother, do not force me; for no such thing ought to be done in Israel: do not thou this folly;
And I, whither shall I cause my shame to go? and as for thee, thou shalt be as one of the fools in Israel. Now therefore, I pray thee, speak unto the king; for he will not withhold me from thee;
Howbeit he would not hearken unto her voice: but, being stronger than she, forced her, and lay with her."

"इसके बाद तामार नाम एक सुन्दरी जो दाऊद के पुत्र अबशालोम की बहिन थी, उस पर दाऊद का पुत्र अम्नोन मोहित हुआ;
और अम्नोन अपनी बहिन तामार के कारण ऐसा विकल हो गया कि बीमार पड़ गया; क्योंकि वह कुमारी थी, और उसके साथ कुछ करना अम्नोन को कठिन जान पड़ता था;
अम्नोन के योनादाब नाम एक मित्र था, जो दाऊद के भाई शिमा का बेटा था; और वह बड़ा चतुर था;
और उसने अम्नोन से कहा, हे राजकुमार, क्या कारण है कि तू प्रति दिन ऐसा दुबला होता जाता है क्या तू मुझे न बताएगा? अम्नोन ने उस से कहा, मैं तो अपने भाई अबशालोम की बहिन तामार पर मोहित हूं;
योनादाब ने उस से कहा, अपने पलंग पर लेटकर बीमार बन जा; और जब तेरा पिता तुझे देखने को आए, तब उस से कहना, मेरी बहिन तामार आकर मुझे रोटी खिलाए, और भोजन को मेरे साम्हने बनाए, कि मैं उसको देखकर उसके हाथ से खाऊं;
और अम्नोन लेटकर बीमार बना; और जब राजा उसे देखने आया, तब अम्नोन ने राजा से कहा, मेरी बहिन तामार आकर मेरे देखते दो पूरी बनाए, कि मैं उसके हाथ से खाऊं;
और दाऊद ने अपने घर तामार के पास यह कहला भेजा, कि अपने भाई अम्नोन के घर जा कर उसके लिये भोजन बना;

तब तामार अपने भाई अम्नोन के घर गई, और वह पड़ा हुआ था। तब उसने आटा ले कर गूंधा, और उसके देखते पूरियां पकाईं;
तब उसने थाल ले कर उन को उसके लिये परोसा, परन्तु उसने खाने से इनकार किया। तब अम्नोन ने कहा, मेरे आस पास से सब लोगों को निकाल दो, तब सब लोग उसके पास से निकल गए;
तब अम्नोन ने तामार से कहा, भोजन को कोठरी में ले आ, कि मैं तेरे हाथ से खाऊं। तो तामार अपनी बनाई हुई पूरियों को उठा कर अपने भाई अम्नोन के पास कोठरी में ले गई;
जब वह उन को उसके खाने के लिये निकट ले गई, तब उसने उसे पकड़कर कहा, हे मेरी बहिन, आ, मुझ से मिल;
उसने कहा, हे मेरे भाई, ऐसा नहीं, मुझे भ्रष्ट न कर; क्योंकि इस्राएल में ऐसा काम होना नहीं चाहिये; ऐसी मूढ़ता का काम न कर;
और फिर मैं अपनी नामधराई लिये हुए कहां जाऊंगी? और तू इस्राएलियों में एक मूढ़ गिना जाएगा। तू राजा से बातचीत कर, वह मुझ को तुझे ब्याह देने के लिये मना न करेगा;
परन्तु उसने उसकी न सुनी; और उस से बलवान होने के कारण उसके साथ कुकर्म करके उसे भ्रष्ट किया."
[हिन्दी ट्रांसलेशन: https://www.wordproject.org/bibles/in/10/13.htm#0]

[5] सय्यिदुना दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) के एक और बेटे: 'अबशालोम (Absalom)' ने अपने वालिद की कई बांदियों के साथ हमबिस्तरी की, जैसा कि '2nd Samuel, Chapter no. 16, Verse no. 22 (KJV)' में लिखा गया:

"So they spread Absalom a tent upon the top of the house; and Absalom went in unto his father's concubines in the sight of all Israel."

"सो उसके लिये भवन की छत के ऊपर एक तम्बू खड़ा किया गया, और अबशालोम समस्त इस्राएल के देखते अपने पिता की रखेलियों के पास गया."
[हिन्दी ट्रांसलेशन: https://www.wordproject.org/bibles/in/10/16.htm#0]

'Womanist Theology' की मश्हूर अमेरिकी-अफ्रीकी प्रोफ़ेसर, 'Christian Methodist Episcopal Church (CME Church)' की मेंबर, 'Shaw University (North Carolina)' में वूमेन स्टडीज की डायरेक्टर: 'Cheryl A. Kirk Duggan', अपनी किताब: 'Pregnant Passion: Gender, Sex and violence in the Bible' में लिखती हैं कि अबशालोम ने अपने वालिद दाऊद की 10 बीवियों का रेप किया, और ये दाऊद के लिए सज़ा थी उस जुर्म की, जो उन्होंने अपने कमांडर 'हित्ती ऊरिय्याह (Uriah the Hittite)' की बीवी: 'बतशेबा (Bathsheba)' का रेप किया, और उसे जंग में धोखे से मरवा डाला.

Exum views David's "rape" of Bathsheba in parallel with Amnon's rape of Tamar and Absalom's rape of David's ten wives. Interestingly, for having Uriah killed, for taking Uriah's wife, and for his adultery, David does not experience direct punishment. Bathsheba as Uriah's property has no recourse. David's wives are raped; this is David's punishment; these wives have no recourse.

[Page no. 59, Published by Brill Publishing, Leiden, 2004]

[6] ख़ुद सय्यिदुना दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) की तरफ़ मंसूब, ये घटिया क़िस्सा भी '2nd Samuel, Chapter no. 11, Verse no. 1-27 (KJV)' के मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में सुन लें:

"And it came to pass, after the year was expired, at the time when kings go forth to battle, that David sent Joab, and his servants with him, and all Israel; and they destroyed the children of Ammon, and besieged Rabbah. But David tarried still at Jerusalem.
And it came to pass in an eveningtide, that David arose from off his bed, and walked upon the roof of the king's house: and from the roof he saw a woman washing herself; and the woman was very beautiful to look upon;
And David sent and enquired after the woman. And one said, Is not this Bathsheba, the daughter of Eliam, the wife of Uriah the Hittite?
And David sent messengers, and took her; and she came in unto him, and he lay with her; for she was purified from her uncleanness: and she returned unto her house; And the woman conceived, and sent and told David, and said, I am with child……"

"फिर जिस समय राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं, उस समय, अर्थात वर्ष के आरम्भ में दाऊद ने योआब को, और उसके संग अपने सेवकों और समस्त इस्राएलियों को भेजा; और उन्होंने अम्मोनियों को नाश किया, और रब्बा नगर को घेर लिया। परन्तु दाऊद यरूशलेम में रह गया;
सांझ के समय दाऊद पलंग पर से उठ कर राजभवन की छत पर टहल रहा था, और छत पर से उसको एक स्त्री, जो अति सुन्दर थी, नहाती हुई देख पड़ी;
जब दाऊद ने भेज कर उस स्त्री को पुछवाया, तब किसी ने कहा, क्या यह एलीआम की बेटी, और हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा नहीं है?
तब दाऊद ने दूत भेज कर उसे बुलवा लिया; और वह दाऊद के पास आई, और वह उसके साथ सोया। (वह तो ऋतु से शुद्ध हो गई थी) तब वह अपने घर लौट गई;
और वह स्त्री गर्भवती हुई, तब दाऊद के पास कहला भेजा, कि मुझे गर्भ है……"
[हिन्दी ट्रांसलेशन: https://www.wordproject.org/bibles/in/10/11.htm#0]

हमारे पैग़म्बर, मुह़म्मद इब्ने अ़ब्दुल्लाह (ﷺ) के ख़िलाफ़ भौकने वाले यहूदियों, और स़लीब-परस्तों (Cross worshippers) को चाहिए कि उनकी किताब में मौजूद इन घिनौनी बातों पर भी डिबेट का मैदान सजाएं, और सबसे पहले हमें बुलाएं.

أعتذر إلى الكرام الكَمَلة هؤلاء من ما دعتْني إليه ضرورة الجهلاء؛
لا حول ولا قوة إلا بالله العلي العظيم؛
أستغفر الله العظيم و أتوب إليه عدد خلقه!
لا إله إلا الله محمد رسول الله (ﷺ)

2.2.2 ख़त्म हुआ

2.2.3 नास्तिकों की दुनिया की सैर:

आज कल के नास्तिकों को इस सब्जेक्ट पर बात करने का बड़ा शौक़ चढ़ा हुआ है. जिससे वो ये ज़ाहिर करना चाहते हैं कि वो औ़रतों के बड़े ख़ैरख़्वाह हैं. जबकि मामला इसके बर-अ़क्स है. आइए हम आपको बताते हैं कि एक नास्तिक, जब राजनीतिक, या आर्थिक, या सामाजिक त़ाक़त हासिल कर लेता है, तब कैसे कैसे ज़ुल्म करता है:

[1] सोवियत यूनियन (USSR) का कट्टर कम्यूनिस्ट नास्तिक तानाशाह, 'मार्क्सिस्म-लेनिनिज्म (Marxism-Leninism)' का सबसे बड़ा सरग़ना: 'जोसफ स्टैलिन (d. 1953 ई.)', जिसने अपनी तानाशाही में 'गुलाग (Gulag)' नाम का एक ख़तरनाक 'फोर्स्ड लेबर कैंप सिस्टम' तैयार किया. जिसमें 18 मिलियन से ज़्यादा लोग क़ैद किए गए. हज़ारों औरतों को ज़ुल्म और हबस का निशाना बनाया गया;

30 जुलाई 1937 ई. को NKVD के क़ानून नं. 00447 के मुत़ाबिक़, जब तक मुजरिम का कोई फ़ैमिली मेंबर, सुबूतों की रौशनी में मुजरिम साबित न होगा, तब तक उसे अरैस्ट नहीं किया जाएगा. मगर पंद्रह दिन के बाद ही 15 अगस्त 1937 ई. को क़ानून बदल दिया गया, और क़ानून नं. 00486 में मुजरिम की बीवी को भी, आर्टिकल नं. 58 (Wives of traitors to the motherland) के तह़्त अरैस्ट करने का हुक्म जारी हुआ. ऐसी क़ैदी औ़रतों की सबसे भारी तादाद 'कज़ाख़स्तान' के 'अकमोला' शहर में थी, जो 1937 से 1953 तक 18000 के क़रीब थी. जिनमें 62 मुल्कों की औरतें क़ैद थीं. न सिर्फ़ बीवियां, बल्कि मुजरिम की माँ, और बहनें भी क़ैद की गयी थीं.

['Stalin and the Politics of Kinship: Practices of Collective Punishment, 1920s-1940s (by Golfo Alexopoulos)', Page no. 104-105, included in 'Comparative Studies in Society and History', Vol. 50, No.1 (2008);
'Motherhood and Survival in the Stalinist Gulag (by Elaine Mackinnon)', Page no. 70, Published in 'Aspasia' Vol. 13, Page no. 65-94 (2019)]

फिर इस नास्तिक तानाशाह की फ़ौज ने क्या क्या किया औरतों के साथ, कैसी कैसी हबस पूरी की, इसके आगे का लिखने से मैं अपने क़लम को रोक रहा हूं. बस कुछ आर्टिकल्स और बुक्स की तरफ़ इशारा कर देता हूं, ताकि उन्हें पढ़कर ह़क़ीक़त जानी जा सके:

'Women in the Gulag in the 1930s' (by E Mason);
'The Voices of a Few: Women in the Gulag' (by J. Maria-Xavier);
'Victims of the Soviet Penal System in the Pre-war Years' (by JA Getty);
'Journey into the Whirlwind' (by Eugenia Ginzburg);
'Memoirs of a Gulag Actress' (by Tamara Petkevich);
'Sex, Pregnancy, and Power in the Late Stalinist Gulag' (by Wilson T. Bell)

मगर आज कोई भी मुल्ह़िद, अपने इस नास्तिक शैत़ान की सौ साल पुरानी हरकतों पर, न तो गुफ़्तगू करता दिखेगा और न ही डिबेट. आख़िरकार चर्चा तो इसपर भी होनी चाहिए, मगर किसी मुल्ह़िद में जुर्अत नहीं. वर्ना पूरा का पूरा इल्ह़ादी मिज़ाज लोगों के सामने आ जाएगा.

[2] तीन साल पहले 2022 ई. में एक किताब मंज़रे ‌आम पर आई: 'Three Sexual Revolutions: Catholic, Protestant, Atheist (the sociological & historical perspective)', जिसे अमेरिका के एक मश्हूर समाजशास्त्री: 'प्रो. डेविड आर कार्लिन' ने लिखा. इसमें इन्होंने तफ़्स़ील से बयान किया है कि अमेरिका को 1960 ई. से भी ज़्यादा बदतर बनाने वाले तीन ग्रुप्स में से एक ग्रुप इन मुल्ह़िदीन का है, जो जिस्मानी तअ़ल्लुक़ात को बिना किसी शादी के जायज़ करार देते हैं, और मज़हबी आदाब का बिल्कुल इंकार करते हैं; यही वजह थी कि दो दशक पहले अमेरिका में 'Gallup Institute Poll' में, 53% अ़वाम ने 'बिना शादी के जिस्मानी तअ़ल्लुक़ात' बनाने की ताईद में वोट डाला. फिर उसके बाद आज ये पर्सेंट काफ़ी बढ़ चुकी है, जिसने हज़ारों घरों और ख़ानदानों को बर्बाद कर दिया है. ये सब कुछ 'इल्ह़ाद की छत्रछाया' में हुआ है, जो कि 'absence of religion as a moral & behavioral guide' को अपना पहला मक़्स़द बना रहा है.

[3] ह़रामकारी (fornication) की दुनिया में, हम इल्ह़ादी दुनिया से, अमेरिका के: 'हैरी हे (d. 2002 ई.)' नाम के एक ऐसे 'गे ऐक्टिविस्ट' को आपके सामने पेश करते हैं, जिसने शराफ़त के मैदान में बड़े-बड़े कारनामे अंजाम दिए. इसने LGBTQ को प्रमोट करने के लिए अपनी ज़िंदगी ख़र्च कर दी, और 1950 ई. में कुछ लोगों के साथ मिलकर, 'Mattachine Society' की बुनियाद रखी. इसीलिए इसे 'the founder of the modern gay movement', और 'the father of gay liberation' के लक़ब से याद किया जाता है;

इस जैसे नास्तिक ऐक्टिविस्ट की मेहनत का ये असर हुआ कि वेस्टर्न दुनिया ने बड़े बड़े तजुर्बे किए. जिनमें दो बड़े तजुर्बे, डेनमार्क और नीदरलैंड में किए. जहां इनकी भारी तादाद होने के साथ, हर शराफ़त की पर्सेंटेज बढ़ती हुई नज़र आ रही है. 'Child-targeted pornography', और 'illegitimate births' में इनका कोई मुक़ाबला नहीं कर पा रहा है.

इल्ह़ादी दुनिया ऐसे कारनामों से लथपथ है. जिसने अपने दरमियान से, आज़ादी के नाम पर, तमाम 'Religious Morality' को ख़त्म कर दिया. जिसका नतीजा ये हुआ कि गन्दा से गन्दा जुर्म भी, अब जुर्म नहीं कहलाता.

2.2.3 ख़त्म हुआ

2.3 तह़क़ीक़ी जवाब

इस सेक्शन में हम इस्लामी क्लासिकल लिटरेचर के हवाले देकर सारा मामला समझायेंगे, ताकि ये बात क्लियर हो जाए कि ऐसी सारी बकवासों का जवाब, इस्लामी विद्वानों के ज़रिए बहुत पहले ही दिया जा चुका है:

2.3.1 सीरत और इस्लामी तारीख़ की किताबें इस वाक़िआ के बारे में क्या कहती हैं?

[1] सीरत के बहुत अ़ज़ीम माहिर, इमाम मुह़म्मद इब्ने इस्ह़ाक़ (d. 151 हि.) लिखते हैं:

"ولما افتتح رسول الله (ﷺ) القموص حصن بني أبي الحقيق، أتي رسول الله (ﷺ) بصفية بنت حي بن أخطب و بأخرى معها، فمرّ بهما على قتلى من قتلى يهود، فلما رأتهم التي مع صفية صاحت، و صكت وجهها و حثت التراب على رأسها، فلما رآها رسول الله (ﷺ) قال: 'أعزبوا عني هذه الشيطانة.' و أمر بصفية فحيزت خلفه، و ألقى عليها رداءه، فعرف المسلمون أن رسول الله (ﷺ) قد اصطفاها لنفسه، فقال رسول الله (ﷺ) لبلال، فيما بلغني، حين رأى بتلك اليهودية ما رأى: 'أ نزعت منك الرحمة، يا بلال! حين تمرّ بامرأتين على قتلى رجالهما؟' و كانت صفية قد رأت فى المنام و هى عروس بكنانة بن الربيع بن أبي الحقيق، أن قمرا وقع فى حجرها، فعرضت رؤياها على زوجها، فقال: 'ما هذا إلا أنك تمنين ملك الحجاز محمدًا.' فلطم وجهها لطمة، خضر عينها منها. فأتي بها رسول الله (ﷺ) و بها أثر منه، فسألها ما هو. فأخبرته هذا الخبر"،

"और जब आक़ा (ﷺ) ने बनू अबिल् हुक़ैक़ का क़मूस़ क़िला फ़त्ह़ किया, तो आक़ा (ﷺ) के पास सय्यिदह स़फ़िय्यह और एक दूसरी औरत को (ह़ज़रत बिलाल) लेकर आए. तो वो उन्हें यहूदियों के मरे हुए लोगों के पास से गुज़ार कर लाए. तो जो औरत सय्यिदह स़फ़िय्यह के साथ थी उसने जब इन मुर्दों को देखा तो चीख़ी, अपना चेहरा पीटा, और अपने सर पर मिट्टी डालने लगी. जब आक़ा (ﷺ) ने उसे देखा तो फ़रमाया: 'इस शैत़ाना को मेरे सामने से ले जाओ', और सय्यिदह स़फ़िय्यह को अपने पीछे किया और उनपर अपनी चादर डाल दी. तो मुसलमानों ने समझ लिया कि आक़ा (ﷺ) ने सय्यिदह स़फ़िय्यह को अपने लिए चुन लिया है. फिर आक़ा (ﷺ) ने उस यहूदी औरत की हरकत देखकर, ह़ज़रत बिलाल से

कहा: 'ऐ बिलाल! क्या तुम्हारे अंदर से रह़मत निकल गयी थी, जब तुम दोनों दोनों औरतों को उनके मुर्दों के पास से गुज़ार रहे थे!?' और जब सय्यिदह स़फ़िय्यह, किनानह इब्ने रबीअ़ के निकाह़ में थीं, तब उन्होंने ख़्वाब में देखा था कि एक चांद उनकी गोद में आकर गिरा है. जब उन्होंने ये ख़्वाब अपने शौहर किनानह इब्ने रबीअ़ को बताया तो उसने (इसकी तअ़बीर में) कहा: 'तू यक़ीनन हिजाज़ के बादशाह मुह़म्मद की तमन्ना कर रही है.' फिर उसने सय्यिदह स़फ़िय्यह के गाल पर चांटा मारा जिससे उनकी आँख में निशान आ गया. जब उन्हें आक़ा (ﷺ) के पास लाया गया तो इसका असर मौजूद था. तो आक़ा (ﷺ) के पूछने पर ये मामला उन्होंने बताया."

[सीरते इब्ने इस्ह़ाक़, पेज नं. 284-285/477-478, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 2004 ई./1424 हि.]

[2] इमाम वाक़िदी (d. 207 हि.) ने भी यही बात बहुत तफ़्स़ील से बयान की है.

[किताबुल्-मग़ाज़ी, जिल्द नं. 2, पेज नं. 673-675, पब्लिकेशन: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी (लंदन), 1966 ई.]

[3] इमाम इब्ने हिशाम (d. 213 हि.) ने भी, इब्ने इस्ह़ाक़ के हवाले से यही तफ़्स़ील बयान की.

[सीरते इब्ने हिशाम, जिल्द नं. 2, पेज नं. 336, पब्लिकेशन: मत़्बअ़ा मुस़्त़फ़ा बाबी ह़लबी (मिस्र), दूसरा एडीशन, 1375 हि./1955 ई.]

[4] इमाम अबुल् क़ासिम सुहैली (d. 581 हि.) ने भी इसकी शरह़ में यही बयान किया है.

[अर्-रौदुल् उनुफ़ वल्-मशरउ़र् रिवा फ़ी तफ़्सीरि मशतमल अ़लैहि ह़दीसुस् सीरति वह्-तवा, जिल्द नं. 7, पेज नं. 104-106, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत), पहला एडीशन, 1421 हि./2000 ई.]

[5] इमाम इब्ने जरीर त़बरी (d. 310 हि.) ने भी यही बात तफ़्स़ील से बयान की.

[तारीख़ुर्-रुसुल वल्-मुलूक (तारीख़े त़बरी), जिल्द नं. 3, पेज नं. 14, पब्लिकेशन: दारुल् मआ़रिफ़ (मिस्र), दूसरा एडीशन, 1387 हि./1967 ई.]

[6] इमाम इब्ने असीर (d. 630 हि.) भी यही बात लिखते हैं.

[अल्-कामिल फ़ित्-तारीख़ (तारीख़े इब्ने असीर), जिल्द नं. 2, पेज नं. 99-100, पब्लिकेशन: दारुल् किताबिल् अ़रबिय्यि (बेरूत), पहला एडीशन, 1417 हि./1997 ई.]

[7] इमाम इब्ने सय्यिदिन् नास (d. 734 हि.) लिखते हैं:

"ثم القموص حصن بني أبي الحقيق، وأصاب رسول الله صلى الله عليه وسلم منهم سبايا، منهن: صفية بنت حيي بن أخطب —وكانت عند كنانة بن الربيع بن أبي الحقيق— وبنتى عم لها، فاصطفى رسول الله صلى الله عليه وسلم صفية لنفسه، وجعلها عند أم سليم حتى اعتدت وأسلمت، ثم أعتقها وتزوجها"،

"....फिर क़मूस़ (को फ़त्ह़ किया) जो कि बनू अबिल् हु़क़ैक़ का क़िला था, और आक़ा (ﷺ) को उनमें से बहुत सी बांदियां हासिल हुईं. उनमें हु़य्य इब्ने अख़्त़ब की बेटी सय्यिदह स़फ़िय्यह —जो पहले किनानह इब्ने रबीअ़ इब्ने अबिल् हु़क़ैक़ के निकाह़ में थीं— और उनकी दो चचेरी बहनें भी हासिल हुईं. तो आक़ा (ﷺ) ने सय्यिदह स़फ़िय्यह को अपने लिए चुन लिया, और उन्हें उम्मे सुलैम के पास रख दिया, यहां तक कि उन्होंने इ़द्दत गुज़ारी, और इस्लाम क़ुबूल किया. फिर आक़ा (ﷺ) ने उन्हें आज़ाद किया, और उनसे निकाह़ कर लिया...."

फिर कुछ लाइन बाद लिखते हैं:

"---و كان دحية بن خليفة الكلبي قد سأل رسول الله (ﷺ) صفية، فلما اصطفاها لنفسه أعطاه ابنتي عمها. و قيل: كان رسول (ﷺ) وهبها له، ثم ابتاعها منه بسبعة أرؤس---"،

"....ह़ज़रत दिह़्या कल्बी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु), आक़ा (ﷺ) से सय्यिदह स़फ़िय्यह को मांग चुके थे. लेकिन जब आक़ा (ﷺ) ने उन्हें अपने लिए चुन लिया, तो बदले में ह़ज़रत दिह़्या कल्बी को सय्यिदह स़फ़िय्यह की दो चचेरी बहनें दे दीं. और ये भी कहा गया है कि आक़ा (ﷺ) ने उन्हें सय्यिदह स़फ़िय्यह गिफ़्ट कर दी थीं, फिर सात ग़ुलामों के बदले में बाद में उनसे उन्हें ख़री़द लिया...."
[उ़यूनुल् असर फ़ी फ़ुनूनिल् मग़ाज़ी वश्-शमाइल वस्-सियर, जिल्द नं. 2, पेज नं. 167, पब्लिकेशन: इक़्लीदुल् मअ़्रिफ़ह (रियाद), पहला एडीशन, 1446 हि./2024 ई.]

[8] इमाम इब्ने कसीर (d. 774 हि.) भी यही बात लिखते हैं.
[अल्-बिदायह वन्-निहायह (तारीख़े इब्ने कसीर), जिल्द नं. 4, पेज नं. 197, पब्लिकेशन: मत़्बअ़तुस् सआ़दह (क़ाहिरा), पहला एडीशन, 1348 हि.]

[9] इमाम मक़रीज़ी (d. 845 हि.) ने भी इसी तरह की तफ़्स़ील बयान की है.
[इम्ताउ़ल् अस्माअ़ बिमा लिन्-नबिय्यि मिनल् अह़्वाल वल् अम्वाल वल् ह़फ़दति वल् मताअ़, जिल्द नं. 1, पेज नं. 316, व जिल्द नं. 6, पेज नं. 88, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 1420 हि./1999 ई.]

[10] इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी (d. 852 हि.) ने भी यही बयान किया.
[अल्-इस़ाबह फ़ी तम्यीज़िस़् स़ह़ाबा, जिल्द नं. 8, पेज नं. 210, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 1415 हि.]

[11] इमाम स़ालिह़ी शामी (d. 942 ई.) ने भी इसी तरह की बहुत सारी रिवायात ज़िक्र की हैं. एक जगह लिखते हैं कि:

"--- لما نزل رسول الله -صلى الله عليه وسلم- خيبر وصفية عروس، فرأت في المنام أن الشّمس وقعت على صدرها، فقصّتها على زوجها، و في رواية: على أمّها، فقال: والله ما تمنّين إلا هذا الملك الذي نزل، فافتتحها رسول الله -صلى الله عليه وسلم- فضرب عنق زوجها....ولا مخالفة بينها وبين الرّواية التي قبلها باعتبار التّعدّد، فقصّت ذلك على أبيها أوّلا، ثم على زوجها ثانيا، ولهذا اختلفت العبارة في التعبير---"،

"....जब आक़ा (ﷺ) ख़ैबर तशरीफ़ लाए और सय्यिदह स़फ़िय्यह किसी दूसरे के निकाह़ में थीं, तो उन्होंने ख़्वाब में देखा कि सूरज उनके सीने पर आकर गिरा है. तो उन्होंने ये ख़्वाब अपने शौहर को बताया. एक रिवायत में है कि मां को बताया. तो उसने जवाब दिया कि तू यक़ीनन इस बादशाह की तमन्ना कर रही है जो आया है. फिर आक़ा (ﷺ) ने ख़ैबर फ़त्ह़ कर लिया, और उनके शौहर का सर क़लम कर दिया....इस रिवायत और पहले वाली रिवायतों में कोई टकराव नहीं है, एक से ज़्यादा बार ये मामला होने के सबब. पहले उन्होंने अपना ख़्वाब अपने बाप को बताया, फिर शौहर को. इसीलिए कहने में अल्फ़ाज़ बदल गए...."

[सुबुलुल् हुदा वर्-रशाद फ़ी सीरति ख़ैरिल् इ़बाद, जिल्द नं. 11, पेज नं. 212-215, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 1414 हि./1993 ई.]

[12] इमाम दियार बक्री (d. 966 हि.) ने भी इस तफ़्स़ील को लिखा है. फिर कहते हैं:

"---ثم خيرها بين أن يعتقها فترجع الى من بقى من أهلها، أو تسلم فيتخذها لنفسه. فقالت: أختار الله ورسوله. فلما كان عند رواحه، أحقب بعيره، ثم خرجت معه تمشى حتى ثنى لها ركبته، فوضعت ركبتها على فخذه، فركبت، ثم ركب النبىّ صلى الله عليه وسلم فألقى عليها كساء، ثم سار حتى اذا كانا على ستة أميال من خيبر مال يريد أن يعرس بها، فأبت صفية فوجد النبىّ صلى الله عليه وسلم عليها فى نفسه، ولما كان بالصهباء مال الى دومة هناك، فطاوعته، فقال: ما حملك على إبائك حين أردت المنزل الاوّل؟ قالت: يا رسول الله! خشيت عليك قرب يهود. فأعرس رسول الله صلى الله عليه وسلم بالصهباء---"،

"....फिर आक़ा (ﷺ) ने सय्यिदह स़फ़िय्यह को इख़्तियार दिया कि मैं तुम्हें आज़ाद कर दूं, तो चाहे अपने बचे हुए घर वालों के पास लौट जाओ, या फिर ईमान लाकर मेरे निकाह़ में आ जाओ. तो सय्यिदह स़फ़िय्यह ने जवाब दिया: 'मैंने अल्लाह और उसके रसूल को चुना.' फिर चलने के वक़्त ऊंट को लगाम कसी. फिर सय्यिदह स़फ़िय्यह भी आक़ा (ﷺ) के साथ चलने लगीं. तो आक़ा (ﷺ) ने उनके लिए

अपना घुटना उठाया, उसपर चढ़कर वो ऊंट पर सवार हो गयीं. फिर आक़ा (ﷺ) भी सवार हुए, और उन्हें चादर उड़ा दी. फिर जब ख़ैबर से 6 मील की दूरी पर पहुंचे तो आक़ा (ﷺ) ने निकाह़ की रस्म अदा करना चाही, तो सय्यिदह स़फ़िय्यह ने मना कर दिया. तो आक़ा (ﷺ) को अंदर से बुरा लगा. फिर जब स़ह्बा नाम की जगह पहुंचे तो निकाह़ के लिए तैयार हो गयीं. तो आक़ा (ﷺ) ने पूछा कि पहले तुमने मना क्यूँ किया? तो सय्यिदह स़फ़िय्यह ने जवाब दिया: 'मुझे ख़ौफ़ था कि यहूदी कहीं आपके आसपास न हों.' फिर आक़ा (ﷺ) ने स़ह्बा में उनसे रस्मे अ़रूसी अदा की....."

[तारीख़ुल् ख़मीस फ़ी अह़्वालि अन्फ़सिन् नफ़ीस, जिल्द नं. 2, पेज नं. 56-57, पब्लिकेशन: मत़्बअ़ा वह्बिय्यह (मिस्र), 1283 हि.]

[13] इमाम नूरुद्-दीन ह़लबी (d. 1044 हि.) ने भी यही सब बातें लिखी हैं.

[इंसानुल् उ़यून फ़ी सीरतिल् अमीनिल् मअ्मून (सीरते ह़लबिय्यह), जिल्द नं. 3, पेज नं. 63-65, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), दूसरा एडीशन, 1427 हि.]

[14] इमाम सय्यिद अह़मद ज़ैनी दह़लान (d. 1304 हि.) ने भी इसी बात को बयान किया:

"---ثم جمع السبي، فجاء دحية بن خليفة الكلبي رضي الله عنه، فقال: يا رسول الله! أعطني جارية. فقال (ﷺ): اذهب فخذ جارية. فأخذ صفية بنت حيي، و كانت امرأة حسناء، فتنافس الناس فيها. فجاء رجل إلى النبي (ﷺ)، قال: خذ جارية من السبي غيرها. فأخذ أخت كنانة بن الربيع بن أبي الحقيق، زوج صفية. و كانت صفية بنت حيي من سبط هارون أخي موسى عليهما السلام، فاصطفاها (ﷺ) لنفسه، ثم أعتقها، و تزوج بها.....ولد صفية مائة نبي، و مائة ملك، ثم صيرها إلى نبيه (ﷺ)، و ليس ممن توهب لدحية لكثرة من فى الصحابة مثل دحية و فوقه، و قلة من كان فى السبي مثل صفية فى نفاستها نسبا و جمالا، فلو خصه بها لأمكن تغير خاطر بعضهم، فكان من المصلحة العامة ارتجاعها منه و اختصاصه (ﷺ) بها. فإن فى ذلك رضا الجميع. و كانت صفية قبل ذلك رأت أن القمر وقع فى حجرها، فذكرت ذلك لأبيها، فلطم وجهها و قال: إنك لتمدين عنقك إلى أن تكوني عند ملك العرب. فلم يزل الأثر فى وجهها حتى أتي (ﷺ) بها، فسألها عنه فأخبرته---"،

"....फिर बांदियां इकट्ठी की गयीं. ह़ज़रत दिह़्या कल्बी आए और आक़ा (ﷺ) से एक बांदी मांगी. तो आक़ा (ﷺ) ने कहा कि जाओ और कोई सी भी बांदी ले लो. तो उन्होंने स़फ़िय्यह बिन्ते ह़ुय्य को चुन लिया, जो कि बहुत ख़ूबसूरत थीं. लोगों में उन्हें हासिल करने के बारे में बातें होने लगीं. तो एक शख़्स

आक़ा (ﷺ) के पास आए, (उनके कहने पर) आक़ा (ﷺ) ने उनसे कहा कि स़फ़िय्यह के अ़लावा किसी दूसरी बांदी को ले लो. तो उन्होंने सय्यिदह स़फ़िय्यह के शौहर किनानह इब्ने रबीअ़ की बहन को चुन लिया. और सय्यिदह स़फ़िय्यह, सय्यिदुना मूसा के भाई सय्यिदुना हारून (अ़लैहिमस्सलाम) की औलाद में थीं. तो आक़ा (ﷺ) ने उन्हें अपने लिए रखा. फिर उन्हें आज़ाद करके, उनसे निकाह़ कर लिया.....सय्यिदह स़फ़िय्यह के बाप-दादाओं में सौ नबी और सौ बादशाह हुए. फिर वो आक़ा (ﷺ) की ज़िंदगी में भी आ गयीं. तो वो उस तरह की नहीं थीं, जिसे ह़ज़रत दिह़्या को गिफ़्ट किया जाए. क्यूंकि स़ह़ाबा में ह़ज़रत दिह़्या जैसे और उनसे ऊंचे बहुत लोग थे. जबकि बांदियों में, नसब और ह़ुस्न के लिहाज़ से सय्यिदह स़फ़िय्यह जैसी बांदी की कमी थी. अगर आक़ा (ﷺ) उन्हें, ह़ज़रत दिह़्या के पास रखते तो मुम्किन था कि उनमें से किसी स़ह़ाबी के दिल में कुछ आता. इसलिए सबकी भलाई इसी में थी कि उन्हें ह़ज़रत दिह़्या से वापस ले कर, आक़ा (ﷺ) के लिए रखा जाए, क्यूंकि इसी में सब राज़ी होंगे;
और पहले सय्यिदह स़फ़िय्यह ने ख़्वाब में देखा था कि एक चांद उनकी गोद में आ गिरा है. उन्होंने अपने बाप से ये ख़्वाब ज़िक्र किया, तो उसने आपके चेहरे पर चांटा मारा, और बोला कि: 'तू अ़रब के बादशाह के हिस्से में जाने की तमन्ना रखती है.' तो (चांटे का) असर उनके चेहरे पर तब भी था, जब आक़ा (ﷺ) के पास उन्हें लाया गया. आक़ा (ﷺ) ने उनसे इसके बारे में पूछा, तो उन्होंने ये बताया....”

[अस्-सीरतुन् नबविय्यह, जिल्द नं. 2, पेज नं. 217-218, पब्लिकेशन: दारुल् क़लमिल् अ़रबिय्यि (ह़लब), पहला एडीशन, 1417 हि./1996 ई.]

[15] जस्टिस करम शाह अज़्हरी (d. 1998 ई.) ने भी इन तमाम किताबों के हवाले से यही सारी तफ़्सील बयान की.

[ज़ियाउन् नबी, जिल्द नं. 4, पेज नं. 241-246, पब्लिकेशन: ज़ियाउल् क़ुरआन पब्लिकेशन्स (लाहौर), दूसरा एडीशन, 1420 हि.]

2.3.1 ख़त्म हुआ

2.3.2 ह़दीस की किताबों में इसके मुतअ़ल्लिक़ क्या कहा गया है?

[1] सबसे पहले 'स़ह़ीह़ बुख़ारी', ह़दीस नं. 371 देख लीजिए:

"...فجمع السبي، فجاء دحية فقال: 'يا نبي الله! أعطني جارية من السبي.' قال: 'اذهب، فخذ جارية.' فأخذ صفية بنت حيي، فجاء رجل إلى النبي (ﷺ)، فقال: 'يا نبي الله! أعطيت دحية صفية بنت حيي، سيدة قريظة والنضير!؟ لا تصلح إلا لك.' قال: 'ادعوه بها.' فجاء بها، فلما نظر إليها النبي (ﷺ)، قال: 'خذ جارية من السبي غيرها.' قال فأعتقها النبي ﷺ وتزوجها. فقال له ثابت: 'يا أبا حمزة، ما أصدقها؟' قال: 'نفسها، أعتقها وتزوجها، حتى إذا كان بالطريق، جهزتها له أم سليم، فأهدتها له من الليل، فأصبح النبي (ﷺ) عروسا..."،

"....फिर बांदियां इकट्ठी की गयीं. ह़ज़रत दिह़्या आए और कहा: 'ऐ अल्लाह के नबी! मुझे एक बांदी अ़ता फ़रमाऐं!' इर्शाद हुआ: 'जाओ और कोई सी भी बांदी ले लो.' तो उन्होंने स़फ़िय्यह बिन्ते ह़ुय्य को चुन लिया. फिर एक शख़्स आक़ा (ﷺ) के पास आए, और आप से अ़र्ज़ की: 'ऐ अल्लाह के नबी! आपने दिह़्या को, क़ुरैज़ा और नज़ीर की मलका स़फ़िय्यह अ़ता कर दी!? वो तो स़िर्फ़ आपके लायक़ है.' आक़ा (ﷺ) ने ह़ज़रत दिह़्या और सय्यिदह स़फ़िय्यह को बुलवा लिया. जब सय्यिदह स़फ़िय्यह को देखा तो दिह़्या कल्बी से कहा कि इसके अ़लावा कोई दूसरी बांदी चुन लो. फिर आक़ा (ﷺ) ने उन्हें आज़ाद किया, और उनसे निकाह़ कर लिया. ह़ज़रत साबित ने ह़ज़रत अनस से पूछा कि आक़ा (ﷺ) ने उन्हें क्या महर दिया? जवाब दिया कि: 'उनको ही ख़ुद के सुपुर्द कर दिया, उन्हें आज़ाद किया और निकाह़ कर लिया. यहां तक कि जब रास्ते में थीं तब उम्मे सुलैम ने उन्हें तैयार किया, और रात में आक़ा (ﷺ) के पास भेज दिया. आक़ा (ﷺ) दूल्हा बने'....."

[स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब नं. 8 (किताबुस़् स़लात), बाब नं. 12 (मा युज़्करु फ़िल् फ़ख़िज़), ह़दीस नं. 371, पेज नं. 271, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1444 हि./2023 ई.]

[2] अब 'स़ह़ीह़ बुख़ारी', ह़दीस नं. 2893 भी पढ़ लीजिए:

"...ثم قدمنا خيبر، فلما فتح الله عليه الحصن ذكر له جمال صفية بنت حيي بن أخطب، وقد قتل زوجها و كانت عروسا، فاصطفاها رسول الله ﷺ لنفسه، فخرج بها حتى بلغنا سد الصهباء، حلّت، فبنى بها..."،

"....फिर हम ख़ैबर आए. जब अल्लाह (ﷻ) ने आक़ा (ﷺ) को क़िला की फ़त्ह़ अ़ता फ़रमाई, तब आपके सामने स़फ़िय्यह बिन्ते ह़ुय्य इब्ने अख़्तब की ख़ूबसूरती का ज़िक्र किया गया, और उनका शौहर मारा जा चुका था. तो आक़ा (ﷺ) ने उन्हें अपने किए चुन लिया. फिर उन्हें लेकर ख़ैबर से निकले यहां तक कि स़ह्बा नाम की जगह पहुंच गए. वहाँ सय्यिदह स़फ़िय्यह का इस्तिबराअ (cleansing) पूरा हो गया . तभी आक़ा (ﷺ) ने उनके साथ रस्मे अ़रूसी अदा की...."

[स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब नं. 56 (किताबुल् जिहाद वस् सियर), बाब नं. 74 (मन गज़ा बि स़बिय्यिन्....), ह़दीस नं. 2893, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1444 हि./2023 ई.]

[3] सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) से आक़ा (ﷺ) के निकाह़ का ज़िक्र 'स़ह़ीह़ बुख़ारी' में इस इस जगह पर आया है:

ह़दीस नं. 371, 947, 2228, 2235, 2893, 4200, 4201, 4211, 4212, 4213, 5085, 5086, 5159, 5169, 5387, 5425, 6363. इसके अ़लावा भी कई जगह इशारतन् ज़िक्र है. ह़दीस नं. 2235, 2893, 4211, और 5425, 6363 में ये बातें मौजूद हैं:

"....यहां तक कि हम स़ह्बा के मक़ाम पर पहुंचे, और (सय्यिदह स़फ़िय्यह) का इस्तिबराअ पूरा हो गया, तब आक़ा (ﷺ) ने उनके साथ रस्मे अ़रूसी अदा की...."

फिर ह़दीस नं. 4212, 4213 में, और 5085, 5159 में इस बात का ज़िक्र है कि आक़ा (ﷺ) ख़ैबर से लौटते हुए रास्ते में तीन दिन ठहरे, उसी दौरान निकाह़ की रस्म और वलीमा अदा किया गया.

[4] 'स़ह़ीह़ मुस्लिम', ह़दीस नं. 1365 को अच्छे से देख लीजिए:

"---وقعت في سهم دحية جارية جميلة، فاشتراها رسول الله (ﷺ) بسبعة أرؤس. ثم دفعها إلى أم سليم، تصنعها له و تهيئها. قال: و أحسبه قال: و تعتدّ في بيتها - و هي صفية بنت حيي---"،

"....ह़ज़रत दिह़्या कल्बी के हिस्से में एक ख़ूबसूरत बांदी आई. आक़ा (ﷺ) ने सात ग़ुलामों के बदले में उसे खऱीद लिया. फिर उसे उम्मे सुलैम के हवाले कर दिया ताकि उसका बनाव-सिंगार करें. रावी कहते हैं कि मेरा गुमान है कि उन्होंने कहा: 'ताकि वो उम्मे सुलैम के घर में इ़द्दत गुज़ारे.' और वो बांदी सय्यिदह स़फ़िय्यह थीं...."

[स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताब नं. 16 (किताबुन् निकाह़), बाब नं. 14 (बाबु फ़द़ीलति इअ़्ताक़िही अमतहू....), ह़दीस नं. 1365, पेज नं. 582, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), दूसरा एडीशन, 1445 हि./2023 ई.]

'स़ह़ीह़ मुस्लिम', ह़दीस नं. 1365 में इसका तफ़्स़ीली बयान आया है. जिसमें इस बात की स़राह़त मौजूद है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सय्यिदुना दिह़्या कल्बी से, सय्यिदह स़फ़िय्यह को सात ग़ुलामों के बदले ख़रीदा था. फिर इसके बाद उन्हें 'उम्मे सुलैम' के घर रख दिया गया, ताकि वहाँ इ़द्दत गुज़ार कर, निकाह़ के लिए तैयार की जाएं. जैसा कि इसी रिवायत में स़ाफ़ त़ौर पर लिखा है.

[5] इमाम अबू दाऊद (d. 275 हि.) ने अपनी 'सुनन' में ह़दीस नं. 2993 से लेकर 2998 तक इस वाक़िआ की पूरी तफ़्स़ील बयान की गयी है.

[अबू दाऊद, किताब नं. 14 (किताबुल् ख़राज वल् फ़ैअ वल् इमारह), बाब नं. 21 (मा जाअ फ़ी सह्-मिस़्स़फ़िय्यि), ह़दीस नं. 2993-2998, पेज नं. 657-658, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), पहला एडीशन, 1444 हि./2023 ई.]

[6] इमाम बैहक़ी (d. 458 हि.) ने भी 'अस्-सुननुल् कुबरा' में ह़दीस नं. 12753 से 12756 तक इस स्टोरी की पूरी तफ़्स़ील ज़िक्र की.

[अस्-सुननुल् कुबरा, किताबु क़िस्मिल् फ़ैअ वल् ग़नीमह, बाबु सह्-मिस़्स़फ़िय्यि, ह़दीस नं. 12753-12756, जिल्द नं. 6, पेज नं. 496, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1424 हि./2003 ई.]

[7] 'मुस्नदे अह़मद' में, ह़दीस नं. 11992, 12616, 12940, 13023, 13506, 13575, 13786 पर यही तफ़्स़ील मौजूद है.

[मुस्नदे अह़मद, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), पहला एडीशन, 1421 हि./2001 ई.]

[8] इमाम त़बरानी (d. 360 हि.) ने भी 'अल्-मुअ़्जमुल् कबीर' में, ह़दीस नं. 173 से 182 तक ये वाक़िआ ज़िक्र किया.

[अल्-मुअ़्जमुल् कबीर, मुस्नदुन् निसाअ, अज़्वाजु रसूलिल्लाह (ﷺ), जिल्द नं. 24, पेज नं. 66-69, पब्लिकेशन: मकतबा इब्ने तैमिय्यह (क़ाहिरा), दूसरा एडीशन]

[9] इमाम इब्ने सअ़्द (d. 230 हि.) ने 'अत्-तबक़ातुल् कुबरा' में ऊपर गुज़री हुई सारी डिटेल बयान की. साथ ही बड़ी अहम अहम बातें ज़िक्र कीं, जिनमें से कुछ पेश कर देता हूं:

• आक़ा (ﷺ) ने उन्हें इख़्तियार दिया, चाहें वापस अपने यहूदी क़बीले में लौट जाएं. या इस्लाम क़ुबूल करके, आक़ा (ﷺ) के साथ रहें. तो उन्होंने इस्लाम को चुना;

• एक ह़ैज़ के ज़रिए इस्तिबराअ करके इ़द्दत गुज़ारी;

• उन्होंने आक़ा (ﷺ) के चाहने पर पहली जगह रस्मे अ़रूसी अदा नहीं की, बल्कि दूसरी जगह पर अपनी मर्ज़ी से अदा की;

• कहीं यहूदी आक़ा (ﷺ) के आसपास न हों, इसलिए पहली जगह मना कर दिया;

• उन्हें उम्मे सुलैम के यहां इ़द्दत गुज़ारने के लिए रखा गया.
[अत्-त़बक़ातुल् कुबरा, जिल्द नं. 8, पेज नं. 95-98, तर्जमा नं. 4135, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 1410 हि./1990 ई.]

[10] 'मुस़न्नफ़ इब्ने अबी शैबह' में, ह़दीस नं. 36876 में कहा गया कि:

"---فاشتراها رسول الله صلى الله عليه وسلم بسبعة أرؤس، فبعث بها إلى أم سليم تصلحها، قال: ولا أعلم إلا أنه قال: وتعتد عندها---"،

"....तो आक़ा (ﷺ) ने सय्यिदह स़फ़िय्यह को सात ग़ुलामों के बदले में ख़रीद लिया. फिर उन्हें, उम्मे सुलैम के पास भेज दिया, ताकि उन्हें सँवार दें....और उनके पास अपनी इ़द्दत गुज़ारें...."
[अल्-मुस़न्नफ़, किताबुल् मग़ाज़ी, जिल्द नं. 7, पेज नं. 393, पब्लिकेशन: दारुत् ताज (लेबनान), पहला एडीशन, 1409 हि./1989 ई.]

2.3.2 ख़त्म हुआ

2.3.3 ख़ुद सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) ने क्या कहा?

कुछ बेवक़ूफ़ लोगों ने ये बकवास फैला रखी है कि सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) इस निकाह़ से कभी ख़ुश नहीं रहीं. तो आइए ख़ुद सय्यिदह स़फ़िय्यह की ज़ुबान से, इस सफ़ेद झूठ का पर्दाफाश कर देते हैं:

[1] इमाम त़बरानी (d. 360 हि.) रिवायत करते हैं कि सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) कहती हैं:

"---وما كان أبغض إليّ من رسول الله، قتل أبي وزوجي، فما زال يعتذر إليّ، فقال: 'يا صفية! إن أباك ألب عليّ العرب، وفعل وفعل'، حتى ذهب ذاك من نفسي"،

"....रसूलुल्लाह (ﷺ) को मैं सबसे ज़्यादा नापसंद करती थी, क्यूंकि उन्होंने मेरे बाप और शौहर को क़त्ल किया था. लेकिन आक़ा (ﷺ) मुझ से मअ़ज़िरत (apologize) करते रहे, कहते थे: 'ऐ स़फ़िय्यह! तुम्हारे बाप ने मेरे ख़िलाफ़ अ़रब के लोगों को उभारा, और ये किया वो किया', यहां तक कि मेरे दिल से ये सब शिकवे ख़त्म हो गए."

[अल्-मुअ़्जमुल् कबीर, ह़दीस नं. 177, जिल्द नं. 24, पेज नं. 67, पब्लिकेशन: मकतबा इब्ने तैमिय्यह (क़ाहिरा), दूसरा एडीशन]

[2] इमाम त़बरानी (d. 360 हि.) दूसरी जगह रिवायत करते हैं कि सय्यिदह स़फ़िय्यह ने फ़रमाया:

"ما رأيت أحدا أحسن خلقا من رسول الله صلى الله عليه وسلم، لقد رأيته وقد ركب بي من خيبر على عجز ناقته ليلا، فجعلت أنعس فيضرب رأسي مؤخرة الرحل، فيمسني بيده، ويقول: 'يا هذه، مهلا! يا بنت حيي، مهلا!' حتى إذا جاء الصهباء، قال: 'أما إني أعتذر إليك، يا صفية! مما صنعت بقومك. إنهم قالوا لي كذا، وقالوا لي كذا"،

"मैंने आक़ा (ﷺ) से ज़्यादा अच्छे अख़्लाक़ (behavior) वाला कोई नहीं देखा. जब वो ख़ैबर से रात में अपनी ऊँटनी पर मेरे साथ सवार हुए, तो मैं ऊंघने लगी, और मेरा सर ऊँटनी के कजावे की पिछली लकड़ी में लगने लगा, तो आक़ा (ﷺ) अपने हाथ से मुझे बचाते, और कहते थे: 'थोड़ी दूर और, ऐ हुय्य इब्ने अख़्तब की बेटी, बस थोड़ी दूर और!' यहां तक कि स़ह्बा की जगह आ गयी, तो फ़रमाने लगे: 'ऐ स़फ़िय्यह! मैंने तुम्हारी क़ौम के साथ जो किया, उसके लिए मअ़ज़िरत चाहता हूं. उन लोगों ने मेरे बारे में ये कहा, वो कहा." [अल्-मुअ़्जमुल् औसत़, ह़दीस नं. 6580, जिल्द नं. 6, पेज नं. 344, पब्लिकेशन: दारुल् ह़रमैन (क़ाहिरा), 1415 हि./1995 ई.]

[3] इमाम अबू यअ़्ला (d. 307 हि.) रिवायत करते हैं कि सय्यिदह स़फ़िय्यह ने इर्शाद फ़रमाया:

"انتهيت إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم، وما من الناس أحد أكره إلي منه، فقال: 'إن قومك صنعوا كذا وكذا'، قالت: فما قمت من مقعدي وما من الناس أحد أحب إلي منه"،

"जब मैं आक़ा (ﷺ) के पास पहुंची तो मैं उन्हें सबसे ज़्यादा नापसंद करती थी. तो आक़ा (ﷺ) ने कहा: 'तुम्हारी क़ौम ने ये ये हरकतें कीं.' फिर सय्यिदह स़फ़िय्यह ने कहा कि: 'जब मैं अपनी जगह से उठी तब आक़ा (ﷺ) मेरे लिए सबसे ज़्यादा प्यारे हो गए'."

[मुस्नदे अबी यअ़्ला, ह़दीस नं. 7114, जिल्द नं. 13, पेज नं. 33, पब्लिकेशन: दारुल् मअ़्मून (दमिश्क), पहला एडीशन, 1404 हि./1984 ई.]

[4] इमाम वाक़िदी (d. 207 हि.) लिखते हैं कि सय्यिदह स़फ़िय्यह फ़रमाती हैं:

"---فدعاني، فجئت وأنا مقنعة حيية، فجلست بين يديه فقال: 'إن أقمت على دينك لم أكرهك، وإن اخترت الله ورسوله فهو خير لك'، قالت: 'أختار الله ورسوله والإسلام.' فأعتقني رسول الله صلى الله عليه وسلم وتزوجني---"،

"....फिर आक़ा (ﷺ) ने मुझे बुलाया, तो मैं सर पर दुपट्टा ओढ़कर शर्माती हुई आई, और उनके सामने बैठ गयी. फिर आक़ा (ﷺ) ने कहा: 'अगर तुम अपने ही दीन पर रहती हो, तो मैं तुम्हारे साथ ज़बर्दस्ती नहीं करूंगा. और अगर तुम अल्लाह और रसूल को चुन लेती हो, तो ये तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर रहेगा.' फिर सय्यिदह स़फ़िय्यह ने जवाब दिया कि: 'मैं अल्लाह, रसूल और इस्लाम को चुनती हूं.' फिर आक़ा (ﷺ) ने मुझे आज़ाद किया, और मुझ से निकाह़ कर लिया...."

[किताबुल्-मग़ाज़ी, जिल्द नं. 2, पेज नं. 675, पब्लिकेशन: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी (लंदन), 1966 ई.]

[5] इमाम ह़लबी (d. 1044 हि.) ने भी लिखा है कि सय्यिदह स़फ़िय्यह कहती हैं:

"انتهيت إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم، وما من الناس أحد أكره إلي منه، قتل أبي وزوجي وقومي، فقال صلى الله عليه وسلم: 'يا صفية! أما إني أعتذر إليك مما صنعت بقومك، إنهم قالوا لي كذا وكذا، وقالوا في كذا وكذا'، وفي رواية: 'إن قومك صنعوا كذا وكذا'، وما زال صلى الله عليه وسلم يعتذر إلي حتى ذهب ذلك من نفسي، فما قمت من مقعدي و ما من الناس أحد أحب إلي منه صلى الله عليه وسلم"،

"जब मैं आक़ा (ﷺ) के पास पहुंची तो मैं उन्हें सबसे ज़्यादा नापसंद करती थी, क्यूंकि उन्होंने मेरे बाप, शौहर और क़ौम को क़त्ल किया था. तो आक़ा (ﷺ) ने कहा: 'ऐ स़फ़िय्यह! मैंने तुम्हारी क़ौम के साथ जो किया उसके लिए मअ्ज़िरत है. उन्होंने मेरे बारे में ये ये कहा, उसके बारे में वो वो कहा.' एक रिवायत में है कि: 'तुम्हारी क़ौम ने ये ये हरकतें कीं.' आक़ा (ﷺ) मुझ से मअ्ज़िरत करते रहे यहां तक कि मेरी शिकायत ख़त्म हो गयी. जब मैं अपनी जगह से उठी तब आक़ा (ﷺ) मेरे लिए सबसे ज़्यादा प्यारे हो गए'."

[इंसानुल् उ़यून फ़ी सीरतिल् अमीनिल् मअ्मून (सीरते ह़लबिय्यह), जिल्द नं. 3, पेज नं. 65, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), दूसरा एडीशन, 1427 हि.]

[6] इमाम अबू नुऐ़म अस़्बहानी (d. 430 हि.) ने रिवायत किया कि सय्यिदह स़फ़िय्यह फ़रमाती हैं:

"كنت أحب ولد أبي إليه، وإلى عمي أبي ياسر، لم ألقهما قط مع ولد لهما إلا أخذاني دونه، قالت: فلما قدم رسول الله صلى الله عليه وسلم المدينة، ونزل فناء بني عمرو بن عوف غدا عليه أبي حيي بن أخطب، وعمي أبو ياسر بن أخطب مغلسين، قالت: فلم يرجعا، حتى كان مع غروب الشمس، قالت: فأتيا كالين، كسلانين، ساقطين، يمشيان الهوينا، قالت: فهششت إليهما، كما كنت أصنع، فوالله ما التفت إليّ واحد منهما مع ما بهما من الهم، قالت: فسمعت عمي أبا ياسر وهو يقول لأبي حيي بن أخطب: أهو هو؟ قال: نعم والله، قال: أتعرفه وتثبته؟ قال: نعم، قال: فما في نفسك منه؟ قال: عداوته والله ما بقيت أبدا"،

"मैं अपने बाप, और चाचा अबू यासिर के लिए सबसे प्यारी औलाद थी. जब भी अपने दूसरे बच्चों के साथ मुझे देखते तो पहले मुझे ही पकड़ते. जब आक़ा (ﷺ) मदीना शरीफ़ आए, और बनी अ़म्र इब्ने अ़ौफ़ के यहां ठहरे, तो मेरा बाप हुय्य इब्ने अख़्तब और चाचा अबू यासिर सुबह सवेरे उनके पास गए, और शाम को लौटे. दोनों थके हुए, सुस्त, टूटे हुए, धीरे-धीरे चलते हुए आए. पहले की तरह दोनों को देखकर मैं ख़ुश हुई, मगर अपने ग़म की वजह से दोनों में से किसी ने मेरी तरफ़ ध्यान नहीं दिया. फिर मैंने अपने चाचा को अपने बाप से कहते हुए सुना: 'क्या ये (मुह़म्मद) वही (नबी) हैं (जिनका ज़िक्र हमारी तौरात में आया है)?'
तो बाप ने जवाब दिया: 'हाँ, ख़ुदा की क़सम (ये वही हैं)!'
फिर चाचा ने बाप से कहा: 'क्या तुम उन्हें पहचान रहे हो, और सही साबित कर रहे हो?'
बाप बोला: 'हाँ.'
फिर चाचा ने कहा: 'तो उनके बारे में तुम्हारा क्या फ़ैसला है?'
बाप ने जवाब दिया: 'ख़ुदा की क़सम! आख़िरी साँस तक उनकी दुश्मनी.'"

[दलाइलुन् नुबुव्वह, ह़दीस नं. 37, पेज नं. 77, पब्लिकेशन: दारुन् नफ़ाइस (बेरूत), दूसरा एडीशन, 1406 हि./1986 ई.]

[7] इमाम इब्ने इस्ह़ाक़ (d. 151 हि.), इमाम इब्ने हिशाम (d. 213 हि.), और इमाम ह़लबी (d. 1044 हि.) ने अपनी अपनी सीरत में इसे बयान किया है.

ऊपर गुज़रे हुए सारे हवालों से ये बात सूरज की तरह रौशन हो गयी कि सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) ख़ुद कहती हैं कि मुझे आक़ा (ﷺ) ने चॉइस दी, उनके साथ रहने या वापस जाने की;
ख़ुद कहती हैं कि मैंने आक़ा (ﷺ) को सबसे अच्छा पाया;
ख़ुद कहती हैं कि मेरे बाप वग़ैरह आक़ा (ﷺ) को सच्चा जानने के बाद भी उनके कट्टर दुश्मन रहे;
ख़ुद अपने घर वालों की इस्लाम-दुश्मनी, और आक़ा (ﷺ) के सच्चे होने का एतराफ़ करती हैं;
मगर आज कुछ लोग न जाने कैसे ऐसे शख़्स की वकालत करने में लगे हुए हैं, जिसकी हठधर्मी को ख़ुद उसकी बेटी बयान कर रही है;

अल्लाह (جَلَّ جَلَالُهُ) समझ अ़ता फ़रमाए!

2.3.3 ख़त्म हुआ

2.3.4 ऐसे केस में चार महीने दस दिन वाली इ़द्दत होगी, या सिर्फ़ एक ह़ैज़ के ज़रिए इस्तिबराअ?

इस्लामी क़ानून में ऐसी शादीशुदा बांदी (जिसे ह़ैज़ आता हो) के लिए चार महीने दस दिन की इ़द्दत नहीं होती, बल्कि एक ह़ैज़ के ज़रिए इस्तिबराअ (cleansing of womb by one menstrual period) ज़रूरी होता है. फ़ुक़हा (Islamic Jurists) ने दोनों को अलग अलग बताया है. अगरचे कहीं कहीं इसी 'इस्तिबराअ' को 'इ़द्दत' के लफ़्ज़ से ज़िक्र कर दिया जाता है, क्यूंकि दोनों का मक़्स़द 'इस्तिबराए रह़्म (cleansing of womb)' है. अब इसकी दलीलें देख लीजिए:

[1] इमाम अबू दाऊद (d. 275 हि.) रिवायत करते हैं कि आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"لا توطأ حامل حتى تضع، و لا غير ذات حمل حتى تحيض حيضة"،

"प्रेगनेंट बांदी से तब तक हमबिस्तरी नहीं की जाएगी जब तक कि बच्चे की पैदाइश न हो जाए; और जो प्रेगनेंट न हो, उससे तब तक नहीं की जाएगी जब तक कि एक ह़ैज़ पूरा न हो जाए."
[अबू दाऊद, ह़दीस नं. 2157,2158, पेज नं. 485, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), पहला एडीशन, 1444 हि./2023 ई.]

[2] इमाम अह़मद (d. 241 हि.) रिवायत करते हैं कि आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"لا يقع على حامل حتى تضع، و غير حامل حتى تحيض حيضة"،

"प्रेगनेंट बांदी से तब तक हमबिस्तरी नहीं की जाएगी जब तक कि बच्चे की पैदाइश न हो जाए; और जो प्रेगनेंट न हो, उससे तब तक नहीं की जाएगी जब तक कि एक ह़ैज़ पूरा न हो जाए."
[मुस्नदे अह़मद, ह़दीस नं. 11228, 11596, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), पहला एडीशन, 1421 हि./2001 ई.]

[3] इमाम त़ह़ावी (d. 321 हि.) इस मस्अले को बयान करते हुए लिखते हैं कि:

"---أَنَّهُ لَا عِدَّةَ عَلَيْهِنَّ، وَإِنَّمَا عَلَى مَالِكِيهِنَّ اسْتِبْرَاؤُهُنَّ عَلَى مَا قَدْ رُوِّينَا فِيمَا قَدْ تَقَدَّمَ مِنَّا فِي كِتَابِنَا هَذَا عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي السَّبَايَا: 'لَا تُوطَأُ حَامِلٌ حَتَّى تَضَعَ، وَلَا غَيْرُ حَامِلٍ حَتَّى تَحِيضَ---"،

"....(वो शादीशुदा औरतें जिन्हें बांदी बनाया गया हो, और उनके शौहर उनके साथ क़ैद होकर न आये हों तो) ऐसी ओ़रतों पर कोई इ़द्दत नहीं है. हाँ, उनके मालिकों पर ये ज़रूरी है कि उनका 'इस्तिबराअ (cleansing)' करायें. जिसकी दलील हम अपनी इस किताब में पहले ज़िक्र कर चुके हैं कि आक़ा (ﷺ) ने बांदियों के बारे में इर्शाद फ़रमाया: 'प्रेगनेंट बांदी से तब तक हमबिस्तरी नहीं की जाएगी, जब तक बच्चे की पैदाइश न हो जाए; और जो प्रेगनेंट न हो, उससे तब तक हमबिस्तरी नहीं की जाएगी, जब तक ह़ैज़ पूरा न हो जाए'...."

[शरहु मुश्किलिल् आसार, जिल्द नं. 10, पेज नं. 81, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), पहला एडीशन, 1415 हि./1993 ई.]

[4] इमाम अबू बक्र जस़्स़ास़ राज़ी (d. 370 हि.) ने भी इस बात को बिल्कुल क्लियर किया, लिखते हैं:

"---كُلُّ ذَاتِ زَوْجٍ فَإِتْيَانُهَا زِنًا إلَّا مَا سُبِيَتْ، وَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي السَّبَايَا: 'لَا تُوطَأُ حَامِلٌ حَتَّى تَضَعَ وَلَا حَائِلٌ حَتَّى تُسْتَبْرَأَ بِحَيْضَةٍ---"،

"....हर शादीशुदा औरत से हमबिस्तरी ज़िना है, सिवा उसके जिसे बांदी बनाया गया हो. आक़ा (ﷺ) ने बांदियों के बारे में इर्शाद फ़रमाया: 'प्रेगनेंट बांदी से तब तक हमबिस्तरी नहीं की जाएगी, जब तक बच्चे की पैदाइश न हो जाए; और जो प्रेगनेंट न हो, उससे तब तक हमबिस्तरी नहीं की जाएगी, जब तक एक ह़ैज़ के ज़रिए इस्तिबराअ न हो जाए'...."

फिर अगले पेज पर लिखते हैं:

"---أَبَاحَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عليه وسلّم وطء المسبية بعد الاستبراء لَيْسَ بِعِدَّةٍ---"،

"....आक़ा (ﷺ) ने इस्तिबराअ होने के बाद, जो कि इ़द्दत नहीं, बांदी से हमबिस्तरी को जायज़ करार दिया है...."

[अह़कामुल् क़ुरआन, जिल्द नं. 10, पेज नं. 330-331, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत), 1405 हि.]

[5] इमाम कासानी (d. 587 हि.) पूरी तफ़्स़ील के साथ इस मस्अले को बयान करते हैं:

"فإن كانت ممن تحيض، فاستبراؤها بحيضة واحدة عند عامة العلماء، و عامة الصحابة.....لما روي عن النبي (ﷺ) أنه قال في سبايا أوطاس: 'ألا، لا توطأ الحبالى حتى يضعن، و لا الحيالى حتى يستبرأن بحيضة'"،

"अगर बांदी को ह़ैज़ (menses) आता हो, तो एक ह़ैज़ के ज़रिए इस्तिबराअ होगा, उ़मूमन् उ़लमा और स़ह़ाबा के नज़दीक.....क्यूंकि आक़ा (ﷺ) ने औत़ास में हासिल होने वाली बांदियों के बारे में फ़रमाया: 'प्रेगनेंट बांदी से तब तक हमबिस्तरी नहीं की जाएगी जब तक कि बच्चे की पैदाइश न हो जाए; और जो प्रेगनेंट न हो, उससे तब तक नहीं की जाएगी जब तक कि एक ह़ैज़ के ज़रिए इस्तिबराअ न हो जाए'."

[बदाइउ़स् स़नाइअ़, किताबुल् बुयूअ़, फ़स़्ल फ़ी हुक्मिल् बैअ़, जिल्द नं. 5, पेज नं. 255, पब्लिकेशन: मत़्बअ़ा जमालिय्यह (मिस्र), पहला एडीशन, 1327 हि.]

[6] इस मस्अले को 'फ़तावा आ़लमगीरी' में भी बयान किया गया:

"ولا خلاف في أنه لا يحل وطؤها قبل الاستبراء بحيضة"،

"और इसमें कोई मतभेद नहीं है कि ऐसी बांदी के साथ, एक ह़ैज़ के ज़रिए इस्तिबराअ होने से पहले, हमबिस्तरी जायज़ नहीं."

[फ़तावा आ़लमगीरी, किताबुन् निकाह़, बाब नं. 3, क़िस्म नं. 6, जिल्द नं. 1, पेज नं. 281, पब्लिकेशन: मत़्बअ़ा अमीरिय्यह (बूलाक़), दूसरा एडीशन, 1310 हि.]

जब ये क़ानून आपने समझ लिया, तो अब देखिए सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) के बारे में बिल्कुल स़ाफ़ रिवायत मौजूद है:

[7] इमाम त़बरानी (d. 360 हि.) ने सय्यिदुना अनस इब्ने मालिक से रिवायत की:

"أن النبي صلى الله عليه وسلم استبرأ صفية بحيضة"،

"आक़ा (ﷺ) ने सय्यिदह स़फ़िय्यह का एक ह़ैज़ के ज़रिए इस्तिबराअ कराया."

[अल्-मुअ़्जमुल् कबीर, मुस्नदुन् निसाअ, अज़्वाजु रसूलिल्लाह (ﷺ), ह़दीस नं. 183, जिल्द नं. 24, पेज नं. 69, पब्लिकेशन: मकतबा इब्ने तैमिय्यह (क़ाहिरा), दूसरा एडीशन]

[8] इमाम इब्ने अ़ब्दुर् रज़्ज़ाक़ (d. 211 हि.) रिवायत करते हैं:

"أن رسول الله صلى الله عليه وسلم، استبرأ صفية بحيضة"،

"आक़ा (ﷺ) ने सय्यिदह स़फ़िय्यह का एक ह़ैज़ के ज़रिए इस्तिबराअ कराया."

[अल्-मुस़न्नफ़, किताबुत् त़लाक़, बाब: इ़त्क़ुहा स़दाक़ुहा, ह़दीस नं. 13109, जिल्द नं. 7, पेज नं. 269, पब्लिकेशन: अल्-मकतबुल् इस्लामी (बेरूत), दूसरा एडीशन, 1403 हि./1983 ई.]

इसी बात को ह़दीस नं. 12895 से 12905 तक ज़िक्र किया.

[9] इमाम बैहक़ी (d. 458 हि.) ने भी इस रिवायत को बयान किया.
[अस्-सुननुल् कुबरा, ह़दीस नं. 15591, जिल्द नं. 7, पेज नं. 739, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1424 हि./2003 ई.]

[10] इमाम हैसमी (d. 807 हि.) ने भी अपनी 'ज़वाइदे मुस्नदे ह़ारिस' में इसको रिवायत किया.
[बुग़्यतुल् बाह़िस अन् ज़वाइदि मुस्नदिल् ह़ारिस, ह़दीस नं. 502, 1005, पब्लिकेशन: मरकज़ु ख़िदमतिस् सुन्नह वस् सीरह (मदीना मुनव्वरह), पहला एडीशन, 1413 हि./1992 ई.]

[11] इमाम इब्ने तुर्कमानी (d. 750 हि.) ने भी इस रिवायत को ज़िक्र किया.
[अल्-जौहरुन् नक़िय्य, जिल्द नं. 7, पेज नं. 450, पब्लिकेशन: दारुल् फ़िक्र (बेरूत)]

[12] इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी (d. 852 हि.) ने भी इस रिवायत को नक़्ल किया.
[फ़त्ह़ुल् बारी, किताबुल् बुयूअ़, जिल्द नं. 4, पेज नं. 424, तह़्ते ह़दीस नं. 2235, पब्लिकेशन: मकतबा सलफ़िय्यह (मिस्र), पहला एडीशन, 1380 हि.]

2.3.4 ख़त्म हुआ

चैप्टर नं. 3

चलते-चलते दो और एतराज़ों का जवाब भी दे देता हूँ, जो कुछ मुल्ह़िदीन उठाते हैं:

(1) जब आक़ा (ﷺ) और सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) अपने ख़ेमे में थे तो रातभर एक स़ह़ाबी ख़ेमे के बाहर पहरा देते रहे. ऐसा क्यूँ हुआ?

तो इसका सादा सा जवाब ये है कि पहरा देने का हुक्म उन्हें आक़ा (ﷺ) ने नहीं दिया था, बल्कि वो ख़ुद ही ऐसा कर रहे थे. जब सुबह आक़ा (ﷺ) ने देखा तो उनसे पूछा कि तुम यहाँ क्यूँ पहरा दे रहे हो? तो उन्होंने कहा कि मुझे इस औरत को लेकर आप का ख़ौफ़ था. क्यूंकि आपने उसके बाप और शौहर को क़त्ल किया है, और वो अभी जल्द ही कुफ़्र से ईमान की तरफ़ आई है. कहीं आपको कोई नुक़्सान न पहुंचा दे. इसलिए मैं यहां पहरा दे रहा हूं. तो आक़ा (ﷺ) ये सुनकर मुस्कुराने लगे और उन्हें दुआ़ से नवाज़ा. जैसा कि 'किताबुल् मग़ाज़ी', 'अत्-त़बक़ातुल् कुबरा', और बाक़ी तमाम किताबों में ये बात मौजूद है.

(2) किनानह इब्ने रबीअ़ को ख़जाने के चक्कर में टॉर्चर किया गया. ऐसा क्यूँ हुआ?

तो इसका जवाब हम अच्छे से दे देते हैं, कि किनानह इब्ने रबीअ़ की तमाम अगली पिछली आतंकी चालों की वजह से उसे ये सज़ा मिली, न कि सिर्फ़ ख़ज़ाना मालूम करने के लिए. ऐसे आतंकी की मक्कारियों को छुपाकर उसे मज़्लूम साबित करने की बेजा कोशिश करना, कहाँ का इन्साफ़ है? अस्ल मस्अला क्यूँ नहीं बताया जाता? आइए हम बताते हैं आपको, कि ह़क़ीक़त क्या थी;

• इमाम इब्ने सअ़्द (d. 230 हि.) इसकी तफ़्स़ील बयान करते हुए लिखते हैं:

"لما ظهر النبي صلى الله عليه وسلم على خيبر، صالحهم على أن يخرجوا بأنفسهم وأهليهم، ليس لهم بيضاء ولا صفراء، فأتي بكنانة والربيع، وكان كنانة زوج صفية والربيع أخوه وابن عمه، فقال لهما رسول الله صلى الله عليه وسلم: أين آنيتكما التي كنتما تعيرانها أهل مكة؟ قالا: هربنا فلم تزل تضعنا أرض وترفعنا أخرى، فذهبنا فأنفقنا كل شيء. فقال لهما: إنكما إن كتمتماني شيئا فاطلعت عليه استحللت به دماءكما وذراريكما؟ فقالا: نعم. فدعا رجلا من الأنصار فقال: اذهب إلى قراح كذا وكذا، ثم ائت النخل فانظر نخلة عن يمينك أو عن يسارك فانظر نخلة مرفوعة فأتني بما فيها. قال: فانطلق فجاءه بالآنية

والأموال فضرب أعناقهما وسبى أهليهما۔۔۔"،

"जब आक़ा (ﷺ) ने अहले ख़ैबर से सुलह़ की तो ये शर्त रखी कि वो अपने घर वालों के साथ यहां से निकल जाएंगे, और सोना-चांदी अपने साथ नहीं ले जाएंगे. तो सय्यिदह स़फ़िय्यह के शौहर किनानह, और उसके भाई या चचेरे भाई रबीअ़ को लाया गया. तो आक़ा (ﷺ) ने उन दोनों से कहा: 'तुम्हारे वो सोने-चांदी के वर्तन कहां हैं जिन्हें दिखा दिखाकर तुम मक्का वालों को आ़र दिलाते थे?'

दोनों ने जवाब दिया: 'हम अपनी ज़मीन से निकल गए. कहीं हमें तरक़्क़ी मिली, और कहीं नहीं मिली. तो हम ने सब ख़र्च कर दिया.'

फिर आक़ा (ﷺ) ने उन दोनों से फ़रमाया: 'अगर तुम दोनों ने मुझ से कोई भी चीज़ छुपाई और मुझे पता चल गया, तो इस ग़द्दारी की वजह से तुम्हारा ख़ून और क़ौम मेरे लिए ह़लाल होगी?'

दोनों ने (ये शर्त मंज़ूर करते हुए) जवाब दिया: 'हाँ, ठीक है.'

फिर आक़ा (ﷺ) ने एक अंस़ारी शख़्स को बुलाया और कहा: 'फ़ुलां खेत में जाओ, फिर खजूर के पेड़ों की तरफ़ जाना. फिर अपने दाएं या बाएं एक ऊंचा सा खजूर का पेड़ ढूंढना. उसमें जो कुछ भी छुपा हुआ हो, वो मेरे पास ले आओ.'

फिर वो अंस़ारी शख़्स गए और सोने-चांदी के वर्तन और माल लेकर लौटे. तभी आक़ा (ﷺ) के हुक्म पर किनानह, और उसके भाई रबीअ़ की गर्दन मार दी गयी, और उनकी क़ौम को ग़ुलाम बना लिया गया...."
[अत्-त़बक़ातुल् कुबरा, जिल्द नं. 2, पेज नं. 112, पब्लिकेशन: दारु स़ादिर (बेरूत), पहला एडीशन, 1968 ई.]

कुछ रिवायात में ये है कि ख़ुद एक यहूदी ने आकर किनानह इब्ने रबीअ़ के ख़िलाफ़ गवाही दी, और आक़ा (ﷺ) से आकर कहा कि: "मैंने इसे अक्सर फ़ुलां बंजर जगह आते जाते देखा है." फिर आक़ा (ﷺ) ने वहाँ कुछ आदमी भेजकर ख़ज़ाना निकलवाया. इसके बाद नक़्ज़े अ़ह्द (breach of treaty) और दूसरे सब जुर्मों के सबब किनानह की गर्दन उड़ा दी गयी.

• इसे इमाम इब्ने अ़ब्दुर् रज़्ज़ाक़ (d. 211 हि.) ने भी मुख़्तस़र अंदाज़ में बयान किया.
[अल्-मुस़न्नफ़, ह़दीस नं. 9657, जिल्द नं. 5, पेज नं. 293, पब्लिकेशन: तौज़ीउ़ल् मकतबिल् इस्लामिय्य (बेरूत), दूसरा एडीशन, 1403 हि./1983 ई.]

• इसी तरह इमाम बैहक़ी (d. 458 हि.) ने भी इसे डिटेल में बयान किया.
[दलाइलुन् नुबुव्वह, जिल्द नं. 4, पेज नं. 233, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 1405 हि./1985 ई.]

• इसी को इमाम स़ालिह़ी शामी (d. 942 हि.) ने ज़िक्र किया है.
[सुबुलुल् हुदा वर् रशाद फ़ी सीरति ख़ैरिल् इ़बाद, जिल्द नं. 5, पेज नं. 132, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 1414 हि./1993 ई.]

एक रिवायत में है कि इस ख़ज़ाने को हासिल करने के बाद, उससे बाक़ी ख़ज़ाने के बारे में पूछा गया. मगर फिर भी इसने शर्तों की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हुए नहीं बताया. फिर आक़ा (ﷺ) के हुक्म पर सय्यिदुना ज़ुबैर इब्ने अ़व्वाम (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) उससे पूछताछ करते रहे, और न बताने पर अपनी ज़न्द (आग जलाने वाली लकड़ी) उसके सीने में मारते, मगर उसने मुँह नहीं खोला यहां तक कि अधमरा हो गया. फिर उसे सय्यिदुना मुहम्मद इब्ने मस्लमह (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) के हवाले कर दिया गया, और उन्होंने अपने भाई सय्यिदुना महमूद इब्ने मस्लमह (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) के क़त्ल के बदले में, क़िस़ास़ के तौर पर इसकी गर्दन उड़ा दी. क्यूंकि उन्हें चक्की के पाट से कुचल कर शहीद करने वालों में ये भी शरीक था.

अब इन रिवायतों से क्लियर हो गया कि आक़ा (ﷺ) ने उसे मज़्कूरा शर्तों पर अमान दे दी थी. मगर इस यहूदी शैतान की फ़ितरत नहीं बदली, शर्तों को तोड़ता रहा, समझौते का ख़ून करता रहा. जैसा कि आज तक यहूदियों की यही आ़दत है. हुय्य इब्ने अख़्तब और किनानह इब्ने रबीअ़ का दिफ़ाअ़ करने वाले इनके जुर्म छुपा कर इस्लाम के ख़िलाफ़ प्रोपेगंडा करते हैं. मदीना शरीफ़ में सारे अधिकार हासिल करके अमान के साथ रहने के बावजूद भी, ये दोनों और इनके ख़ानदान वाले इतने बड़े आतंकवादी रहे, कि हिस्ट्री की किताबें इनके आतंक से भरी पड़ी हैं. जैसे कि:

• आक़ा (ﷺ) को, साथ देने के बहाने से बुलाकर, सरे मुबारक पर चक्की का पाट गिराकर धोखे से शहीद करने की कोशिश करने वाले यही लोग थे;

• चार हिजरी (626 ई.) में बनू नज़ीर की जंग का सबब भी यही लोग बने, और जिलावत़न होना पड़ा;

• फिर भी सुकून से नहीं बैठे, बल्कि क़ुरैश़ को मदीना शरीफ़ पर चढ़ाई करने के लिए उभारने वाली यही क़ौम थी;

• पांच हिजरी (627 ई.) में ख़ंदक़ की जंग भी इन्हीं लोगों की वजह से हुई;

• क़ुरैश को मुसलमानों को मारने के लिए हथियार सप्लाई करने वाले ये लोग थे;

• मुसलमानों पर तीर बरसाने वाले ये लोग थे;

• पांच हिजरी (627 ई.) में बनू क़ुरैज़ा पर होने वाली चढ़ाई और हलाकत का सबब भी यही लोग बने. इसी वक़्त हुय्य इब्ने अख़्तब मारा गया. जबकि किनानह का नंबर ख़ैबर की जंग में आया. जिसकी पहले की मदीना शरीफ़ में ग़द्दारी, ख़ैबर में भी नक़्ज़े अ़ह्द (breach of treaty), मुसलमानों का क़त्ल, फिर आख़िर में समझौते की शर्तों को न मानना, इतने सारे जुर्म इकट्ठे हो गए. फिर ऐसे घिनौने जुर्मों पर ऐसी सज़ा मिली, तो इसमें क्या परेशानी है किसी को!?

अब ऐसे आतंकवादियों को डिफेंड करना, किसी पागल का ही काम हो सकता है. कोई समझदार, और इंस़ाफ़-पसंद शख़्स ऐसी गलत़ी नहीं कर सकता.

चैप्टर नं. 3 ख़त्म हुआ

चैप्टर नं. 4

अ़क़्ल की रौशनी में भी ये वाक़िआ़ उस वक़्त के हिसाब से बिल्कुल सही था:

पहली बात ये कि इतिहास की बातें समझने के लिए सबसे पहली शर्त ये होती है कि उस वक़्त की बात को उसी वक़्त के माहौल, परिस्थिति और रस्म-रिवाज के हिसाब से समझा जाए. वर्ना आज के दौर में पढ़ने वाले को कभी भी इतिहास की सही समझ हासिल नहीं हो सकती. इसी तरह जब ये वाक़िआ़ हुआ, तब सय्यिदुना मुह़म्मद इब्ने अ़ब्दुल्लाह (ﷺ) के एक से एक कट्टर जानी दुश्मन मौजूद थे, जिनके मुक़ाबले में आज के दुश्मनों की दुश्मनी आधी भी नहीं है. तो ऐसे ख़तरनाक दुश्मनों में से किसी एक ने भी इस निकाह़ पर एतराज़ नहीं किया. अगर ये ग़लत होता तो कोई न कोई तो इसपर सवाल उठाता. मगर ऐसा नहीं हुआ. **पूरी दुनिया की ऐंटी इस्लामिक लॉबी को मेरा चैलेंज है कि पूरे 1400 साला क्लासिकल इस्लामी लिटरेचर में कोई एक दलील लाकर मुझे दिखा दे जिसमें ये ज़िक्र हो कि उस दौर के फ़ुलां शख़्स ने इस निकाह़ पर एतराज़ उठाया?** क़ियामत तक ऐसा कोई मुअ़्तबर ह़वाला नहीं ला सकेंगे, इन्-शा अल्लाह (ﷻ)!

दूसरी बात ये कि ख़ुद सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) के क़बीले के बहुत से लोग मौजूद थे, किसी ने भी इस निकाह़ पर एतराज़ नहीं उठाया. अगर ग़लत होता, तो सबसे पहले ख़ानदान या क़बीले वाले इसके ख़िलाफ़ बोलते. मगर ऐसा नहीं हुआ;

तीसरी बात ये कि निकाह़ के बाद भी कोई एक रिवायत भी ऐसी नहीं मिलती जिसमें सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) ने इस तरह कहा हो कि: "मुझ से ज़बर्दस्ती निकाह़ किया गया", या फिर: "मैं इस निकाह़ से कभी ख़ुश नहीं रही." बल्कि इसके ख़िलाफ़ मर्ज़ी और ख़ुशी से निकाह़ करने की बहुत सी रिवायात ऊपर गुज़र गयीं;

चौथी बात ये कि ख़ुद आक़ा (ﷺ) के बारे में कोई रिवायत ऐसी मौजूद नहीं जिसमें साफ़ त़ौर पर, या इशारे में ऐसा ज़िक्र आया हो जिससे ये लगता हो कि आक़ा (ﷺ) ने सय्यिदह स़फ़िय्यह से ज़बर्दस्ती की, या उन्हें मजबूर किया. जबकि इसके ख़िलाफ़ सय्यिदह स़फ़िय्यह के अल्फ़ाज़ में आक़ा (ﷺ) का सबसे बेह्तरीन अख़्लाक़ ऊपर ज़िक्र हो चुका;

पांचवी बात ये कि हर मुल्क और धर्म का ये क़ानून है कि दौराने जंग जब कोई भी दुश्मन की हैसियत से सामने लड़ने आएगा, या दुश्मन की मदद करेगा, या हमारे ख़िलाफ़ खड़ा होगा, तो वो वही अंजाम चखेगा जो दो लड़ने वालों में से एक का होता है. सय्यिदह स़फ़िय्यह के बाप 'हुय्य इब्ने अख़्तब', और शौहर 'किनानह इब्ने रबीअ़' का भी वही हुआ जो हर मुल्क और धर्म में जंग का क़ानून है;

छठी बात ये कि जब आक़ा (ﷺ) ने अपने कट्टर दुश्मन 'किनानह इब्ने रबीअ़' को अमान दे दी थी, और वो सारी शर्तों पर राज़ी भी हो गया था, तब मुआ़हदा की शर्तों के ख़िलाफ़ जाने वाला कौन था: किनानह, या सय्यिदुना मुह़म्मद (ﷺ)!? ज़ाहिर है कि किनानह ने शर्तों को मानने के बाद भी उसके ख़िलाफ़ काम किया. फिर तो हर मुल्क और धर्म में राजद्रोह की सज़ा वही है जो उसे दी गयी;

सातवीं बात ये कि ऊपर रिवायत में गुज़रा कि जब सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) ने किनानह को अपना ख़्वाब बताया था, तो उसने सय्यिदह के चेहरे पर इतनी तेज चांटा मारा कि उसका असर आंख तक में झलक आया. बीवी पर हाथ उठाने वाले ऐसे मक्कार को डिफेंड करने वाले किस मुँह से ख़ुद को औरतों का ह़ामी कहते हैं?

लेकिन ये सब कुछ समझने के लिए अ़क़्ले सलीम होनी ज़रूरी है, जो हर किसी के पास नहीं होती.

चैप्टर नं. 4 ख़त्म हुआ

ख़ातिमा (epilogue)

ऊपर सीरत और हिस्ट्री की बड़ी बड़ी मुअ़्तबर किताबों के हवाले गुज़र चुके. जिनमें सारी ह़क़ीक़त बयान कर दी गयी है. हम पाँचों एतराज़ों का जवाब, और ख़ुलासा कुछ लाइन में पेश कर देते हैं:

1. सय्यिदह स़फ़िय्यह को ज़बर्दस्ती इग़्वा नहीं किया गया था, बल्कि जंगी क़ैदियों में वो भी शामिल थीं. जैसा कि सारी किताबों में मौजूद है;

2. पहले शौहर की इ़द्दत गुज़ारे बिना उनसे मुबाशरत या निकाह़ नहीं हुआ था, बल्कि इस्लामी क़ानून के मुताबिक़ उन्हें सय्यिदह उम्मे सुलैम के ख़ेमे में, इ़द्दत गुज़ारने के लिए रखा गया, जो कि एक हैज़ के ज़रिए इस्तिबराअ करना है. जैसा कि 'उ़यूनुल् असर' वग़ैरह के हवाले से गुज़रा;

3. उनकी मर्ज़ी के बिना निकाह़ नहीं किया गया, बल्कि उन्हें इख़्तियार दिया गया. जिसमें उन्होंने आक़ा (ﷺ) के साथ ज़िंदगी गुज़ारना पसन्द किया. इसीलिए उनकी मर्ज़ी के बिना शबे अ़रूसी अदा नहीं की गयी. बल्कि जब उन्होंने चाहा तब ही अदा की गयी. जैसा कि 'तारीख़ुल् ख़मीस' वग़ैरह के हवाले से गुज़रा;

4. सय्यिदह स़फ़िय्यह यक़ीनन इस निकाह़ से राज़ी थीं. इसीलिए इख़्तियार मिलने के बावजूद भी अपनी मर्ज़ी से सब कुछ किया, और ख़ुद ये बात कह रही हैं कि जब आक़ा (ﷺ) ने मुझे बार बार समझाया, तो वो मेरे लिए सबसे ज़्यादा मह़बूब हो गए;

5. क़ुरआन 2:234 का क़ानून आज़ाद शादीशुदा औरतों के लिए है, शादीशुदा बांदी के लिए नहीं. शादीशुदा बांदी के लिए सिर्फ़ एक ह़ैज़ के ज़रिए इस्तिबराअ का हुक्म है. जैसा कि ढेर सारी किताबों के हवाले से ज़िक्र किया गया;

6. सय्यिदह स़फ़िय्यह का निकाह़ आक़ा (ﷺ) से होगा, ये ख़ुद उनके बाप, या शौहर, या माँ ने ख़्वाब की तअ़्बीर करते वक़्त जान लिया था. जिसपर उन्होंने सय्यिदह स़फ़िय्यह को इतनी तेज़ चांटा मारकर ज़ुल्म किया, जिसका असर इतनी बाद तक उनके चेहरे या आंख में बाक़ी रहा;

7. सय्यिदह स़फ़िय्यह ने अपने ख़ानदान वालों की इस्लाम-दुश्मनी और आक़ा (ﷺ) की सच्चाई का ख़ुद अपने आप इअ़्तिराफ़ किया;

8. किनानह इब्ने रबीअ़ को, आक़ा (ﷺ) ने सुल्ह़ के समझौते के ज़रिए माफ़ कर दिया था, मगर उसने समझौते के साथ ग़द्दारी की. तो नक़्ज़े अ़ह्द (Breach of treaty) की सज़ा में, और सय्यिदुना मह़मूद इब्ने मस्लमह (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) के क़िस़ास़ के तौर पर, उसका सर क़लम कर दिया गया;

9. बार बार इस बात की रट लगाना कि इ़द्दत नहीं गुज़ारने दी गयी, ऐसे लोगों को चाहिए कि थोड़ा पढ़-लिख लिया करें:

• 'स़ह़ीह़ बुख़ारी' में तीन जगह पर, ह़दीस नं. 2235, 2893, और 4211 में;
'अबू दाऊद', ह़दीस नं. 2995, और 2997 में;
'अस्-सुननुल् कुबरा', ह़दीस नं. 12755, और 12756 में;
साफ़ तौर पर 'ह़ल्लत (حلّتْ)' के अल्फ़ाज़ मौजूद हैं, जिसका मअ़्ना:

• 'इमाम कूरानी (d. 893 हि.)' ने इस तरह बयान किया:

"أي كمل استبراؤها"،

"यानी उनका इस्तिबराअ पूरा हो गया."
[अल्-कौसरुल् जारी इला रियाद़ि अह़ादीसिल् बुख़ारी, ह़दीस नं. 4211, जिल्द नं. 7, पेज नं. 266, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत), पहला एडीशन, 1429 हि./2008 ई.]

• यही मतलब 'इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी (d. 852 हि.)' ने बयान किया, लिखते हैं:

"فإن المراد بقوله: 'حلت'، أي: طهرت من حيضها"،

"उसके 'ह़ल्लत' कहने का मतलब ये है कि वो ह़ैज़ से पाक हो गयीं."
[फ़त्ह़ुल् बारी, किताबुल् बुयूअ़, तह़्ते ह़दीस नं. 2235, जिल्द नं. 4, पेज नं. 424, पब्लिकेशन: मकतबा सलफ़िय्यह (मिस्र), पहला एडीशन, 1380 हि.]

• इसी बात को 'स़ह़ीह़ मुस्लिम', ह़दीस नं. 1365 में, 'अत्-त़बक़ातुल् कुबरा', जिल्द नं. 8, पेज नं. 97, तर्जमा नं. 4135 में, और 'मुस़न्नफ़ इब्ने अबी शैबह', ह़दीस नं. 36876 में 'तअ़्तद्-दु (تعتدّ)' के अल्फ़ाज़ में ज़िक्र किया गया;

• इसका मअ़्ना 'इमाम नववी (d. 676 हि.)' ने इस तरह बयान किया:

"---أما قوله تعتد، فمعناه تستبريء، فإنها كانت مسبية يجب استبراؤها وجعلها في مدة الاستبراء في بيت أم سليم فلما انقضى الاستبراء جهزتها أم سليم---"،

"...और उसका ये कहना 'तअ़्तद्-दु', तो उसका मतलब ये है कि इस्तिबराअ करे. क्यूंकि वो बांदी थीं इसलिए उनका इस्तिबराअ ज़रूरी था. आक़ा (ﷺ) ने इस्तिबराअ के वक़्त तक उन्हें उम्मे सुलैम के ख़ेमे में रखा. जब इस्तिबराअ गुज़र गया, तब उम्मे सुलैम ने उन्हें तैयार किया...."
[अल्-मिन्हाज, जिल्द नं. 9, पेज नं. 222, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत), दूसरा एडीशन, 1392 हि.]

• इमाम इब्ने अ़ब्दुल् बर्र (d. 463 हि.) ने भी बयान किया कि उनकी इ़द्दत हुई.
[अद्-दुरर फ़ी इख़्तिस़ारिल् मग़ाज़ी वस् सियर, पेज नं. 197, पब्लिकेशन: दारुल् मआ़रिफ़ (क़ाहिरा), दूसरा एडीशन, 1403 हि.]

• इमाम क़स्तलानी (d. 923 हि.) ने भी ये मअ़्ना बयान फ़रमाया.
[अल्-मवाहिबुल् लदुन्-निय्यह, जिल्द नं. 1, पेज नं. 342, पब्लिकेशन: मकतबा तौफ़ीक़िय्यह (क़ाहिरा)]

इतनी सारी रिवायात क्लियर कह रही हैं कि एक ह़ैज़ के ज़रिए इस्तिबराअ करके इ़द्दत हुई, फिर कैसे ऐसा सफ़ेद झूठ बोलकर प्रोपेगंडा फैलाते हैं ये लोग!? अफ़सोस है ऐसी अंधी इस्लाम-दुश्मनी पर!

10. सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) को लौटाने का रीजन भी पहले गुज़र चुका. इसी को बयान करते हुए 'इमाम क़स्तलानी (d. 923 हि.)' लिखते हैं:

"وارتجعها منه، لأنه إنما كان أذن له في جارية من حشو السبي، لا من أفضلهن. فلما رآه أخذ أنفسهن نسبا وشرفا وجمالا، استرجعها لئلا يتميز دحية بها على سائر الجيش، مع أن فيهم من هو أفضل منه. وأيضا لما فيه من انتهاكها مع علو مرتبتها، وربما ترتب على ذلك شقاق أو غيره مما لا يخفى، فكان اصطفاؤه لها قاطعا لهذه المفاسد---"،

"आक़ा (ﷺ) का, सय्यिदुना दिह़्या कल्बी से सय्यिदह स़फ़िय्यह को वापस लेना इस वजह से था क्यूंकि आक़ा (ﷺ) ने उन्हें आ़म बांदियों में से बांदी चुनने का हुक्म दिया था, न कि सबसे अच्छी बांदियों में से. जब आक़ा (ﷺ) ने देखा कि इन्होंने ने नसब, इ़ज़्ज़त और हुस्न के हिसाब से सबसे अच्छी बांदी को चुना है तो उसे वापस ले लिया, ताकि सय्यिदुना दिह़्या कल्बी लश्कर के दूसरे सिपाहियों जैसे ही रहें. क्यूंकि

लश्कर कुछ सिपाही उनसे ऊंचे रुतबे के भी थे. इसके अ़लावा, सय्यिदह स़फ़िय्यह के ऊंचे मर्तबे की भी ये रिआ़यत नहीं थी. तो ज़ाहिर है कि ऐसी सूरत में झगड़ा पैदा होता. तो आक़ा (ﷺ) का सय्यिदह स़फ़िय्यह को अपने लिए ख़ास़ कर लेना, इन सब फ़सादों को ख़त्म करने वाला था...."
[इर्शादुस् सारी, जिल्द नं. 1, पेज नं. 399, तह़्ते ह़दीस नं. 371, पब्लिकेशन: मत़्बअ़ा अमीरिय्यह (बूलाक़), छठा एडीशन, 1304 हि.]

यही 'इमाम क़स्त़लानी (d. 923 हि.)' अपनी दूसरी अ़ज़ीम किताब: 'अल्-मवाहिबुल् लदुन्-निय्यह' में भी ऐसी ही ह़िक्मतें ज़िक्र करते हैं.
[अल्-मवाहिबुल् लदुन्-निय्यह, जिल्द नं. 1, पेज नं. 343, पब्लिकेशन: मकतबा तौफ़ीक़िय्यह (क़ाहिरा)]

कुछ रिवायात में है कि इनके बदले में, सय्यिदुना दिह़्या कल्बी की दिलजोई के लिए उनको सात ग़ुलाम दे दिए, किसी रिवायत में है कि सय्यिदह स़फ़िय्यह की दो चचेरी बहनें दे दीं, और किसी रिवायत में है कि उनकी नन्द दे दी. तीनों तरह की रिवायात मौजूद हैं. बहरहाल मक़्स़द तीनों का एक ही है. तीनों में कोई टकराव नहीं, क्यूंकि ज़्यादा देने में कोई रोक नहीं, मुम्किन है एक एक कर के तीनों बातें हुई हों. साथ ही जिन रिवायतों में 'खऱीद लिया' के अल्फ़ाज़ आए हैं, वो मजाज़ी (metaphoric) तौर पर आए हैं. वर्ना आक़ा (ﷺ) के लिए सय्यिदह स़फ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) ‘स़फ़िय्युल् मग़्नम (special portion for the Prophet)’ में से थीं. यानी वो हिस़्सा, जो 'ख़ुम्स (1/5th, or 20% of war booty)' से पहले ही, आक़ा (ﷺ) के लिए ही ख़ास़ रहता था.. इसकी स़राह़त बहुत सी अह़ादीस में मौजूद है. जैसे कि 'अबू दाऊद', ह़दीस नं. 2991, 2992, 2993, 2999 वग़ैरह;
इस पूरी तफ़्स़ीली बह़स को पढ़ने के बाद एक नेकनियत शख़्स़ के पास, सय्यिदुल् अम्बिया मुह़म्मद इब्ने अ़ब्दुल्लाह (ﷺ) की अ़ज़्मत और सियासी महारत को क़ुबूल करने के सिवा कोई चारा नहीं है. बाक़ी एतराज़ करने वालों को तो, इन्-शा अल्लाह (ﷻ) कहीं भी पर मारने की भी जगह नहीं मिलेगी, सिवा इसके कि वही पुराने एतराज़ दुहराते रहें, और चबाई हुई हड्डियां चबाते रहें;

अल्लाह (ﷻ) ह़क़ क़ुबूल करने, और बात़िल को छोड़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए;
आमीन बिजाहि ह़बीबी (ﷺ)!

ولله الحجة السامية، ولله الحمد والمنة، و للمصطفى (ﷺ) صلاة وتسليمة؛
الصواب من الله و الخطأ من نفسي، و ما علينا إلا البلاغ!

13 नवंबर, 2025 ई.
22 जुमादल् आख़िरह, 1447 हि.

"دَعْ مَا ادَّعَتْهُ النَّصَارَى فِي نَبِيِّهِمِ،
وَ احْكُمْ بِمَا شِئْتَ مَدْحًا فِيهِ وَاحْتَكِمِ؛

وَانْسُبْ إِلَى ذَاتِهِ مَا شِئْتَ مِنْ شَرَفٍ،
وَ انْسُبْ إِلَى قَدْرِهِ مَا شِئْتَ مِنْ عِظَمِ."

ह़वाला जात (Bibliography)

इस्लामी लिटरेचर:

अल्-क़ुरआनुल् करीम (अल्लाह का कलाम)
स़ह़ीह़ बुख़ारी (इमाम बुख़ारी), पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत);
स़ह़ीह़ मुस्लिम (इमाम मुस्लिम), पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत);
अस्-सुनन (इमाम अबू दाऊद), पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत);
अस्-सुननुल् कुबरा (इमाम बैहक़ी), पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत);
अल्-मुस्नद (इमाम अह़मद), पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत);
अल्-मुस्नद (इमाम अबू यअ़्ला), पब्लिकेशन: दारुल् मअ़्मून (दमिश्क़);
अल्-मुस़न्नफ़ (इमाम इब्ने अबी शैबह), पब्लिकेशन: दारुत् ताज (लेबनान);
अल्-मुस़न्नफ़ (इमाम अ़ब्दुर् रज़्ज़ाक़), पब्लिकेशन: अल्-मकतबुल् इस्लामी (बेरूत);
अत्-त़बक़ातुल् कुबरा (इमाम इब्ने सअ़्द), पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत);
शरहु मुश्किलिल् आसार (इमाम त़ह़ावी), पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत);
अल्-मुअ़्जमुल् कबीर (इमाम त़बरानी), पब्लिकेशन: मकतबा इब्ने तैमिय्यह (क़ाहिरा);
अल्-मुअ़्जमुल् औसत़ (इमाम त़बरानी), पब्लिकेशन: दारुल् ह़रमैन (क़ाहिरा);
फ़त्ह़ुल् बारी (इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी), पब्लिकेशन: मकतबा सलफ़िय्यह (मिस्र);
इर्शादुस् सारी (इमाम क़स्त़लानी), पब्लिकेशन: मत़बअ़ा अमीरिय्यह (बूलाक़);
अल्-कौसरुल् जारी (इमाम कूरानी), पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत);
अल्-मिन्हाज (इमाम नववी), पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत);
अल्-मुस्नद (इमाम ह़ारिस), पब्लिकेशन: मरकज़ु ख़िदमतिस् सुन्नह (मदीना शरीफ़);
दलाइलुन् नुबुव्वह (इमाम अस़्बहानी), पब्लिकेशन: दारुन् नफ़ाइस (बेरूत);
दलाइलुन् नुबुव्वह (इमाम बैहक़ी), पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत);
अस्-सीरतुन् नबविय्यह (इमाम इब्ने इस्ह़ाक़), पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत);
अस्-सीरतुन् नबविय्यह (इमाम इब्ने हिशाम), पब्लिकेशन: मत़बअ़ा मुस़्त़फ़ा बाबी ह़लबी (मिस्र);
किताबुल् मग़ाज़ी (इमाम वाक़िदी), पब्लिकेशन: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी (लंदन);
अर्-रौदुल् उनुफ़ (इमाम सुहैली), पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत);
तारीख़ुर्-रुसुल वल् मुलूक (इमाम त़बरी), पब्लिकेशन: दारुल् मअ़ारिफ़ (मिस्र);
अल्-कामिल फ़ित् तारीख़ (इमाम इब्ने असीर), पब्लिकेशन: दारुल् किताबिल् अ़रबिय्यि (बेरूत);
उ़यूनुल् असर (इमाम इब्ने सय्यिदिन् नास), पब्लिकेशन: इक़्लीदुल् मअ़्रिफ़ह (रियाद);
अल्-बिदायह वन् निहायह (इमाम इब्ने कसीर), पब्लिकेशन: मत़बअ़तुस् सआ़दह (क़ाहिरा);
इम्ताउ़ल् अस्माअ़ (इमाम मक़रीज़ी), पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत);

अल्-इस़ाबह (इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी), पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत);
सुबुलुल् हुदा वर् रशाद (इमाम स़ालिह़ी शामी), पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत);
तारीख़ुल् ख़मीस (इमाम दियार बक्री), पब्लिकेशन: मत़्बअ़ा वह्बिय्यह (मिस्र);
इंसानुल् उ़यून (इमाम ह़लबी), पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत);
अद्-दुरर फ़ी इख़्तिस़ारिल् मग़ाज़ी वस् सियर (इमाम इब्ने अ़ब्दुल् बर्र), पब्लिकेशन: दारुल् मआ़रिफ़ (क़ाहिरा);
अल्-मवाहिबुल् लदुन्-निय्यह (इमाम क़स्त़लानी), पब्लिकेशन: मकतबा तौफ़ीक़िय्यह (क़ाहिरा);
अह़्कामुल् क़ुरआन (इमाम जस़्स़ास़), पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत);
बदाइ़उस़् स़नाइअ़ (इमाम कासानी), पब्लिकेशन: मत़्बअ़ा जमालिय्यह (मिस्र);
फ़तावा आ़लमगीरी, पब्लिकेशन: मत़्बअ़ा अमीरिय्यह (बूलाक़);
अल्-जौहरुन् नक़िय्य (इमाम इब्ने तुर्कमानी), पब्लिकेशन: दारुल् फ़िक्र (बेरूत);
अस्-सीरतुन् नबविय्यह (इमाम ज़ैनी दह़लान), पब्लिकेशन: दारुल् क़लमिल् अ़रबिय्यि (ह़लब);
ज़ियाउन् नबी (पीर करम शाह अज़्हरी), पब्लिकेशन: ज़ियाउल् क़ुरआन पब्लिकेशन्स (लाहौर);

ग़ैर-इस्लामी लिटरेचर:

वाल्मीकि रामायण, पब्लिकेशन: गीता प्रेस गोरखपुर;
महाभारत, पब्लिकेशन: गीता प्रेस गोरखपुर;
श्रीमद्भागवत महापुराण, पब्लिकेशन: गीता प्रेस गोरखपुर;
गर्ग संहिता (गर्गाचार्य), पब्लिकेशन: गीता प्रेस गोरखपुर;
प्रियंवदा (रामतेज शास्त्री), पब्लिकेशन: चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान (दिल्ली);
शिव पुराण, पब्लिकेशन: गीता प्रेस गोरखपुर;
स्कन्ध पुराण, पब्लिकेशन: गीता प्रेस गोरखपुर;
ब्रह्मवैवर्तपुराण, पब्लिकेशन: गीता प्रेस गोरखपुर;
देवीभागवत पुराण, पब्लिकेशन: गीता प्रेस गोरखपुर;
मत्स्य पुराण, पब्लिकेशन: गीता प्रेस गोरखपुर;
ब्रह्मांड पुराण, पब्लिकेशन: गीता प्रेस गोरखपुर;
वायु पुराण, पब्लिकेशन: गीता प्रेस गोरखपुर;
पद्म पुराण, पब्लिकेशन: गीता प्रेस गोरखपुर;
Bible (King James Version), Published by Bible Society Bangalore;
Pregnant Passion: Gender, Sex and Violence in the Bible (Cheryl Duggan), Published by Brill Publishing (Leiden);
Stalin and the Politics of Kinship (Alexopoulos);
Motherhood and Survival in the Stalinist Gulag (Mackinnon);
Women in the Gulag in the 1930s' (E Mason);
The Voices of a Few: Women in the Gulag (Maria-Xavier);
Victims of the Soviet Penal System in the Pre-war Years (JA Getty);

Journey into the Whirlwind (Ginzburg);
Memoirs of a Gulag Actress (Petkevich);
Sex, Pregnancy, and Power in the Late Stalinist Gulag (by Wilson T. Bell);
Three Sexual Revolutions (David Karlin).